सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 30, नई दिल्ली । गुरुवार, 10 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 दिल्ली में भीषण गर्मी को देखते हुए सभी अस्पतालों को जरूर निर्देश दिए गए
06 विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान
08 ट्रेन दुर्घटना में मां की मौत, 4 वर्षीय बच्चा बच गया

ट्रांसपोर्ट रिप्रेजेंटेटिव वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने की मुख्यमंत्री से मुलाकात

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन आयुक्त के आदेश से व्यवसायिक वाहनों की फिटनेस प्रमाण पत्र प्राप्त करने में हो रही परेशानियों से अवगत करवाने और उसके स्थाई हल की मांग को लेकर आज ट्रांसपोर्ट रिप्रेजेंटेटिव वेलफेयर एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री कार्यालय में की मुलाकात। इस बैठक में एसोसिएशन के अध्यक्ष राजेश कक्कड़, महासचिव के के छाबड़ा, सचिव दविंदर यादव, सदस्य तुषार अरोड़ा, तिपहिया एसोसिएशन के अध्यक्ष सोबरन सिंह राजपूत और परिवहन विशेष के मुख्य संपादक संजय बाटला उपस्थित रहे। एसोसिएशन की तरफ से मुख्यमंत्री को बताया गया की कैसे परिवहन आयुक्त सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय के एक नोटिफिकेशन का उल्लेख कर दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों का शोषण कर उन्हें मानसिक और आर्थिक चिंताओं में डाल रहे है। संजय बाटला ने मुख्यमंत्री को बताया की सीएमवीआर के तहत व्यवसायिक वाहनों को सड़क पर चलने के लिए वाहन का वैध वाहन जांच प्रमाण पत्र होना आवश्यक हैं और उसके वैद्य ना होने का अर्थ है की वाहन का पंजीकरण अस्थायी रद्द हो जाना। उसके बाद उन्होंने बताया की समय सीमा समाप्त होने के बाद पुनः वाहन जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए वाहन मालिक को वाहन जांच प्रमाण पत्र फीस के साथ वाहन पंजीकरण फीस जमा करवानी और 50 रुपए प्रतिदिन विलम्ब शुल्क जमा करवाने के बाद ही वाहन जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए वाहन जांच की अपॉइंटमेंट मिलती हैं। इसके बाद उन्होंने बताया की परिवहन विभाग की अपनी गलती की वह समय सीमा के अंतर्गत दिल्ली में व्यवसायिक वाहनों की जांच के लिए अनिवार्य ऑटोमैटिक जांच शाखा उपलब्ध नहीं करवा सकी के लिए वाहन मालिकों को गलत आर्थिक और मानसिक तनाव दे रहे हैं। उन्होंने बताया की दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों को एटीएस से अपने वाहनों की जांच से कभी भी कोई आपत्ति नही रही है पर वाहन को जांच समय पर प्राप्त करवाना विभाग की जिम्मेदारी है और जब तक वह अपनी जिम्मेदारी नहीं पूरी कर सकता तब तक परिवहन विभाग को कोई हक नहीं है की वह अपनी गलती के लिए वाहन मालिकों को मानसिक और आर्थिक तनाव दे और वह भी वाहनों को खड़ा करवाकर। अन्त मे हाथ जोड़कर इस समस्या से वाहन मालिकों को मुक्ति दिलवाने की प्रार्थना की। मुख्यमंत्री ने भरोसा दिया की जल्द ही इस परेशानी से दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों को मुक्ति मिल जाएगी और अगर जरूरत होगी तो परिवहन विभाग के आला अधिकारियों के साथ एसोसिएशन की मुख्यमंत्री महोदया की चेयरमैन शिप में बैठक कर हल दिया जाएगा। बैठक के उपरान्त सभी सदस्यों ने मुख्यमंत्री को धन्यवाद दिया।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए **प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है** और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा।
इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।
आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

लखनऊ से अयोध्या, वाराणसी सहित पांच रूटों पर चलेंगी एसी इलेक्ट्रिक बसें, परिवहन निगम को मिली 50 बसें

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। परिवहन निगम व मेसर्स आरजी मोबिलिटी के बीच वातानुकूलित बुधवार को इलेक्ट्रिक बसों के संचालन को लेकर एमओयू किया गया। इसके अनुसार इलेक्ट्रिक बसों का संचालन रेवेन्यू शेयरिंग के आधार पर किया जायेगा। परिवहन निगम मेसर्स आरजी मोबिलिटी से 2.5 से 2.7 प्रति किलोमीटर की दर से प्रशासनिक चार्ज लेगा।

परिवहन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने बताया कि 50 वातानुकूलित इलेक्ट्रिक बसों का संचालन किया जायेगा। लखनऊ-अयोध्या मार्ग, कानपुर-प्रयागराज मार्ग, अयोध्या-वाराणसी मार्ग, कानपुर-रायबरेली मार्ग व कानपुर-लखनऊ मार्ग पर क्रमशः 05 बस, 10 बस, 05 बस, 15 बस, 15 बसें चलाई जाएगी। उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रिक बसों के चलने से यात्रियों को आरामदायक सफर का अनुभव मिलेगा।

उन्होंने कहा कि यह पर्यावरण अनुकूल होंगी। यात्रियों को सुरक्षित व सुविधाजनक यात्रा मुहैया होगी। प्रबंध निदेशक परिवहन निगम मासूम अली सरवर की उपस्थिति में परिवहन निगम की तरफ से मुख्य प्रधान प्रबंधक (टेक्निकल) एवं मेसर्स आरजी मोबिलिटी की ओर से सर्गेई अलेक्जेंडरोविच ने एमओयू पर हस्ताक्षर किया। इस अवसर पर जीएम अनिल कुमार, जीएम अमर नाथ सहाय, सलाहकार संचालन आरएन वर्मा मौजूद रहे।

मोहनलालगंज में 14 तक त्रिवेणी सहित दस ट्रेनों का होगा ठहराव

यात्रियों की मांग पर मोहनलालगंज रेलवे स्टेशन पर 14 अप्रैल तक त्रिवेणी एक्सप्रेस सहित दस ट्रेनों को अस्थायी ठहराव दिया गया है। ये ट्रेनें मोहनलालगंज स्टेशन पर एक मिनट के लिए रुकेंगी। उत्तर रेलवे लखनऊ मंडल के सीनियर डीसीएम कुलदीप तिवारी ने बताया कि गाड़ी संख्या 13005 हावड़ा अमृतसर पंजाब मेल दोपहर 2:16 बजे, 13006 अमृतसर हावड़ा पंजाब मेल सुबह 11:03 पहुंचेगी। इसके अलावा 15073 त्रिवेणी एक्सप्रेस सुबह 6:47 बजे, 15074 त्रिवेणी एक्सप्रेस शाम 4:40 बजे, 15075 त्रिवेणी एक्सप्रेस सुबह 6:47 बजे, 15076 त्रिवेणी एक्सप्रेस शाम 4:40 बजे, 14307 प्रयागराज संगम-बरेली एक्सप्रेस सुबह 5:34 बजे, 14308 बरेली-प्रयागराज संगम रात 11:30 बजे, 15119 बनारस- देहरादून जनता एक्सप्रेस अपराह्न तीन बजे व 15120 देहरादून-बनारस जनता एक्सप्रेस सुबह 8:30 बजे पहुंचेगी तथा एक मिनट रुकने के बाद रवाना हो जाएगी। समय सारणी की अधिक जानकारी हेल्पलाइन नंबर 139 व वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in मिलेगी।

"दिल्ली में पहले ही महंगाई आसमान छू रही है और ओला उबर जैसी प्राईवेट कम्पनियों ने ऑटो चालकों को बेरोजगारी के कगार पर खड़ा कर दिया है"

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने दिल्ली सरकार की ई-वाहन नीति 2.0 को लाखों ऑटो चालको की रोजी रोटी छीनने की भाजपा की एक और गरीब विरोधी नीति का विरोध करते हुए कहा कि यह सरकार रोजगार देना तो दूर उल्टा लोगां का रोजगार छीनने की नई-नई नीतियां लागू कर रही है। उन्होंने कहा कि ई-वाहन नीति के तहत 15 अगस्त, 2025 से किसी भी सीएनजी ऑटो रिक्शा के पंजीकरण की अनुमति नही दी जाएगी और न ही सीएनजी ऑटो परमिट का नवीनीकरण होगा।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि पहले सरकार सीएनजी वाहनों को प्रोत्साहन देती है और फिर उन्हीं को खत्म करने का निर्णय ले रही है। उन्होंने कहा कि सीएनजी ऑटो की जगह ई-ऑटो की नीति लागू करने से पहले भाजपा की रेखा गुप्ता सरकार को डीटीसी और अन्य सरकारी विभागों को पूरी तरह से सीएनजी मुक्त बनाकर ई-वाहन नीति लागू करे, उसके बाद सीएनजी ऑटों को ई-ऑटों में बदलने के लिए चरणबद्ध तरीके से काम करें ऑटों वालां पर आर्थिक बौझ न पड़ सके। क्योंकि दिल्ली में पहले ही महंगाई आसमान छू रही है और ओला उबर जैसी प्राईवेट कम्पनियों ने ऑटो चालको को बेरोजगारी के कगार खड़ा कर दिया है। भाजपा सरकार की सीएनजी ऑटों को ई-ऑटों में बदलने की नीति से लगभग 6 लाख लोग प्रभावित होंगे।

उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की पिछली सरकार ने ऑटो चालको के हितों अनदेखी की जबकि ऑटो चालकों ने आम आदमी पार्टी को सत्ता में लाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसी प्रकार दिल्ली की भाजपा सरकार भी ऑटो चालको की लंबित पड़ी मांगों पर ध्यान न देकर एक ऐसी नीति लाना चाह रही है जिसके कारण ऑटो चालकों को दो वक्त की रोटी कमाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि भाजपा सरकार ऑटो वालो पर ई-वाहन नीति लागू करके प्रदूषण को कम करने का दावा करके अपनी पीठ थपथपा रही है।

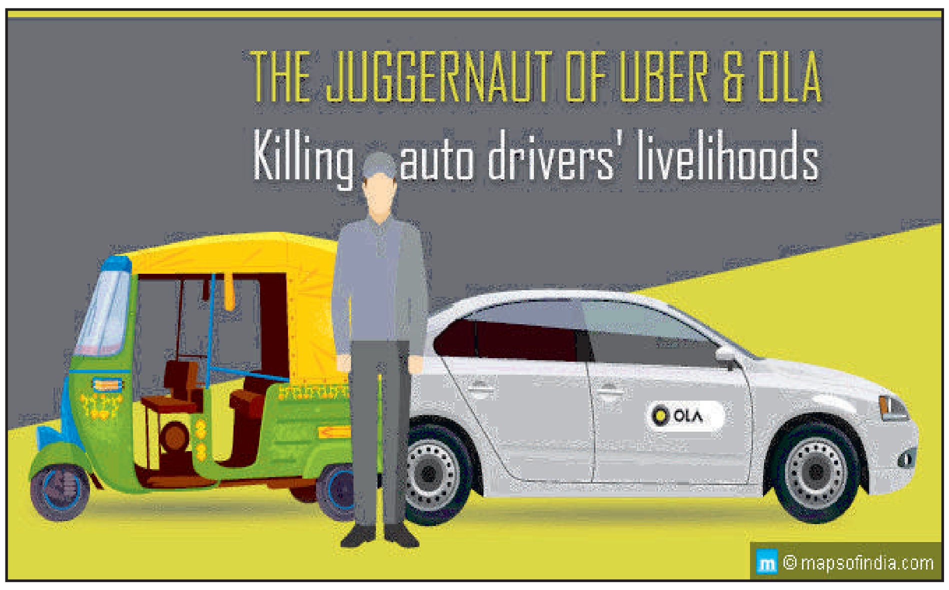

उन्होंने पूछा कि क्या भाजपा की दिल्ली सरकार सीएजी को विशुद्ध इंधन मान रही है जबकि कांग्रेस की शीला दीक्षित सरकार ने एक झटके में डीटीसी बेड़े की सभी बसों को बदलकर दिल्ली के प्रदूषण को खत्म करने का क्रांतिकारी कदम उठाया था जिसकी विश्वभर में सराहना हुई थी।

उन्होंने कहा कि सीएनजी वाहनों की जगह ई-वाहन लाने से पहले क्या सरकार ने दिल्ली में बिजली की मांग की उपलब्धता और क्षमता को बढ़ाने के लिए किसी नीति पर कोई योजना बना रही है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में ई-वाहनों के चार्जिंग स्टेशन की पहले से ही कमी है और दिल्ली में घरेलू और व्यवसायिक संस्थानों में बिजली खपत की मांग प्रति वर्ष बढ़ रही है, सरकार को इस बिजली की मांग को अपने संज्ञान में लाकर ही ई-वाहन नीति पर कोई कदम उठाना चाहिए।

शिवाजी स्टेडियम बस टर्मिनल की बदलेगी सूरत, बनाई पुनर्विकास की योजना

राजधानी दिल्ली में कनॉट प्लेस स्थित शिवाजी स्टेडियम टर्मिनल की सूरत बदलने वाली है। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद यानी एनडीएमसी ने इसके पुनर्विकास की योजना बनाई है।

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने राजधानी के प्रमुख क्षेत्रों में से एक कनॉट प्लेस स्थित शिवाजी स्टेडियम टर्मिनल के पुनर्विकास की योजना बनाई है। इसके तहत टर्मिनल को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। इससे सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और अधिक सुगम बनेगी। यहां लगभग 200 वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा मिलेगी। योजना पूरी होने के बाद बस व अन्य वाहन खड़े करने में दिक्कत नहीं होगी।

एनडीएमसी ने पहले शिवाजी स्टेडियम टर्मिनल पर बस टर्मिनस, साइकिल शेयरिंग स्टेशन, ऑटो रिक्शा स्टैंड और अन्य सार्वजनिक परिवहन के विकल्पों को विकसित करने की योजना बनाई थी। इसमें 113 वाहनों की पार्किंग की भी व्यवस्था प्रस्तावित थी, लेकिन भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए और सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुविधाजनक बनाने के उद्देश्य से परियोजना को और विस्तृत करने का निर्णय लिया गया है।

इसके तहत अब टर्मिनल में अधिक बसों और वाहनों के लिए पार्किंग की सुविधा को बढ़ाया जाएगा, ताकि यहां अधिक संख्या में यात्री लाभान्वित हो सकें। शिवाजी स्टेडियम टर्मिनल दिल्ली के महत्वपूर्ण परिवहन केंद्रों में से एक है। यहां रोजाना हजारों यात्री आते-जाते हैं। ऐसे में पार्किंग सुविधा की कमी और सार्वजनिक परिवहन के समुचित प्रबंधन की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। एनडीएमसी के नए निर्णय के तहत यहां न केवल पार्किंग सुविधा को बढ़ाया जाएगा, बल्कि यात्रियों की सुविधाओं पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

स्वच्छ प्रतीक्षा कक्ष, बैठने की व्यवस्था

नई योजना के तहत इस टर्मिनल को आधुनिक तकनीक और यात्री सुविधाओं से युक्त किया जाएगा। यहां स्वच्छ प्रतीक्षा कक्ष, बैठने की उचित व्यवस्था, साफ-सुथरे शौचालय, पीने के पानी की सुविधा और सुरक्षा के विशेष उपाय किए जाएंगे। इसके अलावा सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने के लिए बसों की आवाजाही को भी अधिक सुव्यवस्थित किया जाएगा, ताकि यात्रियों को बेहतर अनुभव प्राप्त हो सके।

यात्रियों को नहीं होगी असुविधा

एनडीएमसी के उपाध्यक्ष कुलजीत सिंह चहल के अनुसार, योजना के क्रियान्वयन के बाद टर्मिनल पर बसों और अन्य सार्वजनिक वाहनों की आवाजाही और पार्किंग से जुड़ी समस्याएं काफी हद तक कम हो जाएंगी। इससे यात्रियों को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा और सार्वजनिक परिवहन प्रणाली अधिक व्यवस्थित व प्रभावी हो सकेगी। परियोजना का उद्देश्य न केवल पार्किंग की सुविधा को बढ़ाना है, बल्कि शहर में यातायात को सुचारू बनाने के साथ-साथ सार्वजनिक परिवहन को भी मजबूत करना है।

दिल्ली में प्रतिदिन लाखों लोग बसों, ऑटो रिक्शा और अन्य सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करते हैं। ऐसे में इस टर्मिनल का उन्नयन शहर की परिवहन व्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाएगा। इसके अलावा भविष्य में इस टर्मिनल को और अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी विचार किया जा रहा है। आधुनिक शहरी परिवहन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यहां मल्टीलेवल पार्किंग और डिजिटल सूचना प्रणाली जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

गणपति के वाहन मुषक की विभिन्न कथाये

एक बार वह महर्षि पराशर के आश्रम में पहुँच गया. वहाँ उसने आदत के अनुसार मिट्टी के सारे पात्र तोड़ दिए, आश्रम की वाटिका उजाड़ डाली. सारे वस्त्रों और ग्रंथों को कुतर दिया.भगवान गणेश भी उसी आश्रम में थे. महर्षि पराशर ने चूहे की करतूत गणेशजी को बताई. भगवान गणेश ने उस दुष्ट मूषक को सबक सिखाने की सोची.उन्होंने मूषक को पकड़ने के लिए अपना पाश फेंका. पाश मूषक का पीछा करता हुआ पाताल लोक तक पहुंचा. पाश मूषक के गले में अटक गया और मूषक बेहोश हो गया. पाश में घिसटता हुआ मूषक गणेशजी के सम्मुख उपस्थित हुआ. जैसे ही होश आया उसने बिना पल गंवाए गणेशजी की आराधना शुरू कर दी और अपने प्राणों की भीख मांगने लगा.....

सुमेरू पर्वत पर सौभरि ऋषि आश्रम बनाकर तप करते थे. उनकी पतिव्रता पत्नी मनोमयी इतनी रूपवती थीं कि उनके रूप पर यक्ष गंधर्व आदि सभी मोहित थे.मनोमयी के पतिव्रता और सौभरि की पत्नी होने के कारण गंधर्व मनोमयी की ओर देखने का साहस नहीं कर पाते थे लेकिन क्रौंच नाम एक दुष्ट गंधर्व से न रहा गया.क्रोंच ऋषि पत्नी के हरण का अवसर देखने लगा. एक बार ऋषि लकड़ियां लाने वन गए. कौंच को मनोमयी के हरण का यह उचित समय लगा. वह आश्रम में आया. कौंच मनोमयी का हाथ पकड़कर खींचकर अपने साथ ले जाने लगा. ऋषि पत्नी उससे दया की भीख मांगने लगी. उसी समय सौभरि ऋषि आ पहुंचे.उन्होंने कौंच को शाप दिया- तूने चोर की तरह मेरी पत्नी का हरण करना चाहा है, तू मूषक बन जा. तुझे धरती के भीतर छुपकर रहना पड़े और चोरी करके अपना पेट भरेगा.क्रोंच, मुनि के चरणों में गिरकर माफी मांगने लगा- कामदेव के प्रभाव से मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई इसलिए मैंने ऐसा अपराध किया. आप दयालु हैं, मुझे क्षमा कर दें.

बार-बार माफी मांगने से ऋषि पसीज गए. ऋषि ने कहा- मेरा शाप व्यर्थ तो नहीं जा सकता लेकिन इसमें सुधार कर देता हूं. इस शाप के कारण तुम्हें बहुत सम्मान मिलेगा.ऋषि ने कहा- द्वापर में महर्षि पराशर के यहां गणपति गजमुख पुत्ररूप में प्रकट होंगे तब तुण उनके वाहन बनोगे, जिससे देवगण भी तुम्हारा सम्मान करने लगेंगे.शापग्रस्त क्रोंच चूहा बन गया. उसका शरीर विशालकाय था. उद्दंडता तो उसमें पहले से ही थी. ताकत के कारण वह रास्ते में आने वाली सारी चीज़ें नष्ट कर देता.

एक बार वह महर्षि पराशर के आश्रम में पहुँच गया. वहाँ उसने आदत के अनुसार मिट्टी के सारे पात्र तोड़ दिए, आश्रम की वाटिका उजाड़ डाली. सारे वस्त्रों और ग्रंथों को कुतर दिया.भगवान गणेश भी उसी आश्रम में थे. महर्षि पराशर ने चूहे की करतूत गणेशजी को बताई. भगवान गणेश ने उस दुष्ट मूषक को सबक सिखाने की सोची.उन्होंने मूषक को पकड़ने के लिए अपना पाश फेंका. पाश मूषक का पीछा करता हुआ पाताल लोक तक पहुंचा. पाश मूषक के गले में अटक गया और मूषक बेहोश हो गया. पाश में घिसटता हुआ मूषक गणेशजी के सम्मुख उपस्थित हुआ. जैसे ही होश आया उसने बिना पल गंवाए गणेशजी की आराधना शुरू कर दी और अपने प्राणों की भीख मांगने लगा.गणेश जी मूषक की आराधना से प्रसन्न हो गए. उन्होंने कहा- तुमने लोगों को बहुत कष्ट दिए है. मैंने दुष्टों के नाश एवं साधुओं के कल्याण के लिए ही अवतार लिया है.तुम शरणागत हो इसलिए क्षमा करता हूं. मैं तुमसे प्रसन्न हूं कोई वरदान मांग लो. क्रौंच आदत से मजबूर था. गणेशजी से प्राणदान मिलते ही फिर से उसमें अहंकार जाग गया.वह गणेशजी से बोला, मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिए, लेकिन यदि आप मुझसे कोई इच्छा रखते हों तो कहें मैं आपकी इच्छा पूरी कर दूंगा.मूषक की गर्वभरी वाणी सुनकर गणेशजी मुस्कुराए और कहा- यदि तुम्हारा वचन सत्य है तो तुम मेरा वाहन बन जाओ. मूषक ने बिना देरी किए 'तथास्तु' कह दिया.गणेशजी उस पर सवार हुए. गजानन के भार से दबकर उसके प्राण संकट में आ गए. उसने गणेशजी से अपना भार कम करके वहन करने योग्य बनाने की विनती की.इस तरह मूषक का गर्व चूरकर गणेशजी ने उसे अपना वाहन बना लिया. यही कारण है कि आज भी लोग अपने घरों में चूहों के उत्पात मचाने पर भगवान गणेश को याद करते हैं।

द्वितीया कथा

बहुत समय की बात है, एक बहुत ही भयंकर असुरों का राजा था – गजमुख। वह बहुत ही शक्तिशाली बनना और धन चाहता था। वह साथ ही सभी देवी-देवताओं को अपने वश में करना चाहता था इसलिए हमेशा भगवान-शिव से वरदान के लिए तपस्या करता था। शिव जी से वरदान पाने के लिए वह अपना राज्य छोड़ कर जंगल में जा कर रहने लगा और शिवजी से वरदान प्राप्त करने के लिए, बिना पानी पिए भोजन खाए रातदिन तपस्या करने लगा।

कुछ साल बीत गए, शिवजी उसके अपार तप को देखकर प्रभावित हो गए और शिवजी उसके सामने प्रकट हुए। शिवजी नें खुश हो कर उसे दैविक शक्तियाँ प्रदान किया जिससे वह बहुत शक्तिशाली बन गया। सबसे बड़ी ताकत जो शिवजी नें उसे प्रदान किया वह यह था की उसे किसी भी शस्त्र से नहीं मारा जा सकता। असुर गजमुख को अपनी शक्तियों पर गर्व हो गया और वह अपने शक्तियों का दुर्पयोग करने लगा और देवी-देवताओं पर आक्रमण करने लगा।

मात्र शिव, विष्णु, ब्रह्मा और गणेश ही उसके आतंक से बचे हुए थे। गजमुख चाहता था की हर कोई देवता उसकी पूजा करे। सभी देवता शिव, विष्णु और ब्रह्मा जी के शरण में पहुंचे और अपनी जीवन की रक्षा के लिए गुहार करने लगे। यह सब देख कर शिवजी नें गणेश को असुर गजमुख को यह सब करने से रोकने के लिए भेजा।

गणेश जी नें गजमुख के साथ युद्ध किया और असुर गजमुख को बुरी तरह से घायल कर दिया। लेकिन तब भी वह नहीं माना। उस राक्षक नें स्वयं को एक मूषक के रूप में बदल लिया और गणेश जी की और आक्रमण करने के लिए दौड़ा। जैसे ही वह गणेश जी के पास पहुंचा गणेश जी कूद कर उसके ऊपर बैठ गए और गणेश जी ने गजमुख को जीवन भर के मुस में बदल दिया और अपने वाहन के रूप में जीवन भर के लिए रख लिया।

बाद में गजमुख भी अपने इस रूप से खुश हुआ और गणेश जी का प्रिय मित्र भी बन गया।

तृतीय कथा

गणेश जी को बुद्धि, समृद्धि, विद्या और भाग्य का देवता माना जाता है। तर्क-वितर्क करना, एक-एक बात या समस्या की तह में जाना, उसकी मीमांसा करना और उसके निष्कर्ष तक पहुंचना यह सब उनका शौक है। ठीक गजानन की तरह मूषक भी तर्क-वितर्क में पीछे नही हैं। वह भी हर वस्तु को काट-छांट कर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करते है यही नहीं वह बहुत ही फुर्तीले होते है और हमेशा जागरूक रहने का सन्देश भी देते है।

मगर क्या सिर्फ यही कारण है कि गणेश जी ने एक चूहे को अपना वाहन बनाया। इसके पीछे कई प्राचीन कथाएं प्रचलित है। उनमें से एक रोचक कथा कुछ इस प्रकार है-

एक बार देवराज इन्द्र अपनी सभा में सभी देव गणों के साथ किसी गंभीर विषय पर चर्चा कर रहे थे। उस सभा में गन्धर्व और अप्सराएं भी मौजूद थी। सारे देवगन इंद् की बातों को बड़े ही ध्यान से सुन रहे थे एवं अपना अपना मत भी बता रहे थे लेकिन सभा में एक क्रौंच नाम का गन्धर्व था जो देवराज की बातें न सुनकर अप्सराओं के साथ हंसी ठिठोली कर रहा था।

कुछ समय तक देवराज इंद्र ने उसकी हरकतों को नज़रंदाज़ किया और उसे इशारे में समझाया। किन्तु क्रौंच पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ क्योंकि उस समय वह उन्माद में डूबा हुआ था। उसकी इस हरकत से देवराज क्रोधित हो उठे और उसे श्राप दे दिया की वह एक मूषक बन जाए। देवराज के श्राप से वह तुरंत ही गन्धर्व से मूषक बन गया और पूरे इंद्र लोग में इधर उधर भागने लगा। उसके उत्पात से परेशान होकर इंद्र ने उसे देवलोक के बाहर फ़ेंक देने का आदेश दिया जिसके पश्चात द्वारपालों ने क्रौंच को स्वर्ग लोक के बहार फ़ेंक दिया।

स्वर्ग लोग से क्रौंच सीधा ऋषि पराशर के आश्रम में जा गिरा। वहां उसने क्रोध में आकर सारे पात्रों को छिन्न भिन्न कर दिया था और सारा भोजन चट कर गया। यही नहीं उसने ऋषियों के वस्त्र और उनकी धार्मिक पुस्तकें भी कुतर डाली।

मूषक के उधम से परेशान ऋषि पराशर ने किया श्री गणेश का आवाहन

मूषक के उत्पात से ऋषि पराशर के आश्रम में चारों तरफ हाहाकार मच गया तब उन्होंने परेशान होकर श्री गणेश का आवाहन किया और उसके आतंक से बचाने का आग्रह किया। तब भगवान गणेश ने अपने पाश को फ़ौरन आदेश दिया कि वह उस मूषक को पकड़ कर लाए।

जब पाश मूषक को पाताल लोक से ढूंढ कर गणेश जी के पास लाया तो भगवान के सम्मुख आते ही मूषक भय से कांपने लगा। उसकी यह दशा देख कर गणेश जी को हंसी आ गयी जिसके पश्चात मूषक भी सामान्य हो गया और गजानन से कहने लगा की आप जो चाहे मुझसे माँग लें। ऐसा सुनते ही भगवान ने उसे अपना वाहन बनने को कहा और वह उसके ऊपर विराजमान हो गए। चूँकि गणेश जी का शरीर काफी भारी था इसलिए वह उनका भार उठाने में सक्षम नहीं था। इसलिए उसने भगवान से प्रार्थना कि की वह उसे इतनी शक्ति प्रदान करें कि वो उनका भार उठा सके तब गणेश जी ने तथास्तु कहा और इस प्रकार मूषक उनका वाहन बन गया।

प्रदोष व्रत

प्रदोष व्रत के दिन महादेव और मां पार्वती की पूजा-अर्चना करना शुभ माना जाता है। इस दिन भगवान शिव को हलवा, दही और खीर समेत आदि चीजों का भोग लगाना चाहिए। मान्यता है कि इस शुभ काम को करने से महादेव प्रसन्न होते हैं। साथ ही सभी मुरादें पूरी होती हैं। अब अप्रैल माह की शुरुआत होने जा रही है।

गुरु प्रदोष व्रत की तिथि और शुभ मुहूर्त वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि 09 अप्रैल को 10 बजकर 55 मिनट से शुरु होगी और 11 अप्रैल को रात 01 बजे तिथि खत्म होगी। ऐसे में प्रकार 10 अप्रैल को प्रदोष व्रत किया जाएगा। प्रदोष व्रत के दिन महादेव की पूजा करने का टाइम 06 बजकर 44 मिनट से 08 बजकर 59 मिनट तक है। प्रदोष व्रत पूजा सामग्री लिस्ट कनेर का फूल, कलावा, गंगाजल, दूध, पवित्र जल, अक्षत, शहद, फल, सफेद मिठाई, सफेद चंदन, भांग, बेल पत्र, धूपबत्ती प्रदोष व्रत कथा की पुस्तक समेत आदि। प्रदोष व्रत के उपाय प्रदोष व्रत का दिन भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए शुभ माना जाता है। इस दिन महादेव का कच्चे दूध से अभिषेक करें। मान्यता है कि इस उपाय को करने से साधक को सभी कामों में सफलता मिलती है और महादेव की कृपा प्राप्त होती है। कारोबार में तरक्की पाने के लिए प्रदोष व्रत के अवसर पर संध्याकाल में भगवान शिव की पूजा करें। इस दौरान महादेव को भांग और बेल पत्र अर्पित करें। साथ ही जीवन में सुख-शांति की प्राप्ति के लिए कामना करें। इस उपाय को करने से रुके हुए काम जल्द पूरे होते हैं और शिव जी की कृपा प्राप्त होती है।

खांसी COUGH

भुनी हुई अदरक से खांसी के लिए गोलियां बनाने की विधि

सामग्री

50 ग्राम अदरक

50 ग्राम गुड़

50ग्राम शहद

1/2 चम्मच काली मिर्च पाउडर

1/2 चम्मच इलायची पाउडर

थोड़ा सा नींबू का रस

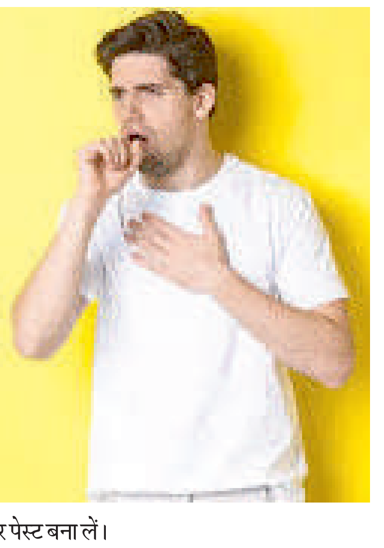

विधि

अदरक को धोकर छील लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।धीमी आंच पर तवे या पैन में अदरक के टुकड़ों को हल्का भूरा होने तक भून लें। अदरक की खुशबू आने लगेगी और यह थोड़ी सूखी हो जाएगी।

भुनी हुई अदरक को ठंडा होने के बाद मिक्सर या सिलबट्टे पर पीसकर पेस्ट बना लें।

एक पैन में गुड़ को धीमी आंच पर पिघलाएं जब तक वह गाढ़ा सिरप न बन जाए ध्यान रखें कि गुड़ जलने न पाए, इसे बीच-बीच में हिलाते रहें।पिघले हुए गुड़ में ठंडा होने पर शहद, अदरक का पेस्ट, काली मिर्च पाउडर और इलायची पाउडर मिलाएं।इस मिश्रण को अच्छी तरह से मिलाकर थोड़ी देर पकाएं, जब तक यह एक समान न हो जाए। आप चाहें तो थोड़ा नींबू का रस भी मिला सकते है

मिश्रण को हल्का ठंडा होने दें ताकि इसे हाथों से छू सकें।

अपने हाथों में थोड़ा घी लगाएं और मिश्रण से छोटी-छोटी गोलियां बना लें।इन्हें एक प्लेट में रखें और ठंडा होने दें ताकि ये सख्त हो जाएं।गोलियों को एयरटाइट डिब्बे में रखें। इन्हें 2-3 हफ्ते तक इस्तेमाल किया जा सकता है।खांसी और गले की खराश के लिए दिन में 2-3 बार इन गोलियों का सेवन करें।

आपको बहुत आराम मिलेगा और खांसी और बलगम की समस्या दूर होगी।

सभी सुखी और निरोगी रहे।

गैस्टिक की बीमारी को खत्म करने का सटीक और सुंदर घरेलू उपचार

किसी भी बीमारी की शुरुआत पेट से होती है पेट अगर सही हो तो कोई बीमारी आपको छू भी नहीं सकती है ऐसा सिर्फ घर के बड़े बुजुर्ग ही नहीं बल्कि डॉक्टर भी मानते हैं ,अगर आपको पाचन संबंधी समस्याएं अक्सर ही परेशान करती हैं तो ये भी एक संकेत है कमजोर इम्यूनिटी का। दिनभर बैठे रहना और जरूरत से ज्यादा चाय पीना गैस बनने के लक्षणों में एक है. इसके अलावा गलत खानपान और गलत दिनचर्या भी गैस बनने का कारण हो सकता है।

1. अजवाइन का पानी उपयोगी अजवाइन के बीज में थाइमोल नामक एक यौगिक होता है, जो गैस्ट्रिक रस को स्रावित करता है और पाचन में मदद करता है. गैस की समस्या में पानी के साथ लगभग आधा चम्मच अजवाइन के बीज खा सकते हैं. इससे आपको राहत मिलेगी!

2. जीरा पानी है रामबाण जीरा पानी गैस्ट्रिक या गैस की समस्या का सबसे अच्छा घरेलू उपचार है. जीरा में आवश्यक तेल होते हैं, जो लार ग्रंथियों को उत्तेजित करते हैं. इससे भोजन ठीक तरह से पचता है. यह पेट में अतिरिक्त गैस के निर्माण को भी रोकता है.जीरा पानी बनाने के लिएएक चम्मच जीरा लें और इसे दो कप पानी में 10-15 मिनट के लिए उबालें. अब इसे ठंडा होने दें और भोजन के बाद इसे पियें।

3. हींग का पानी उपयोगी हींग को पानी में मिलाकर पिएं, आधा चम्मच हींग को हल्के गर्म पानी में मिलाकर पीने से पेट में गैस बननी कम होती है. हींग

गैस से तुरंत राहत दिलाने में मददगार है. इससे पेट भी साफ हो जाता है और गैस से राहत भी मिलती है!

4. अदरक गैस के लिए उपयोगी अदरक का इस्तेमाल कई रोगों में किया जाता है. ताजा अदरक का इस्तेमाल आप पेट की गैस दूर करने के लिए भी कर सकते हैं. पेट की गैस से राहत पाने के लिए आप अदरक की चाय पी सकते हैं. अदरक की चाय से मतलब दूध वाली चाय नहीं है. पेट की गैस में राहत पाने के लिए आपको एक कप पानी में ताजा अदरक के टुकड़े कर डालें और इसे अच्छी तरह उबाल लें. इसे हल्का गर्म ही पीएं।

5. बैकिंग सोड़ा और नींबू का रस पियें एक बेहद ही आसान और जल्दी से तैयार होने वाला घरेलू नुस्खा है बैकिंग पाउडर और नींबू का जूस. एक चम्मच नींबू का जूस आधा चम्मच बेकिंग पाउडर को एक कप पानी में मिलाएं और पी लें. ऐसा करने से पेट की गैस से तुरंत राहत मिलती है।

घुटना दर्द

सालम मिश्री सफेद मूसली सालम पंजा तीनों को 50-50 ग्राम लेना है 3 ग्राम सुबह शाम दूध के साथ लेना और साथ में अश्वगंधा 2 ग्राम सुबह शाम दे

परेज खट्टी चीज तेलीय चीज नहीं खानी है

फायदे , घुटनों में दर्द आवाज आना सब एक साथ ठीक हो जाते हैं पैरों में सूजन आना शॉफ कलौंजी राइ तीनों को मिलाकर एक कप पानी में काढ़ा बनाकर सुबह शाम दे ठीक हो जाता।

जोड़ों में दर्द गठिया ग्रीस कम

1. अतिबला के पत्ते 50 ग्राम.
2. पारिजात के पत्ते 50 ग्राम
3. चमेली की जड़ 100 ग्राम,

पांच लीटर पानी में उबाले, 2 लीटर पानी रह जाने पर उतार ले उतारकर छानकर जड़ी बूटियां को इमाम दस्ते में बहुत कुटे फिर तीन लीटर पानी मिक्स करके उबाले फिर एक लीटर पानी रहने पर उतारे फिर कपड़े से छानकर सुरक्षित रख ले रात को एक घुट पानी पीकर सो जाना है पहले दिन ही रिजल्ट है।

पैर की सूजन पर एक कप पानी में तीन चम्मच धनिया के बीज उबाले पानी आधा रहने पर धीरे-धीरे पी जाए दिन में दो बार

गठिया दर्द पर सफेद मूसली पिपली अजवाइन पीपलामूल 1 - 1 तोला विधारा सतावर अश्वगंधा सात सात ग्राम 1 साल पुराने गुड में सबको मिक्स कर दे और बेर इतनी गोलियां बना दे।सुबह शाम पानी के साथ खाने से आराम होता है।

वात रोग काली मिर्च 6 ग्राम तुलसी के पत्ते 6 ग्राम घी 6 ग्राम मिलाकर चाटे।वात रोग में आराम होता है।

हड्डियों में गैप

1. बबुल की फली 250 ग्राम,
2. घी में सेका हुआ बबुल का गोंद 100 ग्राम,
3. हरि सिंगार के फूल 100 ग्राम,
4. मेथी दाना भुना हुआ 100 ग्राम,
5. अजवाइन 100 ग्राम,
6. हल्दी 100 ग्राम,
7. गिलोय 100 ग्राम,
8. चिरायता 100 ग्राम,
9. शतावरी 100 ग्राम,
10. दालचीनी 100 ग्राम,
11. काली जीरी 50 ग्राम,
12. शिलाजीत 10 ग्राम,

सबको 200 ग्राम एलोवेरा के रस में दे

दवाई लेने का तरीका सुबह एक चम्मच गुनगुने पानी के साथ लेना दोपहर को खाने के के 1 घंटे बाद शाम को भी खाने के 1 घंटे बाद दो-तीन महीने लगातार सेवन करने से घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जाता है रीड की हड्डी के गैप में यह मात्र दूध से दे इससे घुटने आदि बदलने की नौबत नहीं आती।

चोट से घुटने दर्द वैसलीन में अमृत धारा मिलाकर दिन में तीन बार लगाना है। कलौंजी नागर मोथा हरसिंगार काढ़ा बनाकर शाम को पिलाएं।

घुटनों में पानी भर जाना सहजन की जड़ की छाल प्लास्टिक की थैली में बंद कर लाना है बाहर निकाल कर तुरंत घुटनों पर बांधकर पट्टी लपेट देनी है 15 दिन बाद घुटनों में से आंग निकलेगी घुटनों का पानी खीस, लेगा फिर 1 घंटे बाद पट्टी खोलकर नारियल का तेल लगाना है इसी तरह और 10 दिन करें इसके बाद में 3 दिन का गैप देकर वापस करें रोजाना ताजी जड़ का ही प्रयोग करें।

हड्डी कमजोरी, घुटना दर्द ,आम वात संग्रहणी का इलाज लिसोड़ा के नरम पत्ते अश्वगंधा नागर मोथा बराबर पाउडर बनाकर एक ग्राम सुबह शाम दे दूध या पानी से दे।

एडी की हड्डी बढ़ने पर या एडी के दर्द पर इलाज नीले फूल वाले आंकड़े पानी में उबालकर सहन कर सके इतना चेक करके पानी से सेंक करे। और बाद में फूल बांध देने हैं।साथ में त्रयोदश गूगल दो-दो गोली, दिन में तीन बार 20 दिन में फर्क पड़ जाता है 40 दिन में ठीक हो जाता है।

नाक की हड्डी बढ़ जाना या बदबू आना अनार के फूल का रस रुई में लपेटकर जहां हड्डी बड़ी हुई है वह रख दे। 10 दिन करना है हमदर्द की जोशीना 5 एम एल की मात्रा में एक कप पानी में मिलाकर पिए।

नाक की हड्डी बढ़ने पर दूसरी दवा अपामार्ग का नमक पानी में घोलकर 5 मिनट हड्डी पर मलंना है 8 -10 दिन काफी है।

घर में श्वेतार्क गणेश की प्रतिमा रखने से सुख-समृद्धि बनी रहती है

भगवान गणेश के अनेक रूपों में से एक चमत्कारी रूप है सफेद आंकड़े के गणेश। यही श्वेतार्क गणेश कहलाते हैं। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार आंकड़े के गणेशजी की पूजा से धन, सुख-सौभाग्य, ऐश्वर्य और सफलता प्राप्त होती है। यदि श्वेतार्क गणेशजी की प्रतिमा तिजोरी में रखी जाए तो स्थाई लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। घर में रिद्धि-सिद्धि की कृपा बनी रहती है। हर काम में लाभ प्राप्त होता है।

आंकड़े के गणेश से जुड़ी जानकारियां

शास्त्रों के अनुसार श्वेतार्क गणेशजी आंकड़े के पौधे की जड़ में प्रकट होते हैं। आंकड़े को आक का पौधा भी कहा जाता है। इस पौधे के फूलों को शिवलिंग पर भी अर्पित किया जाता है। आंकडे के पौधे की एक दुर्लभ प्रजाति है सफेद आंकड़ा। इसी सफेद आंकड़े की जड़ में श्वेतार्क गणपति की प्रतिकृति निर्मित होती है। इस पौधे की पहचान यह है कि इसके फूल सफेद होते हैं। किसी भी पौधे की जड़ में गणपति की प्रतिकृति बनने में कई वर्षों का समय लगता है। बाजार में पूजन सामग्रियों की दुकानों से श्वेतार्क गणेश प्राप्त किए जा सकते हैं।

सफेद आंकड़े की जड़ प्राप्त होने के बाद इसकी बाहरी परतों को कुछ दिनों तक पानी में भिगोया जाता है। जब सफेद आंकड़े की इस जड़ पानी में से निकाला जाता है तो भगवान गणेश के शरीर की बनावट इसमें दिखाई देने लगती है।

श्वेतार्क गणेश से जुड़ी खास बातें और उपाय

सफेद आंकड़े के हर पौधे की जड़ में गणेश की सूंड जैसा आकार रहता है। इसकी जड़ के तने में गणेशजी के शरीर, आस-पास की शाखाओं में भुजाएं और सूंड जैसी आकृति दिखाई देती है। कुछ पौधों की जड़ में बैठे हुए गणेश की मूर्ति जैसी भी दिखाई देती है।

आंकड़े में गणेशजी का वास पुराने समय से कई पेड़-पौधों की पूजा की जाती रही है। इनमें पीपल, आंवला, वट वृक्ष मुख्य हैं। शास्त्रों के अनुसार बिल्व के वृक्ष में शिव का वास होता है और आंकड़े के पौधे में श्रीगणेश का वास होता है। आंकड़े की जड़ में दिखाई देने वाली श्रीगणेश की आकृति इस बात का प्रमाण है। कार्यों में सफलता के लिए आंकड़े

के गणेशजी की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है। यह गणेशजी का प्राकृतिक व चमत्कारी स्वरूप है। मान्यता है कि जिस परिवार में आंकड़े के गणेश की रोज पूजा होती है, वहां दरिद्रता, रोग व परेशानियां का वास नहीं होता है। इस गणेश प्रतिमा की पूजा करने से सुख व सफलता के साथ ही भरपूर धन व वैभव प्राप्त है। सफेद आंकड़े की जड़ मिलने पर उसकी सफाई कर साफ जल से स्नान कराना चाहिए।

श्वेतार्क गणेश की पूजन विधि

श्वेतार्क गणपति की प्रतिमा को पूर्व दिशा की तरफ ही स्थापित करना चाहिए

पूजन में लाल कनेर के पुष्प अवश्य इस्तेमाल में लाएं। एक लकड़ी के चौके या पाटे पर एक पीला वस्त्र बिछाएं । उस पर एक प्लेट रखे वव प्लेट पर कुमकुम या सिंदूर से अष्टदल बनायें इसके ऊपर फूल बिछाकर आसन दें व श्वेतार्क गणपति को विराजमान करें फिर पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करें और इस मंत्र का 1 माला जप करें

"ॐ पंचाकतम्-ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा"

से पूजन करें और इसके पश्चात इस मंत्र

"ॐ ह्रीं पूर्वदयां ॐ ह्रीं फट् स्वाहा"

मंत्र से हवन कर 108 आहुति दें। लाल कनेर के पुष्प, शहद तथा शुद्ध गाय के घी से आहुति देने का विधान है। इसके बाद गणपति कवच का तीन बार पाठ करें अथार्वशिर्ष का 11 पाठ करें ततपश्चात11 माला जप नीचे लिखे मँत्र का करेँ और प्रतिदिन कम से 1 माला करेँ

"ॐ गँ गणपतये नमः"

का जप करें।

अब

"ॐ ह्रीं श्रीं मानसे सिद्धि करि ह्रीं नमः"

मंत्र बोलते हुए लाल कनेर के पुष्पों को नदी या सरोवर में प्रवाहित कर दें।

वैसे आयुर्वेद मेँ भी इसका प्रयोग चर्म रोगों, पाचन समस्याओं, पेट के रोगों, ट्यूमरों, जोड़ों के दर्द, घाव और दाँत के दर्द को दूरकरने में किया जाता है। इस पेड़ का दूध गंजापन दूर करने और बाल गिरने को रोकनेवाला है। इसके फूल, छाल और जड़ दमेऔर खाँसी को दूर करने वाले माने गए हैं।

धार्मिक दृष्टि से श्वेत आक को कल्प वृक्ष की तरह वरदायक वृक्ष माना गयाहै। श्रद्धा पूर्वक नतमस्तक होकर इस पौधे से कुछ माँगने पर ये माँगने वाले की इच्छा पूरी करता है। यह भी कहा गया है कि इसप्रकार की इच्छा शुद्ध होनी चाहिए। ऐसी आस्था भी है कि इसकी जड़ को पुष्य नक्षत्र में विशेष विधिविधान के साथ जिस घर में स्थापित किया जाता है वहाँ स्थायी रूप से लक्ष्मी का वास बना रहता है और धन धान्य की कमी नहीं रहती।

तन्त्र शास्त्र में भी श्वेतार्क गणपति की पूजा का विशेष विधान बताया गया है. तन्त्र शास्त्र अनुसार घर में इस प्रतिमा को स्थापित करने से ऋद्धि-सिद्धि कि प्राप्ति होती है. इस प्रतिमा का नित्य पूजन करने से भक्त को धन-धान्य की प्राप्ति होती है तथा लक्ष्मी जी का निवास होता है. इसके पूजन द्वारा शत्रु भय समाप्त हो जाता है. श्वेतार्क प्रतिमा के सामने नित्य गणपति जी का मन्त्र जाप करने से गणश जी का आशिर्वाद प्राप्त होता है तथा उनकी कृपा बनी।

ओखला में एशिया का सबसे बड़ा सिंगल स्टेज वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट पूरी क्षमता से कार्यरत

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली में यमुना को स्वच्छ और प्रवाहमान बनाने के मिशन के तहत राजधानी में सीवेज शोधन की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल की गई है। दिल्ली सरकार में PWD मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने ओखला स्थित एशिया के सबसे बड़े सिंगल स्टेज वेस्ट वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट (WWTP) का निरीक्षण किया।

यह 564 MLD क्षमता वाला संयंत्र अत्याधुनिक तकनीकों से सुसज्जित है और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार जल शुद्धिकरण कर रहा है।

इस संयंत्र में उन्नत ASP प्रक्रिया, टर्शियरी डिस्क फिल्टर्स और UV सिस्टम का उपयोग कर जल को ट्रीट, पॉलिश और कीटाणुरहित किया जाता है, जिससे यह प्रदूषण मुक्त और उच्च गुणवत्ता (BOD 10 और TSS 10 या उससे बेहतर) का बनता है। संयंत्र पूरी तरह स्वचालित है और SCADA सिस्टम के माध्यम से दूरस्थ निगरानी और संचालन की सुविधा भी मौजूद है।

यह संयंत्र केंद्र सरकार के सहयोग से तैयार किया गया है और दिल्ली में लगभग 40 लाख की आबादी — जिसमें पुरानी दिल्ली, सेंट्रल दिल्ली, NDMC क्षेत्र और दक्षिणी दिल्ली शामिल हैं — को लाभ पहुंचा रहा है।

वर्तमान में ट्रीटेड जल को पुरानी आगरा नहर में छोड़ा जा रहा है, जबकि जल्द ही यह जल अबुल फज़ल ड्रेन के माध्यम से ओखला बैराज के डाउनस्ट्रीम में यमुना नदी में छोड़ा जाएगा। इसके लिए कार्य प्रगति पर है।

इसके अतिरिक्त, जून 2024 से प्रतिदिन 40 MLD शुद्ध जल दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में बागवानी (Horticulture) हेतु भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस प्लांट से 4.8 मेगावाट की हरित ऊर्जा (Green Energy) स्लज बायोगैस से उत्पन्न की जा रही है, जो संयंत्र की कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का लगभग 50% पूर्ति करती है। इससे प्राप्त CLASS-A गुणवत्ता की गंधहीन, रोगाणु मुक्त स्लज को जैविक खाद या मिट्टी सुधारक के रूप में सुरक्षित रूप से प्रयोग में

लाया जा सकता है। यह भारत का पहला संयंत्र है जो CLASS-A स्लज का उत्पादन कर रहा है।

यमुना में प्रदूषण की रोकथाम में बड़ा योगदान

यह प्लांट ओखला में लगभग 30 MGD अतिरिक्त ट्रीटमेंट क्षमता जोड़ता है। बरापुला ड्रेन और महारानी बाग ड्रेन से आने वाले लगभग 35 MGD सीवेज को अब इस संयंत्र में ट्रीट कर यमुना में छोड़ा जाएगा, जिससे नदी में जाने वाला अशोधित सीवेज काफी हद तक कम होगा।

निरीक्षण के पश्चात PWD मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने कहा:

"प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जलशोधन की अत्याधुनिक व्यवस्था के माध्यम से हम यमुना को स्वच्छ बनाने और दिल्ली की नालियों को सीवर मुक्त करने की दिशा में ठोस और निर्णायक कदम उठा रहे हैं। हमारा प्रयास है कि राजधानी को एक स्वच्छ, सतत और जिम्मेदार शहर के रूप में विकसित किया जाए।"

यह पहल 'विकसित भारत' के निर्माण में एक अहम योगदान है, जो न सिर्फ जल प्रबंधन को सशक्त बना रही है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के दृष्टिकोण को भी मज़बूत कर रही है।

सरल व्यक्ति किसी के सम्मान का भूखा नहीं होता, अपितु वह दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

सरलता तो स्वयं अपने आप में ही एक सम्मान है। और इस अस्तित्व में जो भी दिखाई पड़ता है, वह सरलता से सदा बांट ही रहा है। धरती, बिना किसी प्रत्याशा के हमें पाल रही है। आकाश, हमारे सर पर निर्लिप्त भाव से सदा हाथ रखे हैं। हवायें, सांस का मोल नहीं मांग रहीं। सूरज/ऊष्मा हमें शक्ति/जीवन देकर अहंकारी नहीं हो रही। जल निधि निर्विरोध हमें शीतल किये जा रही है। सरलता देती है, अन्यथा हमारी इग्नोरेंस देखकर, अब तक इन्होंने कभी का देना छोड़ दिया होता। हम सरल नहीं हैं, इसी लिए सरलता हमें दिखाई नहीं देती और सरलता का हम सम्मान नहीं कर पाते। देखा ही होगा, कि सरल व्यक्ति का सामान्यतः लोग मज़ाक उड़ातें हैं और उसका शोषण भी करते हैं। वह भले ही हमें तृप्त करने के लिए देने को राजी हो, लेकिन हम तो उससे छीनने/शोषण करके, अपना कॉलर ऊंचा किये हैं। ध्यान रहे कि यदि हमारी कलिष्ठता/कुटिलता/चालाकीपन की चादर थोड़ा सा सरक जाये, और हमें उधर/दूसरी ओर सरलता दिखाई पड़ जाये, तो उसका दातापन देखकर हम अपने आंसूं रोक नहीं पायेंगें। वास्तव में, हम अपनी कुटिलता/चालाकी/शोषण की दृष्टि के कारण, एक स्वच्छ/सरल हृदय को देखने/छूने से वंचित जो रह गये हैं।

पुरसाये में माता तिरुपुर सुंदरी मंदिर का भूमि पूजन, भव्य मंदिर निर्माण का हुआ श्रीगणेश

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

अयोध्या। विकासखंड पूरा बाजार के ग्राम पुरसाये, पुनहद में रविवार को माता तिरुपुर सुंदरी मंदिर का भूमि पूजन वैदिक मंत्रोच्चार व विधि-विधान के साथ सम्पन्न हुआ। यह आयोजन श्री श्री अयोध्या धाम ट्रस्ट के तत्वावधान में स्वामी पवना नंद गिरि जी महाराज की अगुवाई में किया गया। भूमि पूजन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि आलोक कुमार सिंह 'रोहित' रहे, जिन्होंने श्रद्धापूर्वक भूमि पूजन कर मंदिर निर्माण की आधारशिला रखी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस भव्य मंदिर की स्थापना से न केवल क्षेत्र की धार्मिक पहचान बढ़ेगी, बल्कि सामाजिक समरसता को भी बल मिलेगा। स्वामी पवना नंद गिरि जी महाराज ने कहा कि यह स्थान उनका पैतृक गांव है और गांववासियों की भावनाओं के अनुरूप माता तिरुपुर सुंदरी का यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए एक आस्था का केंद्र बनेगा। पंडित विजय पाठक ने वैदिक विधि से भूमि पूजन संपन्न कराया। इस पावन अवसर पर हनुमानगढ़ी नाका के महंत रामदास जी महाराज, राम अजोर तिवारी समेत बड़ी संख्या में क्षेत्रीय श्रद्धालु, गणमान्यजन और ग्रामीण उपस्थित रहे।

क्या शिक्षा मंत्री के घर 6 अप्रैल को मीटिंग हुई जिसमें दिल्ली के नामी प्राइवेट स्कूलों के मालिक शामिल थे?

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली की भाजपा सरकार और निजी स्कूलों के बीच सांठगांठ को लेकर बुधवार को बड़ा खुलासा किया। ₹आप₹ की वरिष्ठ नेता व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने यह खुलासा करते हुए बताया कि बीते 6 अप्रैल, रविवार को दोपहर एक बजे दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद की उनके आवास पर दिल्ली के बड़े-बड़े प्राइवेट मालिकों के साथ बैठक हुई थी। बैठक में स्कूल मालिकों को भरोसा दिया गया है कि फीस वृद्धि पर स्कूलों के ख़िलाफ़ कोई एक्शन नहीं लिया जाएगा और कुछ समय बाद भाजपा की दिल्ली सरकार एक आदेश जारी कर निजी स्कूलों को हर साल 10 फीसद फीस बढ़ाने की खुली छूट दे देगी। उन्होंने शिक्षा मंत्री से सवाल किया कि क्या उनकी निजी स्कूल मालिकों के साथ बैठक हुई थी, क्या उन्हें हर साल 10 फीसद फीस बढ़ाने का आश्वासन दिया गया है और उन्होंने पैरेंट्स को धोखा देने के लिए निजी स्कूलों से कितने पैसे लिए हैं?

नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि दिल्ली के निजी स्कूलों में फीस बढ़ने से वहां पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता में हाहाकार मची हुई है। कई स्कूलों ने 30 से 80 फीसद तक फीस अपनी बढ़ाई है। 40 डिग्री तापमान के अंदर बच्चों के माता-पिता फीस वृद्धि के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। मंगलवार को एक महिला विरोध प्रदर्शन के दौरान बेहोश भी हो गई, लेकिन स्कूल संचालकों ने गेट नहीं खोला और ना उनकी बात सुनी। यह वही निजी स्कूल हैं, जिन्होंने भाजपा की जीत पर लड्डू बांट कर खुशियां मनाई थी। यह निजी स्कूल संचालक भाजपा की जीत पर इसलिए खुश थे, क्योंकि उनको पता था कि पिछले 10 साल से दिल्ली में पेरेंट्स के हक की सरकार चल रही थी और उन्हें अब पता चल गया है कि भाजपा की जीत से प्राइवेट स्कूल मालिकों की सरकार आ गई है।

आतिशी ने कहा कि मंगलवार को ₹आप₹ के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने तथ्यों के साथ बड़ा खुलासा किया कि किस तरह से प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष भरत अरोड़ा भाजपा के पदाधिकारी हैं और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के चुनाव प्रचार में मुख्य भूमिका निभाई थी। भरत अरोड़ा ने दिल्ली चुनाव में भाजपा के लिए वोट मांगे थे। अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि भाजपा और निजी स्कूल मालिकों में सांठगांठ है और यह सांठगांठ भरत अरोड़ा के माध्यम से चलती है। पिछले 10 साल से यह निजी स्कूलों की एसोसियेशन फीस बढ़ाने की मांग को लेकर आम आदमी पार्टी की सरकार से लड़ती रही, अब उस निजी स्कूलों की एसोसिएशन की असलियत सामने आ गई है कि वह भाजपा की एसोसिएशन है। इन स्कूलों के मालिक न सिर्फ भाजपा के समर्थक हैं, बल्कि भाजपा के सदस्य भी हैं। इसी वजह से प्राइवेट स्कूलों की फीस बेतहाशा बढ़ रही है।

उन्होंने कहा कि निजी स्कूलों और भाजपा के बीच सांठगांठ के संदर्भ में विश्वसनीय सूत्रों से हमें बड़ी जानकारी मिली है कि 6 अप्रैल, रविवार को दोपहर 1:00 बजे दिल्ली सरकार के मंत्री आशीष सूद के निवास पर प्राइवेट स्कूलों के साथ उनकी बैठक हुई है। इस बैठक में प्राइवेट स्कूलों मालिकों को आश्वासन दिया गया है कि फीस वृद्धि को लेकर उनके खिलाफ कोई भी कड़ी कार्रवाई नहीं होगी। निजी स्कूलों को बोला गया है कि अभी बच्चों के माता-पिता के प्रदर्शन और आम आदमी पार्टी द्वारा मुद्दा उठाने से फीस वृद्धि का मुद्दा गरम है, लेकिन यह मुद्दा ठंडा होते ही दिल्ली सरकार की तरफ से एक आदेश निकाला जाएगा, जिसमें दिल्ली के हर प्राइवेट स्कूल को हर साल 10 फीसद फीस बढ़ाने की खुली छूट दी जाएगी। दिल्ली के इतिहास में ऐसी खुली छूट निजी स्कूलों को कभी नहीं मिली है।

उन्होंने दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद से पूछा कि क्या 6 अप्रैल को रविवार के दिन दोपहर 1:00 उनके घर कोई बैठक हुई थी या नहीं हुई थी, जिसमें दिल्ली के बड़े-बड़े प्राइवेट स्कूल के मालिक और प्रबंधन के लोग आए थे। दूसरा सवाल यह है कि क्या प्राइवेट स्कूलों को आश्वासन दिया गया है कि जल्द ही एक आदेश निकाला जाएगा जिसमें हर साल बिना किसी अनुमति और ऑडिट के 10 फ़ीसदी फीस बढ़ाने का अधिकार मिल जाएगा। तीसरी सवाल, दिल्ली के माता-पिता को इस तरह से धोखा देने के लिए आशीष सूद ने इन प्राइवेट स्कूलों से कितने पैसे लिए हैं, जो वह दिल्ली के माता-पिता को इतना बड़ा धोखा दे रहे हैं और उनको सड़कों पर आने के लिए मजबूर कर रहे हैं। आशीष सूद इन सवालों के जबाव दिल्ली की जनता को दें।

आतिशी ने कहा कि अब यह बिल्कुल साफ हो गया है कि प्राइवेट स्कूल के मालिकों और भारतीय जनता पार्टी के बीच में सांठगांठ है और इस सांठगांठ के सूत्रधार एक्शन कमेटी ऑफ प्राइवेट स्कूल के चेयरमैन और माउंट आबू ग्रुप ऑफ़ प्राइवेट स्कूल के चेयरमैन भरत अरोड़ा हैं। अब प्राइवेट स्कूलों को आश्वासन भी दिया गया है कि आने वाले समय में सरकार औपचारिक रूप से प्राइवेट स्कूलों को मनमर्जी फीस बढ़ाने की खुली छूट दे देंगे। इसके लिए सरकार से अनुमति लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सम्भवत: सांसद महुआ मित्रा का एक मकसद बंगाल में चल रहे उनकी पार्टी के आंतरिक विवाद से ध्यान भटकाना हो : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने आज एक पत्रकार सम्मेलन में तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मित्रा द्वारा एक अनजान लोगों की बनाई विडिओ रील सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करने की कड़ी निंदा की है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने ग्रेटर कैलाश विधायक शिखा रॉय एवं भाजपा मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर की उपस्थिती में पत्रकार सम्मेलन में कहा है की सांसद की लापरवाही से की गई सोशल मीडिया एक्स पोस्ट करने के दो मकसद हो सकते हैं, सम्भवतः सांसद महुआ मित्रा का एक मकसद बंगाल में चल रहे उनकी पार्टी के आंतरिक विवाद से ध्यान भटकाना हो या फिर सब जानते हैं की सांसद महुआ मित्रा को सस्ती लोकप्रियता एवं खबरों में बने रहने का शौक है और यह उसी क्रम में अपराधिक लापरवाही का परिणाम है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की सांसद महुआ मित्रा ने लापरवाही से एक गुमनाम संस्था का विडिओ रीपोस्ट कर सांसद महुआ मित्रा ने दिल्ली का सामाजिक ताना बना बिगाड़ने का काम किया है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की सांसद महुआ मित्रा पूर्व में भी भाजपा के विरूद्ध सुनियोजित झूठा प्रचार करती रही हैं और यह विडिओ रीपोस्ट करना भी उसी खेल का भाग भी हो सकता है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की सी.आर. पार्क से जिन मछली दुकानों को हटाने की बात उक्त विडिओ में करी गई है वह लगभग 6 दशक से डी.डी.ए. द्वारा आवंटित हैं, अधिकांश दुकानदार हिन्दू है, क्षेत्र की सामाजिक गतिविधियों से जुड़ें और मार्किट में सभी स्वच्छता नियमों का पालन करते हैं। क्षेत्र की जनता की मूल आवश्यकता हैं यह मछली की दुकानें और इनमे से कई दुकानदार तो राजनीतिक रूप से भाजपा से जुड़े हुए भी है।

सचदेवा ने कहा है की यदि महुआ मित्रा में एक सांसद के नाते गम्भीरता होती तो वह सोशल मीडिया पर रीपोस्ट कर सनसनी फैलाने की जगह इसकी शिकायत दिल्ली पुलिस से करतीं।

हम दिल्ली पुलिस से मांग करते हैं की ना सिर्फ यह समाज विरोधी विडिओ बनाने वाले युवकों को गिरफ्तार करे बल्कि सुश्री महुआ मित्रा के विडिओ की पुलिस रिपोर्ट ना कर सनसनीखेज रीपोस्ट करने की जांच करें।

क्षेत्र से विधायक शिखा रॉय ने कहा है की हमारा सी.आर. पार्क एक सामाजिक सौहार्द भरा क्षेत्र है जहां होने वाली दुर्गा पूजा में दिल्ली ही नही आसपास के शहरों से आये उत्तर भारतीय लोग बंगाल की सभ्यता का आनंद लेते हैं।

रॉय ने कहा की स्थानीय मछली मार्किट पूरी तरह कानून का पालन कर चल रही है और भाजपा के स्थानीय कार्यकर्ता मछली बाजार दुकानदारों के साथ सामाजिक रूप से खड़े हैं उन्हे डराने, धमकाने एवं हटाने को प्रयास सफल नही होने देंगे।

दिल्ली भाजपा के मीडिया प्रमुख प्रवीण शंकर कपूर ने पत्रकार सम्मेलन का संयोजन किया और कहा की दिल्ली में देश के सभी राज्यों के लोग रहते हैं और अपने रीति रिवाज़ सभ्यता का पालन करते हैं और भाजपा सरकार किसी को भी दिल्ली में बसे अन्य राज्यों के लोगों की सभ्यता का अपमान नही करने देगी। सी.आ. पार्क स्थित मछली बाजार के मछली दुकानदार दिल्ली में भी उतनी सुरक्षा से व्यापार करें जितना वह कोलकात्ता में करते हैं।

ताश में आया जादू' – ब्लैक बॉक्स और श्रेयस अय्यर की साझेदारी से लॉन्च हुआ नया प्रीमियम कार्ड डेक

मुख्य संवाददाता

मुंबई : ताश और गेमिंग काड्र्स की दुनिया में अग्रणी पार्कसंस कार्टामुंडी ने ब्लैक बॉक्स श्रेयस अय्यर मैजिक एडिशन डेक लॉन्च कर सोशल प्ले का नया रूप पेश किया है। यह सिर्फ ताश के पत्तों का डेक नहीं, बल्कि एक बारीकी से तैयार किया गया 3-इन-1 और अपनी तरह का पहला मल्टीपर्पज डेक है। ब्लैक बॉक्स और क्रिकेट जगत की सनसनी व जादू के शौकीन श्रेयस अय्यर के साथ रणनीतिक साझेदारी में बना यह डेक पारंपरिक कार्ड गेम्स की सीमाओं से परे है। चाहे आप कार्ड गेम खेलने के शौकीन हों या उभरते हुए मैजिशियन, यह डेक आपको पहले जैसी कभी न देखी गई मैजिक की दुनिया से रूबरू कराता है।

हर साल 10 लाख से अधिक डेक्स की बिक्री के साथ, ब्लैक बॉक्स भारत में ताश के पत्तों का एक अग्रणी ब्रांड बन चुका है। अब स्टार क्रिकेटर श्रेयस अय्यर के साथ इस साझेदारी ने कार्ड गेमिंग के अनुभव को एक नए स्तर पर पहुंचा दिया है, कलेक्टर्स, जादूगरों और गेमिंग के दीवानों के लिए यह एक बेहद रोमांचक और नया अनुभव है।

जिस तरह श्रेयस अय्यर मैदान पर अपने बेखौफ नेतृत्व और निर्णायक प्रदर्शन से छाए रहते हैं, उसी तरह अब वह मैजिक और कार्डिस्ट्री की दुनिया में भी वही जोश और नवाचार लेकर आए हैं। पिछले साल चार प्रमुख टूर्नामेंट जीतने के बाद और अब आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में भारत के अग्रणी रन स्कोरर के रूप में उभरते हुए, उनकी यात्रा को कौशल, रचनात्मकता और सीमाओं को लांघने के जुनून ने परिभाषित किया है। ब्लैक बॉक्स श्रेयस अय्यर मैजिक एडिशन डेक इसी जुनून का प्रतीक है, जो खेल के रोमांच को जादू और गेमप्ले की कलात्मकता के साथ मिलाकर फैंस को एक पूरी तरह से डूब जाने वाला अनुभव प्रदान करता है। पार्कसंस कार्टामुंडी, ताश की दुनिया का अग्रणी नाम, भारतीय बाजार में 55 वर्षों की समृद्ध विरासत के साथ सक्रिय है। इसके पोर्टफोलियो में 140 वर्षों की शिल्प परंपरा वाले प्रतिष्ठित बाइसिकल® ब्रांड सहित कई अंतरराष्ट्रीय ब्रांड शामिल हैं।

नया ब्लैक बॉक्स डेक एक कलेक्टर की असली धरोहर है। गोल्ड फॉयल से सजे कस्टम ट्रे-स्टाइल आउटर पैक में यह डेक प्रीमियम ब्लैक कोर कार्ड स्टॉक पर तैयार किया गया है, जिसमें जटिल उभरी हुई डिटेलिंग है। इस स्पेशल एडिशन को श्रेयस अय्यर के साथ मिलकर डिज़ाइन किया गया है, जिसमें कस्टम डिज़ाइन किए गए किंग्स, ऐस ऑफ स्पेड्स और जोकर काड्र्स शामिल हैं, जो इसे न सिर्फ मैजिक के लिए एक शानदार टूल बनाते हैं, बल्कि हर संग्रहकर्ता के लिए एक बेशकीमती धरोहर भी। अनुभव को और खास बनाने के लिए डेक में चार निंजा थ्रोइंग कार्ड, एक मैजिक ट्रिक बुकलेट, मैजिक ट्रिक्स और कार्ड थ्रोइंग के लिए वीडियो निर्देश और तीन पोर्टेबल मिनी स्टंप शामिल हैं - जो इसे सीखने और प्रयोग करने के उत्साही लोगों के लिए एक शानदार टूल बनाता है। यह डेक सीखने और प्रयोग करने के इच्छुक उत्साही लोगों के लिए एक संपूर्ण अनुभव देता है।

भारतीय क्रिकेटर श्रेयस अय्यर, जिन्हें राइज़ वर्ल्डवाइड द्वारा एक्सक्लूसिव रूप से मैनेज किया जाता है, ने लॉन्च के मौके पर कहा, ₹क्रिकेट हमेशा से मेरा जुनून रहा है, लेकिन कार्ड ट्रिक्स मेरे दिल के बेहद करीब हैं। पार्कसंस कार्टामुंडी के साथ इस मैजिक एडिशन डेक को पेश करना मेरे लिए बेहद खास है। यह मेरे उस पक्ष को सामने लाने का अवसर है, जिसे शायद बहुत से प्रशंसक नहीं जानते। मैं इस शौक को क्रिकेट की ऊर्जा और रोमांच के साथ जोड़ते हुए साझा करना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि यह डेक प्रशंसकों को भी अपनी रचनात्मकता को रोजमर्रा की ज़िंदगी में शामिल करने के लिए प्रेरित करेगा, चाहे वे मैदान पर हों या ताश की दुनिया में!"

"ब्लैक बॉक्स श्रेयस अय्यर मैजिक एडिशन डेक" जादू, कार्डिस्ट्री और सामाजिक खेल के तत्वों के माध्यम से उस जुनून को दर्शाता है, जो इसे एक अनूठा और बेहद आकर्षक अनुभव बना देता है।

पार्कसंस कार्टामुंडी प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ और एमडी कपिल केजरीवाल ने इस ऐतिहासिक लॉन्च पर अपने विचार साझा करते हुए कहा, "पार्कसंस कार्टामुंडी की समृद्ध विरासत ताश खेलने के आनंद के ज़रिए लोगों को जोड़ने की रही है। वहीं ब्लैक बॉक्स ने कार्ड गेम के अनुभव को नए सिरे से परिभाषित किया है। इस साझेदारी के ज़रिए हम उपभोक्ता अनुभव को बेहतर बनाने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ रहे हैं। यह सिर्फ एक नया कार्ड डेक पेश करने की बात नहीं है, बल्कि इंटरैक्टिव और सोशल एंटरटेनमेंट के एक नए युग की शुरुआत है। हम पार्कसंस कार्टामुंडी की गुणवत्ता और शिल्प परंपरा को ब्लैक बॉक्स की रचनात्मक ऊर्जा के साथ जोड़ रहे हैं, ताकि कार्ड गेम की संभावनाओं को नए मायने दिए जा सकें। इसके साथ ही, हमने इस डेक में श्रेयस अय्यर के जोशीले व्यक्तित्व को समाहित किया है, जो उनके जादू और परफॉर्मेंस के प्रति जुनून को कस्टम डिज़ाइन और इंटरैक्टिव एलिमेंट्स के ज़रिए सामने लाता है।" उन्होंने आगे कहा, "यह लॉन्च कार्ड एंटरटेनमेंट की सीमाओं को आगे बढ़ाने के प्रति हमारे जुनून का प्रमाण है। हम भारतीय उपभोक्ताओं के लिए ऐसे अनुभवों को रचने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो पहले कभी न देखे गए हों। हमारा लक्ष्य है कि भारत में प्लेयिंग कार्ड इंडस्ट्री को एक नए आयाम तक पहुंचाया जाए, ऐसा अनुभव जो न सिर्फ खुशी और आपसी जुड़ाव बढ़ाए, बल्कि हमें इस इंडस्ट्री के अग्रणी स्थान पर बनाए रखे।"

मीडिया, स्त्री और सनसनी: क्या हम न्याय कर पा रहे हैं?

"धोखे की खबरें बिकती हैं, लेकिन विश्वास की कहानियाँ दबा दी जाती हैं — क्या हम संतुलन भूल गए हैं?"

मीडिया में स्त्रियों की छवि और उससे जुड़ी सनसनीखेज रिपोर्टिंग ने आज गंभीर सवाल पैदा कर दिये है। कुछ घटनाओं में स्त्रियों द्वारा किए गए अपराधों को मीडिया बढ़ा-चढ़ाकर दिखाता है, जिससे पूरे स्त्री वर्ग की छवि पर नकारात्मक असर पड़ता है। समाज में धोखा और विश्वासघात जैसे मुद्दे दोनों ही लिंगों से जुड़े हैं, लेकिन जब स्त्री पर कोई आरोप लगता है तो मीडिया उसे 'विलेन' बना देता है, जबकि पुरुष अपराधों के लिए अक्सर सहानुभूति जुटाई जाती है। ऐसे समय पर मीडिया को संतुलन, गहराई और जिम्मेदारी के साथ रिपोर्टिंग करनी चाहिए, ना कि टीआरपी के लिए पूर्वग्रह फैलाने चाहिए। साथ ही, पाठकों और दर्शकों को भी समाचारों को विवेक के साथ ग्रहण करने की आवश्यकता है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

सूचना और संचार की इस तीव्र गति वाली दुनिया में मीडिया का प्रभाव जितना व्यापक हुआ है, उतना ही गहरा भी। आज किसी घटना की रिपोर्टिंग केवल सूचना देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक नैरेटिव, एक छवि और कभी-कभी एक पूर्वग्रह को भी जन्म देती है। जब स्त्री से जुड़ी घटनाओं की बात आती है, खासकर तब जब वह विवादास्पद हों—जैसे धोखाधड़ी, झूठे आरोप, या ब्लैकमेलिंग—तो मीडिया का रुख कहीं अधिक सनसनीखेज और पक्षपाती हो जाता है। यह चिंता का विषय है कि हम कब से घटनाओं की रिपोर्टिंग करने की बजाय, पूरे वर्ग को कटघरे में खड़ा करने लगे हैं।

स्त्री और संदिग्धता: नैरेटिव का निर्माण

पिछले कुछ वर्षों में हमने कई ऐसी घटनाएं देखीं जहाँ महिलाओं पर पुरुषों को झूठे मामलों में फँसाने के आरोप लगे। कुछ मामलों में ये आरोप सही भी साबित हुए। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या इन गिने-चुने मामलों के आधार पर ₹हर औरत भरोसे के लायक नहीं₹ जैसी सोच विकसित करना जायज है? क्या यह सही है कि मीडिया इन घटनाओं को इस तरह प्रस्तुत करे कि पूरा समाज स्त्रियों की नीयत पर शक करने लगे?

वास्तव में यह सोच एक लंबे समय से पनप रही उस मानसिकता का हिस्सा है जो स्त्री को या तो देवी के रूप में पूजती है या खलनायिका के रूप में ठुकराती है—बीच का कोई स्थान नहीं।

मीडिया की भाषा और हेडलाइंस का खेल

आप जब भी अखबार की सुर्खियाँ देखें या न्यूज़ चैनलों की हेडलाइन सुने, तो एक बात स्पष्ट नजर आती है—स्त्री से जुड़ी घटनाओं को ज्यादा उत्तेजक, भावनात्मक और आकर्षक तरीके से पेश किया जाता है। उदाहरण के लिए-₹प्रेमिका निकली सौतन की हत्यारिन !₹ ₹महिला टीचर ने छात्र से बनाए शारीरिक संबंध !₹ ₹बीवी ने पति को प्रेमी संग मिलकर मरवाया !₹ ऐसी खबरें समाज में एक खास सोच को मजबूत करती हैं कि स्त्रियां कपटी, चालाक और अवसरवादी होती हैं। जबकि हकीकत यह है कि पुरुषों द्वारा किए गए अपराधों को इतनी सनसनी के साथ नहीं दिखाया जाता। वहाँ "मानसिक तनाव", "पारिवारिक दबाव" या "सामाजिक अस्वीकृति" जैसे कारण खोज लिए जाते हैं।

'विक्टिम' या 'विलेन': स्त्री की दोहरी छवि

मीडिया अक्सर स्त्री को या तो पूरी तरह पीड़िता के रूप में दिखाता है, या फिर पूरी तरह अपराधिनी के रूप में। लेकिन हकीकत इससे कहीं अधिक जटिल है। हर महिला जो धोखा देती है, वह स्वाभाविक रूप से 'बुरी' नहीं होती, और हर महिला जो पीड़ित है, वह स्वाभाविक रूप से 'पवित्र' नहीं होती। इंसानी व्यवहार कई सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक कारकों से बनता है। जब मीडिया इन पहलुओं की उपेक्षा करके केवल एक सनसनीखेज चेहरा दिखाता है, तो वह सच्चाई को तोड़-मरोड़कर पेश करता है।

कुछ चर्चित उदाहरणों की भूमिका

हाल के वर्षों में कई ऐसे मामले सामने आए जिन्होंने इस विषय को और जटिल बना दिया। जैसे: फर्जी यौन उत्पीड़न के आरोप लगाकर ब्लैकमेलिंग का मामला महिला द्वारा पति को फँसाकर तलाक और संपत्ति हथियाने की कोशिश। सोशल मीडिया पर 'फेमिनिज़्म' का इस्तेमाल करके जनभावनाओं का दोहन। इन घटनाओं का मीडिया में खूब प्रचार हुआ, लेकिन इनसे जुड़ी कानूनी प्रक्रिया, जांच के निष्कर्ष, या महिला के पक्ष की गहराई से पड़ताल शायद ही कभी दिखाई गई।

क्या पुरुष वर्ग पूर्णतः निर्दोष है?

यह बात मानना भी गलत होगा कि पुरुष वर्ग सदैव पीड़ित होता है। सैकड़ों-हजारों महिलाएं आज भी घरेलू हिंसा, बलात्कार, यौन उत्पीड़न और मानसिक शोषण की शिकार हैं। हर साल महिला सुरक्षा से जुड़े आंकड़े भयावह तस्वीर पेश करते हैं। ऐसे में यदि कुछ मामलों में महिलाएं दोषी पाई जाती हैं, तो उससे पूरे स्त्री वर्ग को कठघरे में खड़ा कर देना न केवल अन्याय है, बल्कि सामाजिक संतुलन के लिए भी खतरनाक है।

मीडिया की भूमिका: जिम्मेदारी बनाम व्यवसाय

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है, लेकिन जब यह स्तंभ टीआरपी की दौड़ में नैतिकता भूल जाए, तो समाज की नींव डगमगाने लगती है। पत्रकारिता का काम सूचना देना है, विचार बनाना नहीं। लेकिन आज मीडिया अक्सर ₹मूड₹ बनाता है, ₹मत₹ गढ़ता है, और ₹फैसला₹ सुनाता है। यह प्रवृत्ति न्याय व्यवस्था से भी आगे निकलने का दावा करती है—जिसे हम 'मीडिया ट्रायल' कहते हैं।

सोशल मीडिया: आग में घी

जहाँ मुख्यधारा मीडिया की सीमाएं हैं, वहीं सोशल मीडिया ने तो हर किसी को जज बना दिया है। व्हाट्सएप फॉरवर्ड, ट्विटर ट्रेंड और इंस्टाग्राम रील्स—हर जगह स्त्री के चरित्र और नीयत पर सवाल उठाए जा रहे हैं। "हर औरत गोल्ड डिगर है", "औरतें सिर्फ फायदे के लिए प्यार करती हैं", जैसे जुमले सोशल मीडिया पर सामान्य हो चुके हैं। यह माहौल केवल स्त्रियों के लिए नहीं, बल्कि युवा पुरुषों के लिए भी हानिकारक है जो रिश्तों में भरोसे की जगह शक लेकर आते हैं।

न्याय की बुनियाद: व्यक्तिगत नहीं, संस्थागत सोच

हमारे समाज की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि हम एक घटना से पूरे वर्ग के लिए निष्कर्ष निकाल लेते हैं। किसी महिला ने धोखा दिया, इसका अर्थ यह नहीं कि हर महिला अविश्वसनीय है। उसी तरह एक पुरुष बलात्कारी निकला तो हर पुरुष को संदेह की नजर से नहीं देखा जा सकता। हमें घटना और व्यक्ति को उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में देखने की आदत डालनी होगी।

संतुलन की ओर एक आग्रह

आज जब मीडिया समाज की सोच को तय कर रहा है, तब पत्रकारों, संपादकों और न्यूज़ रूम्स की जिम्मेदारी कहीं अधिक है। उन्हें यह तय करना होगा कि वे 'सच दिखा रहे हैं' या 'सच बेच रहे हैं'। साथ ही, हमें—दर्शकों, पाठकों और नागरिकों को—भी यह जिम्मेदारी लेनी होगी कि हम हर खबर पर आँख मूँदकर विश्वास न करें। समाज तब ही संतुलित रहेगा जब हम स्त्री और पुरुष दोनों को इंसान समझें—गुणों, दोषों, भावनाओं और सीमाओं के साथ। मीडिया अगर इस संतुलन को नहीं समझेगा, तो वह सूचना का वाहक नहीं, बल्कि पूर्वग्रह का प्रसारक बन जाएगा।

विश्व कल्याण के पंथ प्रदर्शक भगवान महावीर स्वामी

भगवान महावीर स्वामी ने अहिंसा व सच्चाई की राह पर चलकर धर्म को दिशा दिखाई थी। और आज वर्तमान को उसी वर्धमान महावीर वीर अतिवीर सन्मति की आवश्यकता है। समाजिक दूरियों के बढ़ने के कारण झुठ फरेब लालच का बोलबाला हो रहा है।ऐसे समय में वीर प्रभु के उपदेशों व उनके बताए मार्ग पर हम सभी के लिए बहुउपयोगी है। जैन धर्म के 24 वें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल तेरस करीब ढाई हजार वर्ष पहले पिता सिध्दार्थ व माता त्रिशला के यह हुआ था। क्षत्रिय राजकुमार होते हुए भी आप ने हिंसा का साथ कभी भी नहीं दिया। वर्धमान महावीर ने 12 वर्ष तक मौन तपस्या की थी। उन्हें बहुत कठिनाइयों से केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने पांच मूलभूत सिद्धांतों का पालन किया। वह अहिंसा,सत्य, अपरिग्रह,अचोय (अस्तेय) और ब्रह्माचर्य से नाता जोड़े रखा। तभी वह जगत के पालनहार बन कर आप ने समन्वय भाव रखते हुए, सभी मूक व निर्मल पशु पक्षियों व मनुष्य को एक माला में पिरोकर जोड़ने का प्रयास किया। आपके त्याग संयम प्रेम और करुणा शील सदाचार ने जियो और जीने दो का संदेश दिया था। प्रभु महावीर जहां तपस्या करते थे , उस जगह गाय बकरी बंदर चिड़िया हाथी व हिसंक जीव साथ शेर आदि एकसाथ आते थे और प्रभु महावीर स्वामी के सामने बेठकर उनके चरणों में समर्पण भाव से बेठे रहते थे। उनकी अहिंसा और आध्यात्मिक स्वतंत्रता से ही विश्व-कल्याण के भाव जगत में आये । इसका मतलब भी यही होता है कि सभी जीवों पर दया भाव रखो। उन्हें भी जीने का अधिकार है। महावीर स्वामी और उनकी तपस्या का प्रतिफल है

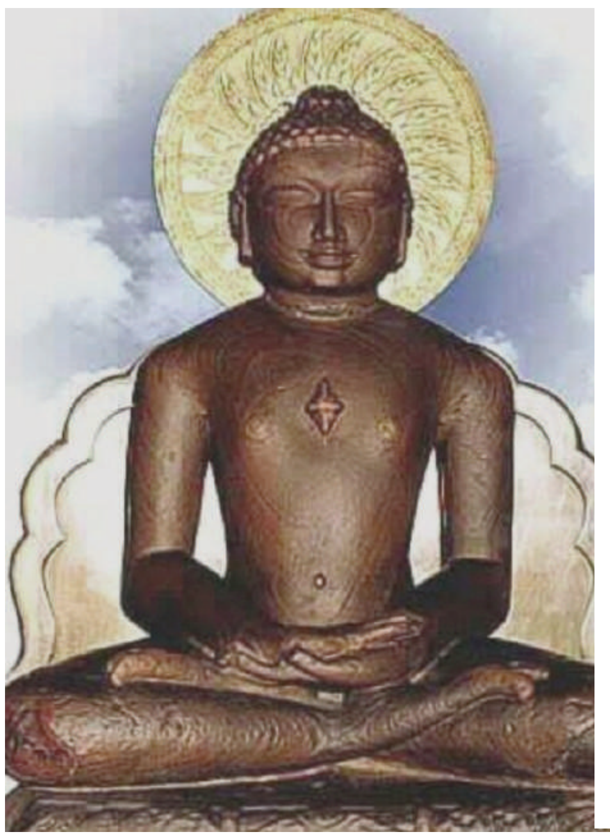

अहिंसा धर्म। जिस युग में हिंसा व पशु बलि, जात-पात का भेदभाव बढ़ रहा था, ऐसे समय में जैन धर्म के तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी विश्व कल्याण के पंथ प्रदर्शक बन अहिंसा परमो धर्म का दिव्य संदेश दिया। उन्होंने कहा था जियो और जीने दो हम सभी में जनकल्याण के भाव होना चाहिए। हमेशा से प्रेम व क्षमा के साथ रहते हुए , प्रभु महावीर स्वामी कहते थे कि हम सच्चे ह्रदय से गलतियों के लिए क्षमा करें तो वह हमें जगत में सम्मान दिलायेगा । मैत्री भाव जगत कल्याण के लिए बहुत जरूरी है। विचारों की हिंसा से बचें सच्चाई की राह पर मानव प्रेम के भाव जागृत करें। वीर शासन में महावीर स्वामी के भाव और दिव्य संदेश क्षमा और सहनशीलता रहना वर्तमान में बहुत जरूरी है। हम सभी निडर होकर अहिंसा व विश्व कल्याण के पंथ पर आगे बढ़े तो ही हमें जिनवाणी का मोल समझ में आयेगा । जैन धर्म व महावीर स्वामी के बताए हुए मार्ग पर चलने से ही जीवन में उज्जवलता के साथ वैचारिक मतभेद भी दूर होंगे।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग़ नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

हम दोनों की कहानी वक्त से भी खूबसूरत निकली। दसवीं सालगिरह मुबारक!

"₹जहाँ तुम हो, वहीं मेरा घर है। और अब ये घर 10 साल का हो गया है।"

शादी की दसवीं सालगिरह शुरू होने पर....

कुछ पुरानी तस्वीरें फिर से मुस्कुराईं,
वो पहली मुस्कान, वो हल्की सी शरमाहट,
जैसे वक्त की किताब फिर से पलट गई।

साल दर साल साथ चले,
कभी धूप में, कभी छांव तले,
कुछ खामोशियां थीं, कुछ हँसी के मेले,
कभी रूठना, कभी मनाना — सब रंग थे रिश्ते के इस खेल में।

पहली लड़ाई की बात याद है?
या वो पहली बार जब तुमने चाय बनाई थी?
आज भी उसी चाय की खुशबू
हर सुबह को खास बना जाती है।

इन सालों में हमने बहुत कुछ पाया,
कुछ खोया, कुछ सहेजा, कुछ संभाला,
पर सबसे कीमती तो ये साथ था —
जो हर मोड़ पर हमें एक-दूजे के और करीब लाता गया।

शादी की दसवीं सालगिरह शुरू होने पर,
मैं सिर्फ तुम्हारा ₹धन्यवाद₹ कहना चाहता हूँ —
कि तुमने हर तूफान में मेरा हाथ थामा,
और हर मुस्कान में मेरी आंखों में झांका।

आओ, इस नए दशक की शुरुआत करें,
फिर से एक वादा करें —
कि अगला हर साल,
प्यार में बीते, साथ में बीते, और यूँ ही खूबसूरत बीते।

--- डॉ. सत्यवान सौरभ

मोबाइल की कैद

मोबाइल ने छीन ली, हँसी-खुशी की बात।
घर के भीतर भी नहीं, दिल से कोई साथ।।

पिता लगे संदेश में, माँ का व्यस्त है फोन।
बच्चा बोला ध्यान दो, मैं भी हूँ अब कौन?

भाई-बहना पास हैं, फिर भी दूरी आज।
मोबाइल की कैद में, रिश्तों का है राज।।

बचपन भूला आँगना, खेल न छूता पाँव,
बच्चे उलझे गेम में, छूट गया अब गाँव।।

बातें हों ना चाय पर, न हो साथ-संगीत।
मोबाइल ने तोड़ दी, परिवारों की रीत।।

चलो करें अब ठान लें, थोड़ा दें आराम।
फोन नहीं, परिवार में, फिर से लाएँ काम।

रिश्तों की गर्मी गई, बातों की बरसात।
स्क्रीनें हट जाएँ जब, खिल उठे दिन-रात।

मिल बैठें सब एक संग, थी वो प्यारी चाल।
अब मोबाइल बाँटता, घर में केवल जाल।।

पहले थी चौपाल सी, घर की मीठी बात।
अब तो सब चुपचाप हैं, कहे किसे हालात।।

घर की वो रौनक गई, हँसी-ठिठोली साथ।
चुपचाप सब फोन में, रिश्ते हुए अनाथ।।

चलो करें शुरुआत अब, बदलें यह व्यवहार,
फिर से हँसे चमन सदा, जुड़े दिल-परिवार।

सांझ-सवेरे साथ में, हो फिर वो संवाद।
मोबाइल को दें जगह, पर न हो बर्बाद।।

-प्रियंका सौरभ

सिंधी दिवस 10 अप्रैल 2025 - सिंधी अंबाणी बोली....मिटिड़ी अबाणी बोली

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियां में भारत ही एक ऐसा अकेला देश है, जहां बहुत भारी तादाद में हर समाज भाषाओं उपभाषाओं,बोलियां में अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करता है। यह भाषाएं व बोलियां इतनी मीठी होती है कि हर भाषा को बोलने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है कि काश मैं यह भाषा बोल पाता। तमिल तेलुगू सिंधी संस्कृति बंगाली मराठी असमिया मारवाड़ी पंजाबी गुजराती सहित पूरे भारत में हजारों लाखों बोलियां है, जिनकी मिठास का अद्भुत आगाज़ होता है, परंतु हमारे संविधान निर्माता और बाद में संशोधन द्वारा भारत में संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को दर्ज किया गया है, इसमें से एक बहुत ही प्यारी मीठी बोली और भाषा सिंधी है, जिसे 10 अप्रैल 1967 से लागू की याद गया था और इसी दिन को सिंधी समाज हर वर्ष सिंधी भाषा दिवस के रूप में मनाता है बहुत कार्यक्रम किए जाते हैं, खुशियां मनाई जाती है। चूंकि सिंधी भाषा को 1967 में 21वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा आठवीं अनुसूची में 10 अप्रैल को ही लागू हुआ था इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जान कारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,हर समाज की मातृभाषा उसकी संस्कृति अभिव्यक्ति समाज और व्यक्तित्व का प्रति निधित्व करती है इसलिए आओ भाषा की मिठास को पहचाने।

साथियों बात अगर हम सिंधियत की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और सबसे महत्वपूर्ण सिंधी भाषा को बचाए रखने की करें तो, सिंधी समुदाय पूरी दुनियाँ में फैला हुआ है।आज सिंधी वैश्विक नागरिक बन चुके हैं। लेकिन, इससे एक नई चुनौती भी पैदा हुईहै ।सिंधियत की समृद्धसंस्कृति परंपराओं और सबसे महत्वपूर्ण सिंधी भाषा को बचाए रखना हम सभी के लिए चुनौती बन गया है। सिंधियत को बचाए रखने के लिए हमें हर सदस्य के सहयोग की जरूरत है। सिंधी भाषा को बढ़ावा देने और लोकप्रिय बनाने के लिए बहुत कुछ करना होगा, खासकर युवा पीढ़ी के बीच। हमें गैर सिंधी छात्रों के बीच भी सिंधी को बढ़ावा देने के लिए प्रयास करने होंगे। अगर जरूरत पड़े तो हमें सिंधी भाषा और संस्कृति में अध्ययन करने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देनी चाहिए।आज केवल सिंधी भाषा ही नहीं, अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रयोग के कारण सभी क्षेत्रीय भाषाएं खतरे में हैं। हमें यह सोचना होगा कि प्रौद्योगिकी किस प्रकार नई पीढ़ी तक पहुंचने तथा सिंधी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं एवं साहित्य को बढ़ावा देने में हमारी मदद कर सकती है। सिंधी भाषा दिवस 10 अप्रैल 2025 के अवसर पर हम सभी खुशियाँ मना रहे हैं, आइए हम सब अपनी भाषा को संरक्षित और बढ़ावा देने का संकल्प लें।

साथियों बात अगर हम सिंधी भाषा के संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने की करें तो, सिंधी भाषा को 1967 के 21 वें संशोधन अधिनियम द्वारा 8वीं अनुसूची में जोड़ा गया था आठवीं अनुसूची उन भाषाओं को सूचीबद्ध करती है जिन्हें विकसित करने कीजिम्मेदारी भारत सरकार के पास है ।संविधान की आठवीं अनुसूची में मूल रूप से 14 भाषाओं को शामिल किया गया था। 1992 में अधिनियमित 71वें संशोधन में तीन औरभाषाएं जैसे कोंकणी, मैतेई (मणिपुरी) और नेपाली शामिल की गई थीं। 92वें संशोधन ने 2003 में बोडो, डोगरी, संथाली और मैथली को जोड़ा, जिससे भाषाओं की कुल संख्या 22 हो गई। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। भारतीय संविधान का भाग अनुच्छेद 343 से 351 तक भारत की आधिकारिक भाषाओं से संबंधित है। मूल रूप से, केवल 14 भाषाओं का उल्लेख किया गया था और बाद में, कई संशोधनों के बाद, अन्य भाषाओं कोजोड़ा गया था। भारत के संविधान में और संशोधन करने के लिए एक अधिनियम। उद्धरण 21वाँ संशोधन, प्रादेशिक सीमा भारत द्वारा पारित, राज्य सभा उत्तीर्ण 4 अप्रैल 1967 द्वारा पारित लोकसभा उत्तीर्ण,7 अप्रैल 1967 को सहमति दी गई व 10 अप्रैल 1967 शुरू किया।

साथियों बात अगर हम सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ने के कारणों की करें तो,संविधान (इक्कीसवां संशोधन) अधिनियम,1967, संविधान (इक्कीसवां संशोधन) विधेयक,1966 (1966 का विधेयक संख्या ग्ग्प्ट) से जुड़े उद्देश्यों और कारणों का विवरण, जिसे संविधान (इक्कीसवां संशोधन) अधिनियम,1967 के रूप में अधिनियमित किया गया था। वस्तुओं और कारणों का विवरण सिंधी भाषी लोगों की ओर से सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की लगातार मांग की जाती रही थी। हालाँकि वर्तमान में सिंधी एक सुपरिभाषित क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा नहीं है,यह अविभाजित भारत के एक प्रांत की भाषा हुआ करती थी और, विभाजन के बिना, वैसे ही बनी रहती। भाषाई अल्पसंख्यक आयुक्त ने सिंधी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की भी सिफारिश की थी। 4 नवंबर, 1966 को यह घोषणा की गई कि सरकार ने सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने का निर्णय लिया है। विधेयक इस निर्णय को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। ऐसा उसमें देख में कहा गया।

साथियों बात अगर हम सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में जोड़ने की प्रक्रिया पूरी करने की करें तो, इसे तत्कालीन गृहमंत्री यशवंतराव चव्हाण ने पेश किया था और आठवीं अनुसूची में संशोधन करने की मांग की थी। संविधान में सिंधी को अनुसूची में सूचीबद्ध भाषाओं में से एक के रूप में शामिल करने के लिए। बिल के साथ संलग्न उद्देश्यों और कारणों के विवरण का पूरा पाठ नीचे दिया गया है ।भाषाईअल्पसंख्यक आयुक्त ने सिंधी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की भी सिफारिश की थी ।विधेयक इस निर्णय को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। वाईबी चव्हाण संविधान (बाईसवां संशोधन) विधेयक, 1966। विधेयक पर 4 अप्रैल 1967 को राज्य सभा द्वारा विचार किया गया और उसी दिन मूल रूप में पारित कर दिया गया। विधेयक, जैसा कि राज्य सभा द्वारा पारित किया गया था, पर 7 अप्रैल 1967को लोकसभा द्वारा विचार किया गया और पारित किया गया। विधेयक को 10 अप्रैल 1967 को तत्कालीन राष्ट्रपति जाकिर हुसैन से सहमति मिली। इसे भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया गया और पारित किया गया। उसी तिथि से लागू हुआ।

साथियों बात अगर हम सिंधी भाषा के 10 रोचक तथ्यों की करें तो, सिंधी भाषा अखंड भारत की प्राचीन भाषा है। यह मूलतः सिंध प्रांत की भाषा है। इस भाषा का प्राचीन इतिहास रहा है। भारत और अब पड़ोसी मुल्क में इस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक है।

सिन्धी भाषा के संबंध में 10 रोचक तथ्य। (1) सिंधी भाषा द्रविड़ भाषाओं की ग्रुप की भाषा है। सिंधी भाषा भारतीय आर्य भाषाओं के पश्चिमोत्तर समूह की भाषा है। (2) सिंधी भाषा की उत्पत्ति वेदों के लेखन या सम्भवतः उससे भी पहले सिन्ध क्षेत्र में बोली जाने वाली भारतीय-आर्य बोली या प्राकृत भाषा से हुई है। प्राचीन सिंधी भाषा में संस्कृत और प्राचीक ने शब्द बहुतायत होते थे।(3) प्राकृत परिवार की अन्य भाषाओं की तरह सिंधी भी विकास के प्राचीन भारतीय - आर्य (संस्कृत) व मध्य भार तीय-आर्य (पालि, द्वितीयक प्राकृत तथा अपभ्रंश) के दौर से गुजरक एक परिपक्व भाषा बनी। संस्कृत और प्राकृत सिन्धी जबान की बुनियाद रही हैं। (5) भाषा का विकृतिकरण तब प्रारंभ हुआ जब बाहरी लोगों का आक्रमण बढ़ा। लगातार तुर्क, ईरान और अरब के आक्रमणों के चलते इस भाषा की लिपि भी बदली और इसमें अरबी एवं फारसी शब्दों की संख्या भी बढ़ती गई। (6) सिंधी भाषा मुख्यतः दो लिपियों में लिखी जाती है, अरबी-सिंधी लिपि तथा देवनागरी- सिंधी लिपि। परंतु इसकी मूली लिपि सिंधी ही है, जिसकी उत्पत्ति आद्य-नागरी, ब्राह्मी और सिंधु घाटी लिपियों से हुई है। (7) जब से भारत का बंटवारा हुआ है सिंध प्रांत ही नहीं पाकिस्तान के हर प्रांत पर ऊर्दू भाषा और अरबी लिपि को थोपा गया जिसके चलते वहां की मूल भाषा अब लुप्त होने की स्थिति में हैं। पाकिस्तान की चाहें सिंधी भाषा हो, पंजाबी हो या पख्तून। सभी भाषाएं अब पहले जैसी नहीं रही, उनमें फारसी और अरबी के शब्दों की भारमार हो चली है। बंटवारे ने जब इंसानी बस्तियों को अपनी जड़ों से बेदखल किया, तो इसमें नदी, नाले, इमारतें और दरख्त तो वहीं रह गए, मगर जबान इंसान के साथ साथ चली आई तभी आज भारत में सिंधी बंगाली और पंजाबी बच गई। (8) कहते हैं कि सिंध भाषा का जुड़ाव भी महाभारत काल के सिंधु देश और सिंधु घाटी की हड़प्पा और मोहनजोदड़ो संस्कृति से रहा है। सिन्धु घाटी सभ्यता की भाषा द्रविड़ पूर्व (प्रोटो द्रविड़ीयन) भाषा थी। भाषा को लिपियों में लिखने का प्रचलन भारत में ही शुरू हुआ। प्राचीनकाल में ब्राह्मी लिपि और देवनागरी लिपि का प्रचलन था। इसमें ब्रह्मी लिपि इस क्षेत्र की मुख्य लिपि थी।(9) सिंधी भाषा अरबी लिपि स्टाइल से यानि दाएं से बाएं लिखी जाती है। इसमें 52 अक्षर होते हैं। जिसमें 34 अक्षर फारसी भाषा के हैं और 18 नए अक्षर है। अरबी -सिंधी लिपि- 52 वर्ण (अरबी के 28 वर्ण, फारसी के 3 वर्ण), देवनागरी लिपि- हिंदी वर्णमाला से देवनागरी सिंधी वर्णमाला में अधिक वर्ण- ख, ग, ज, फ, ग, ज, ड, ब। गुजराती लिपि- गुजराती लिपि में सिंधी भाषा लिखने की परंपरा पिछली सदी से ही दिखाई देती है। सिंध में थरपारकर ज़ल्हि के लोग इस लिपि का अधिक प्रयोग करते हैं। (10) सिंधी की प्रमुख बोलियों में सिरा इकी, विचोली, लाड़ी, लासी, थरेली या धतकी, कच्छी प्रमुख है। 'उ' से समाप्त होने वाले शब्द सिंधी भाषा में प्राचीन प्राकृत मूल से आए हैं। सिंधी भाषा ने कई प्राचीन शब्द और व्याकरण स्वरूपों को सुरक्षित रखा है, जैसे झुरूया से झुरू (प्राचीन), वैदिक संस्कृत के युति से जुई स्थान तथा प्राकृत वुथ्या से वुथ्थो बारिश हुई जैसे शब्द हैं।

साथियों बात अगर हम मातृभाषा के महत्व की करें तो परिवार के सदस्य मातृभाषा का प्रयोग करते हैं क्योंकि वे अपनी मातृभाषा को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग मानते हैं। भाषा उनके लिए संस्कृति, अभिव्यक्ति, समाज, और व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है। वे अपनी मातृभाषा को अपने बच्चों और पीढ़ी से आगे ले जाना चाहते हैं ताकि वे भी अपनी संस्कृति,अभिव्यक्ति समाज, और व्यक्तित्व का प्रति निधित्व कर सकें। भाषा मधुर होने के लिए, उसे सही ढंग से बोलना, सुनना, और लिखना आवश्यक होता है। एक व्यक्ति की भाषा मधुर होती है जब वह उस भाषा के व्याकरण, शब्दावली, वाक्य रचना, और वाक्य विन्यास के नियमों का पूरी तरह से पालन करता है। भाषा का उच्चारण और विभिन्न शब्दों का सही उपयोग भी मधुरता में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, भाषा मधुर होने के लिए, व्यक्ति को भाषा के संचार में सक्षम होना आवश्यक होता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भाषाओं की मिठास -सिंधी भाषा दिवस 10 अप्रैल 2024 पर विशेष। सिंधी भाषा को 1967 के 21 वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा, आठवीं अनुसूची में 10 अप्रैल 1967 को जोड़ा गया था। हर समाज की मातृभाषा अपनी संस्कृति अभिव्यक्ति, समाज और व्यक्ति त्व का प्रतिनिधित्व करती है।

साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस? गर्मियों में टायरों के लिए कौन है बेस्ट

गर्मियों में टायरों के लिए कौन-सी हवा का इस्तेमाल करना चाहिए यह एक जरूरी सवाल है जो बहुत से वाहन मालिकों के दिमाग में आता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आपको अपनी गाड़ी के टायर में साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस में से किसे भरवाना चाहिए। दोनों में से किसे भरवाना सबसे बेहतर रहेगा।

नई दिल्ली। गर्मियों का मौसम आते ही तेज धूप, गर्म हवाएं चलने के साथ ही सड़कें भी गर्म हो जाती है। सड़कों के गर्म होना वाहनों के लिए कई चुनौतियां आती है। इनमें से एक चुनौती है टायरों का सही से रखरखाव करना। टायरों में हवा का सही दबाव बनाए रखने से न केवल गाड़ी की परफॉर्मेंस बनी रहती है, बल्कि ज्यादा माइलेज मिलने के साथ ही आपकी सुरक्षा भी बनी रहती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि गर्मी के मौसम में टायरों के लिए साधारण हवा और नाइट्रोजन गैस में से कौन बेहतर होती है और दोनों में से कौन सा ऑप्शन आपके लिए सबसे अच्छा हो सकता है।

साधारण हवा

इसे आमतौर पर टायरों में भरते हैं। इसमें करीब 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन और 1% दूसरी गैसें होती है। यह आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाती है और बहुत कम कीमत में टायरों में भरी जा सकती है। गर्मी में इसका टायरों में इस्तेमाल करने पर कुछ नुकसान देखने के लिए मिल सकते हैं। दरअसल, गर्मी के कारण टायरों के अंदर तापमान बढ़ता है, जिससे हवा का दबाव भी बढ़ सकता है। जिसका सीधा असर टायरों पर पड़ता है और टायर को नुकसान भी पहुच सकता है। वहीं, नहीं के कारण टायर के रिम में जंग लगने की संभावना भी रहती है।

नाइट्रोजन गैस

पिछले कुछ वर्षों से इसे टायरों के लिए बेहतर ऑप्शन के रूप में बताया जा रहा है। इसमें नमी और ऑक्सीजन की मात्रा न के बराबर होती है। गर्मियों में इसका इस्तेमाल करने का यह फायदा मिलता है कि यह तापमान के उतार-चढ़ाव के साथ फैलती या सिकुड़ती है। इससे टायरों में दबाव स्थिर रहता है, जिससे टायर की उम्र बढ़ती है और ड्राइविंग सुरक्षित रहती है। नाइट्रोजन रबर को ऑक्सीजन से बचाने का काम करने के साथ ही रिम पर जंग लगने की समस्या को भी कम करती है। हालांकि, इसे भरवाने की सुविधा हर जगह पर नहीं होती है और इसकी कीमत भी साधारण हवा से ज्यादा होती है।

गर्मियों के लिए कौन बेहतर?

गर्मियों में टायरों का परफॉर्मेंस कई चीजों पर निर्भर करता है, जिसमें मौसम की तीव्रता, सड़क की स्थिति और ड्राइविंग आदतें शामिल है। साधारण हवा रोजमर्रा इस्तेमाल के लिए पर्याप्त है, खासकर उन लोगों के लिए जो नियमित रूप से टायरों के दबाव की जांच करते हैं। अगर आप लंबी दूरी का सफर करते हैं या गर्मी में टायरों की सुरक्षा और स्थिरता को प्राथमिकता देना चाहते हैं, तो नाइट्रोजन गैस आपके लिए एक बेहतर ऑप्शन हो सकता है। यह फ्यूल की खपत को कम कर सकता है, क्योंकि एयर प्रेशर स्थिर रहता है, तो घर्षण सही रहता है।

भारत में क्यों बढ़ता जा रहा एसयूवी का क्रेज, बड़ी गाड़ियों की सेल को देखकर रह जाएंगे दंग

परिवहन विशेष न्यूज

SUV Trend in India हाल ही में मार्च 2025 की बेस्ट सेलिंग कारों की लिस्ट आई है जिसे देखकर कहा जा सकता है कि भारत में SUV की डिमांड तेजी से बढ़ रही है। Hyundai Creta Tata Punch जैसी गाड़ियों की टॉप पोजीशन में है जो दिखाता है कि लोग अब स्टाइल सेफ्टी और कम्फर्ट को माइलेज से ज्यादा प्राथमिकता दे रहे हैं।

नई दिल्ली। अगर आप यह सोच रहे हैं कि भारत में अभी लोगों में छोटी और माइलेज वाली कारों की मांग सबसे ज्यादा है। आपको अपनी इस सोच को अब बदल लेना चाहिए। जल्द ही मार्च 2025 की टॉप 10 बेस्ट सेलिंग कारों की लिस्ट आई है। जिसे देखकर साफ समझ आता है कि जहां पर भारतीय बाजार में हैचबैक सेगमेंट का राज रहता था, उसकी जगह अब SUV सेगमेंट ने ले ली है।

मार्च 2025 की टॉप 10 बेस्ट सेलिंग कार

मार्ट 2025 में हुई गाड़ियों की बिक्री के मुताबिक, Hyundai Creta के मॉडल्स की सबसे ज्यादा 18,059 यूनिट्स बिक्री हुई। इसके साथ ही इसने नंबर 1 पोजिशन हासिल की है। इसके बाद दूसरे नंबर 17,746 यूनिट्स की बिक्री के साथ Maruti Swift और तीसरे नंबर पर 17,714 यूनिट्स की बिक्री के साथ Tata Punch है। जहां पर टॉप पर हैचबैक कायम रहती थी, उसकी जगह अब SUV ले रही है। तीसरे नंबर Punch के आना अपने आप इस का बात संकेत है कि SUV जैसी गाड़ियों की डिमांड अब छोटे शहरों में भी तेजी से बढ़ रही है।

हमारी इस लिस्ट में टॉप 10 में से 6 गाड़ियां SUV कैटेगरी की हैं, जो Creta, Punch, Ertiga, Brezza, Nexon और Scorpio है। यह आंकड़ा बताता है कि लोगों में SUV का क्रेज किस तरह से बढ़ता जा रहा है।

SUV की बढ़ती मांग के पीछे की वजहें

ग्राउंड क्लीयरेंस और राइड क्वालिटीः भारत में जिस तरह सड़कों का हाल है उसे देखते हुए SUV का ऊंचा ग्राउंड क्लीयरेंस काफी उपयोगी साबित होता है। इसमें ज्यादा ग्राउंड क्लीयरेंस मिलने की वजह से यह खराब रास्तों पर भी आसानी से चल सकती है।

डिजाइन और रोड प्रेसेंसः लोग अपनी गाड़ी दिखाकर अपना भौकाल बनाने में रहते है। SUV का लुक बोल्ड और मस्क्युलर होता है, जिसकी वजह से लोग इसकी तरफ ज्यादा आकर्षित होते हैं।

सेफ्टी फीचर्सः SUV में पहले से ज्यादा सेफ्टी फीचर्स मिलने लगे हैं। इसमें अब ज्यादा एयरबैग, बेहतर बॉडी स्ट्रक्चर और एडवांस सेफ्टी फीचर्स दिए जाते हैं। जिसकी वजह से इसे खरीदने वाले भी प्राथमिकता दे रहे हैं।

ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन और टेक्नोलॉजीः हाल के समय में आने वाली SUV में कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी, टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट, सनरूफ जैसे फीचर्स दिए जाते हैं, जो इसे लग्जरी बनाते हैं।

क्या छोटी कारों का जमाना खत्म हो रहा है?

हमारी इस लिस्ट में Swift, Wagon R और Dzire जैसी कारें अब भी टॉप 10 में बनी हुई हैं, लेकिन SUV सेगमेंट की तरफ लोगों का तेजी से शिफ्ट होना यह संकेत देता है कि भारतीय कस्टमर अब कम दाम और ज्यादा माइलेज की सोच से आगे बढ़कर स्टाइल, सेफ्टी और स्पेस को ज्यादा प्राथमिकता दे रहे हैं।

होण्डा की प्रीमियम मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट, सबसे ज्यादा हॉर्नेट पर छूट

मार्च 2025 में Honda की प्रीमियम मोटरसाइकिलों पर बंपर डिस्काउंट दिया जा रहा है। कंपनी अपनी कुछ चुनिंदा बाइक के मॉडल पर यह छूट दे रही है। कंपनी की तरफ मोटरसाइकिलों पर दी जा रही छूट में 2025 CB350 Hornet 2.0 और NX200 शामिल है। इन मोटरसाइकिल को आप होंडा की RedWing डीलरशिप से खरीद सकते हैं। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। Honda अपनी प्रीमियम मोटरसाइकिल पर जबरदस्त डिस्काउंट दे रही है। कंपनी अपनी कुछ चुनिंदा बाइक मॉडलों पर ही डिस्काउंट दे रही है। यह छूट केवल उन मोटरसाइकिल पर मिल रही है, जो साल 2024 में बनाई गई है। इसके अलावा, इनपर कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी दिया जा रहा है। इन बाइक्स को होंडा के बिगविंग डीलरशिप नेटवर्क के जरिए खरीदी जा सकती है।

कौन-सी मोटरसाइकिल ऑफर में शामिल?

होंडा बिगविंग नेटवर्क के तहत कई मोटरसाइकिल को बेचा जाता है, लेकिन इस स्पेशल ऑफर में कुछ बाइक को शामिल नहीं किया गया है। इसमें हाल ही में लॉन्च हुई CB200X और Hornet 2.0 पर कोई डिस्काउंट नहीं मिल रहा है। इन दोनों को ही बिगविंग नेटवर्क के जरिए बेचा जाता है। कंपनी की तरफ से दी जा रही छूट में पिछले साल की बची हुई गाड़ियों को शामिल किया गया है।

हाल में होंडा के बिगविंग डीलरशिप पर कुल 14 मॉडल मिलते हैं, जो Hornet 2.0, CB200X, NX200, CB300F, CB300F Flex-Fuel, CB300R, H'ness CB350, CB350, CB350RS, NX500, Transalp, Goldwing, CBR650R, और CB650R है।

कितना मिल रहा डिस्काउंट?

होंडा अपनी प्रीमियम मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। इस डिस्काउंट ऑफर में 2024 में बनी मोटरसाइकिल के कुछ चुनिंदा मॉडल को शामिल किया गया है। इन मॉडलों पर 10,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इसके साथ ही 5,000 रुपये तक का कॉर्पोरेट डिस्काउंट भी मिल सकता है।

इनको मिला हाल में अपडेट्स

2025 CB350: हाल ही में होंडा ने 2025 CB350 रेंज को अपडेट किया है। इसमें OBD2B कंप्लायंट फीचर को शामिल किया गया है और नए कलर ऑप्शन भी दिए गए हैं। इसके H'ness CB350 को चार नए कलर ऑप्शन के साथ आती है, जो Athletic Blue Metallic, Pearl Deep Ground Grey, Pearl Igneous Black, और Rebel Red Metallic है। इसी तरह ही CB350RS और CB350 को भी नए कलर और ग्राफिक दिए गए हैं।

2025 Hornet 2.0: इसे भी हाल ही में अपडेट किया गया है। इसे नए फीचर्स, नए कलर और OBD2B कंप्लायंटनेस के साथ लेकर आया गया है। इसके नए अपडेट मॉडल की एक्स-शोरूम कीमत 1,56,953 रुपये है, जो पहले से 13,502 रुपये ज्यादा महंगी है।

NX200: होंडा ने हाल ही में NX200 को भी लॉन्च किया है, जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 1,68,499 रुपये है। यह दोनों RedWing और BigWing डीलरशिप में मिलेगी।

लॉन्च से पहले नजर आई फॉक्सवगन गोल्फ GTI, कितना दमदार होगा इंजन और कैसे होंगे फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मनी की वाहन निर्माता Volkswagen की ओर से जल्द ही भारतीय बाजार में नई गाड़ी को लॉन्च किया जाएगा। लॉन्च से पहले Golf GTI को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। इसे कब तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन और फीचर्स इसमें दिए जाएंगे। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में फॉक्सवैगन की ओर से जल्द ही नई कारों को लॉन्च किया जाएगा। इसमें से प्रीमियम हैचबैक कार के तौर पर Volkswagen Golf GTI को भी लाने की तैयारी की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस गाड़ी की क्या जानकारी सामने आई है। कब तक इसे लॉन्च (Volkswagen Golf GTI India) किया जा सकता है। कितना दमदार इंजन इसमें मिल सकता है। किस तरह के फीचर्स दिए जा सकते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Volkswagen Golf GTI

भारत आएगी

फॉक्सवैगन की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर Golf GTI को लॉन्च किया जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लॉन्च से पहले इस गाड़ी को भारतीय सड़कों पर देखा गया है। इस दौरान गाड़ी के एक्सटीरियर के कुछ फीचर्स की जानकारी सामने आई है।

क्या मिली जानकारी

रिपोर्ट्स के मुताबिक इस प्रीमियम स्पोर्टी हैचबैक कार में चारों पहियों में डिस्क ब्रेक, 5स्पोक अलॉय व्हील्स, रेड ब्रेक कैलिपर्स, एलईडी टेल लाइट्स, जीटीआई की बैजिंग के साथ आएगी। इसके अलावा इस गाड़ी को सामान्य गोल्फ के मुकाबले कम ग्राउंड क्लियरेंस के साथ लाया जाएगा।

कैसे होंगे फीचर्स

कंपनी की ओर से इस गाड़ी में एलईडी मैट्रिक्स हेडलाइट्स, कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, हनीकॉम्ब मैश पैटर्न फ्रंट बंपर ग्रिल, ड्यूल एग्जॉस्ट को दिया जाएगा। इंटीरियर में इस कार में ब्लैक के साथ रेड थीम को दिया जा सकता है। इसके अलावा इसमें एल्यूमिनियम पैडल, 12.9 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, ऑटो एसी, वायरलेस फोन चार्जर, एंबिएंट लाइट्स, छह एयरबैग, ईएससी, ADAS जैसे कई फीचर्स को दिया जाएगा।

कितना दमदार इंजन

Volkswagen Golf GTI में कंपनी की ओर से दो लीटर की क्षमता का टर्बो पेट्रोल इंजन दिया जाएगा। इस इंजन से कार को 265 पीएस की पावर और 370 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके साथ 7स्पीड डीसीटी ट्रांसमिशन को दिया जाएगा। यह कार इतनी तेज होगी कि इसे 0 से 100 किलोमीटर की स्पीड पकड़ने में सिर्फ 5.9 सेकेंड का समय लगेगा।

कब तक होगी लॉन्च

कंपनी की ओर से इसके लॉन्च की तारीख को लेकर अभी तक आधिकारिक जानकारी नहीं है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इस गाड़ी को अगले दो से तीन महीनों के दौरान लॉन्च किया जा सकता है। इसे सीबीयू के तौर पर लाया जाएगा, जिस कारण इसकी सीमित यूनिट्स की ही बिक्री भारतीय बाजार में की जाएगी।

टेस्ला कर सकती है किन दो कारों के साथ भारत में एंट्री, जानें कैसे होंगे फीचर्स और कितनी होगी रेंज

अमेरिका की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही अपनी कारों की बिक्री को शुरू किया जा सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारत में लाया जा सकता है। यह कौन सी कारें हो सकती हैं और इनमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाएगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। अमेरिका की प्रमुख इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री कर सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से किन कारों को भारतीय बाजार में सबसे पहले लाया जा सकता है। इनमें किस तरह के फीचर्स को दिया जाएगा। कितनी दमदार बैटरी और रेंज के साथ इन कारों को ऑफर किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत में एंट्री की तैयारी में Tesla

अमेरिकी वाहन निर्माता Tesla जल्द ही भारत में एंट्री करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी अपना पहला शोरूम भी मुंबई के BKC में खोल सकती है।

किन कारों को करेगी ऑफर

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से सबसे पहले दो कारों को भारतीय बाजार में ऑफर किया जाएगा। जिसके कुछ समय बाद पोर्टफोलियो की अन्य कारों को भी लाया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक जिन कारों को सबसे पहले लाया जा सकता है उनमें Model 3 और Model Y शामिल हैं।

Model 3 में कैसे हैं फीचर्स

टेस्ला की ओर से एंट्री लेवल कार के तौर पर Model 3 को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी में तीन वेरिएंट का विकल्प दिया जाता है, जिसमें लॉन्ग रेंज रियर व्हील ड्राइव, लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव और परफॉर्मेंस शामिल हैं। इस गाड़ी में 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, आठ इंच टचस्क्रीन को रियर में दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसे 557 से 584 किलोमीटर तक की रेंज मिलती है। 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में इसे 2.9 सेकेंड से लेकर 4.9 सेकेंड तक का समय लगता है। इसमें लगी मोटर से 504 बीएचपी की पावर मिलती है।

कैसी है Model Y

Tesla की Model Y में रियर व्हील ड्राइव और लॉन्ग रेंज ऑल व्हील ड्राइव के विकल्प मिलते हैं। गाड़ी को सिंगल चार्ज में 719 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। गाड़ी में लगी मोटर से इसे 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में 5.9 सेकेंड लगते हैं। लेकिन इसके ऑल व्हील ड्राइव वेरिएंट को 4.3 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाया जा सकता है। फीचर्स के तौर पर इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी टेल लाइट्स, 15.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, रियर पैसेंजर्स के लिए आठ इंच स्क्रीन जैसे फीचर्स को दिया जाता है।

किनसे होगा मुकाबला

भारतीय बाजार में टेस्ला की कारों को Mahindra, Tata, MG, Kia, Hyundai जैसी कंपनियों के साथ ही Vinfast से भी कड़ी चुनौती मिलेगी।

दौलत नहीं परिश्रम से मिलती है सुख की राह

विजय गर्ग

दरअसल, यहां डॉक्टरों की बढ़ती भीड़ चेता भी रही है और डरा भी रही है। आज से बीस-तीस साल पहले जहां ढूंढ़े से कोई डॉक्टर मिलता था, आज वहां भीड़ है। मेरा अंतर्मन कहता है कि हम सुख की तलाश 'दौलत' में करते-करते सबसे बड़े जीवन-मूल्य 'परिश्रम' को भूल बैठे हैं। जबकि यह एक हकीकत है कि पसीने से महकते किसान, जवान और श्रमिक कोई व्यायाम करने को नहीं कहता।

बचपन में किताबों में पढ़ा था— 'इफ़ वेल्थ इस लॉस्ट, नथिंग इज़ लॉस्ट; हेल्थ इज़ लॉस्ट, समथिंग इज लॉस्ट, करैक्टर इज़ लॉस्ट, एवेरीथिंग इज़ लॉस्ट', लेकिन विडंबना देखिए कि आज तो समाज में बिल्कुल उल्टा ही देखने को मिल रहा है। चरित्र को तो जैसे हमने अंतिम मानकर भुला ही दिया है और पैसा सर्वोपरि हो गया है। इसका परिणाम धीरे-धीरे हमारे सामने आ रहा है। जिसके चलते समाज में जीवन मूल्यों का लगातार पराभव देखने में आ रहा है।

यही वजह है कि समृद्धि व संपन्नता के बावजूद हमारी सोच सकारात्मक नहीं रही। जिसके चलते हम तमाम तरह के मनोकायिक रोगों के शिकार हो रहे हैं। तरह-तरह के रोग हमारे शारीरिक श्रम करने से बढ़ने लगे हैं। जिसकी वजह से आज महानगर से लेकर नगरों और कस्बों से लेकर गांवों तक आज हमें 'डाक्टर्स ही डाक्टर्स' बड़े-बड़े हॉस्पिटल और नर्सिंग होम मिलेंगे। कैंसर, लीवर, गुर्दे, टीबी, हार्ट और मूत्र संबंधी रोगों के इलाज के बड़े-बड़े होर्डिंग्ज़ दिखाई देंगे। जाहिर है रोग बढ़ेंगे तो रोग उपचार के कारोबार भी बढ़ेंगे।

दरअसल, यहां डॉक्टरों की बढ़ती भीड़ चेता भी रही है और डरा भी रही है। आज से बीस-तीस साल पहले जहां ढूंढ़े से कोई डॉक्टर मिलता था, आज वहां भीड़ है। मेरा अंतर्मन कहता है कि हम सुख की तलाश 'दौलत' में करते-करते सबसे बड़े जीवन-मूल्य 'परिश्रम' को भूल बैठे हैं। जबकि यह एक हकीकत है कि पसीने से महकते किसान, जवान और श्रमिक कोई व्यायाम करने को नहीं कहता। उनका श्रमयुक्त जीवन अपने आप में व्यायाम है। वे स्वस्थ भी रहते हैं। यहां तक कि फिट सैनिक को जवान की संज्ञा दी जाती है। जवान यानी हमेशा फिट रहने वाला। आज बेचैन अंतर्मन को एक बेहद सार्थक और मार्मिक बोधकथा पढ़ने को मिली है, जो हमारे कई प्रश्नों के उत्तर दे देती है। आप भी इस प्यारी सी कथा को पढ़िए :-

'पुराने समय में एक राजा था। राजा के पास सभी सुख-सुविधाएं और असंख्य सेवक-सेविकाएं थे, जो हर समय उसकी सेवा को उपलब्ध रहते थे। लेकिन उसके जीवन में श्रम की कोई जगह न थी। राजा को किसी चीज की कमी नहीं थी। फिर भी राजा अपने जीवन से सुखी नहीं था, क्योंकि वह अपने स्वास्थ्य को लेकर काफी परेशान रहता था। राजा सदा बीमारियों से घिरा रहता था। राजा का उपचार सभी बड़े-बड़े वैद्यों द्वारा किया गया, परंतु इसके बावजूद राजा को स्वस्थ नहीं किया जा सका। अपने राजा की बढ़ती बीमारी से राज दरबार चिंतित हो गया। वे राजा को स्वस्थ बनाने के तमाम उपायों पर विचार करने लगे।

राजा की बीमारी दूर करने के लिए दरबारियों द्वारा राज्य में ऐलान करवा दिया गया कि जो भी राजा का स्वास्थ्य ठीक करेगा, उसे असंख्य स्वर्ण मुहरें दी जाएंगी। यह घोषणा सुनकर एक वृद्ध भी राजा का इलाज करने राजा के महल में गया। वृद्ध ने राजा के पास आकर कहा, 'महाराज, आप आज्ञा दें तो आपकी बीमारी का इलाज मैं कर सकता हूं।'

राजा की आज्ञा पाकर वह बोला, 'आप किसी पूर्ण सुखी मनुष्य के वस्त्र पहनिए, आप अवश्य स्वस्थ और सुखी हो जाएंगे।' वृद्ध की बात सुनकर राजा के सभी मंत्री और सेवक जोर-जोर से हंसने लगे। इस पर वृद्ध ने कहा, 'महाराज! आपने सारे उपचार करके देख लिए हैं, यह भी करके देखिए! मेरा दावा है कि आप अवश्य ही स्वस्थ हो जाएंगे।'

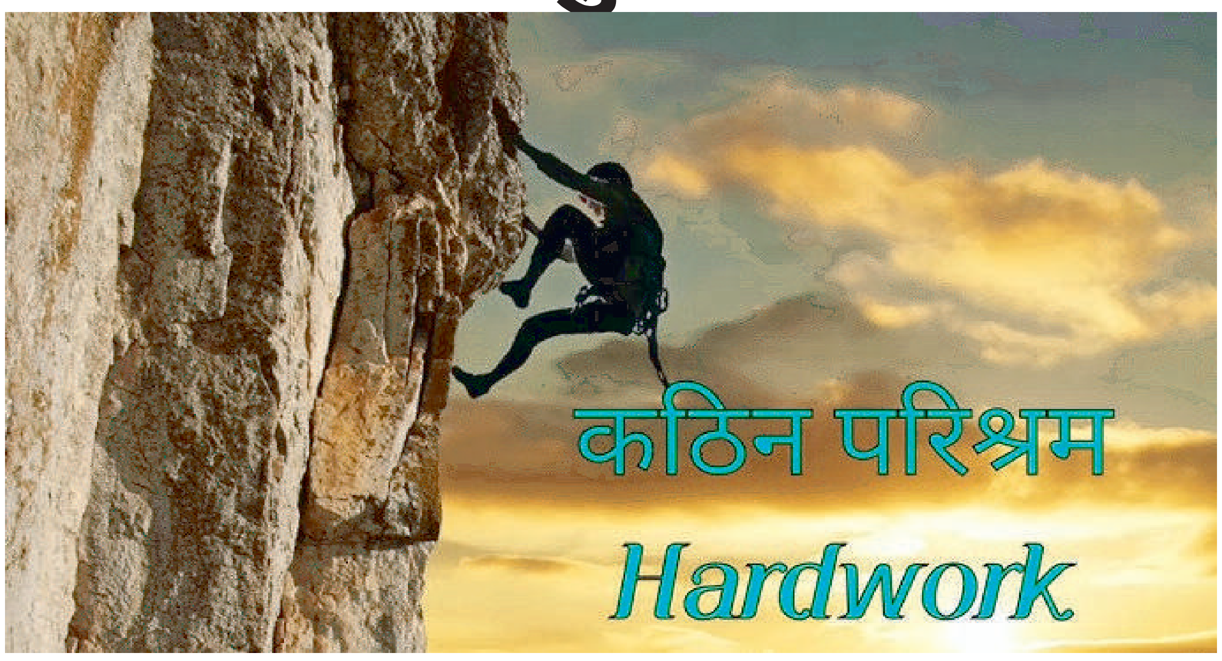

राजा ने उसकी बात से सहमत होकर सेवकों को पूर्ण सुखी मनुष्य की खोज में राज्य की चारों दिशाओं में भेज दिया, परंतु उन्हें कोई पूर्ण सुखी मनुष्य कहीं भी नहीं मिला। यह सुनकर राजा भी गहरी सोच में डूब गया। अब राजा स्वयं किसी सुखी मनुष्य की खोज में निकल पड़ा। अत्यंत गर्मी के दिन होने से राजा का बुरा हाल हो गया और वह एक पेड़ की छाया में विश्राम हेतु रुका। तभी राजा को एक मजदूर इतनी गर्मी में भी मजदूरी करता दिखाई दिया। राजा ने उससे पूछा, 'क्या, आप पूर्ण सुखी हो?'

मजदूर खुशी-खुशी और सहज भाव से बोला, 'जी, भगवान की कृपा से मैं पूर्ण सुखी हूं!' उसने मजदूर को ऊपर से नीचे तक देखा तो मजदूर ने सिर्फ धोती पहनी हुई थी और वह गाढ़ी मेहनत से पूरा का पूरा पसीने से तरबतर था। राजा यह देखकर समझ गया कि परिश्रम करने से ही एक आम मजदूर भी पूर्ण सुखी है। इस तरह राजा को सुखी रहने का मंत्र मिल गया था। राजा ने राजमहल लौटकर उस वृद्ध का उपकार मानते हुए उसे असंख्य स्वर्ण मुद्राएं दीं। अब राजा स्वयं आराम और आलस्य छोड़कर खूब परिश्रम करने लगे। कुछ ही दिनों में राजा पूर्ण स्वस्थ और सुखी हो गया।

मित्रो! इस बोधकथा का सार यही है कि आज हम भौतिक सुख-सुविधाओं के इतने आदी हो गए हैं कि हमारे शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति क्षीण होती जा रही है। दरअसल, श्रम करने से जहां हमारी जीवनी शक्ति बढ़ती है। लगातार श्रम करते रहने से हमारी पाचन शक्ति भी दुरुस्त रहती है। हमें नकारात्मक बातें सोचने का वक्त भी नहीं मिलता है।

गणित का आविष्कार किसने किया?

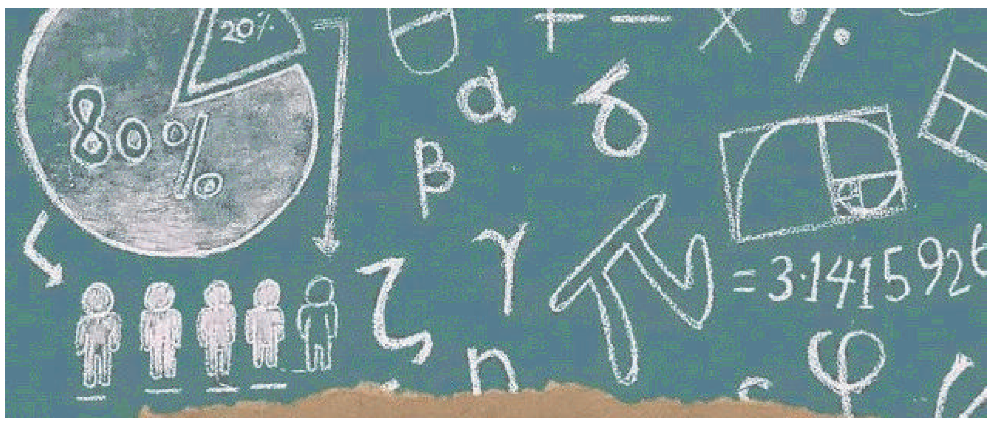

विजय गर्ग

गणित का जन्म नाम होने से पहले हुआ था। वे गिनती, माप और आदेश के लिए मानव वृत्ति से उभरे। प्राचीन सभ्यताओं में सबसे शुरुआती निशान पाए जाते हैं जैसेः

मेसोपोटामिया (सुमेरियन और बाबुल): उन्होंने समय, क्षेत्रों और खगोलीय चक्रों को मापने के लिए एक सेक्सैजिमल संख्यात्मक प्रणाली (आधार 60) का उपयोग किया। वे 360° स्प्लिट सर्कल और वर्तमान समय प्रणाली के माता-पिता हैं।

मिस्रः वास्तुकला (पिरामिड), लेखांकन और ज्यामिति के लिए व्यावहारिक गणित विकसित, विशेष रूप से नील कटाव के बाद भूमि की समस्याओं को हल करने के लिए।

भारत और चीनः उन्होंने यूरोप से एक हजार साल पहले नकारात्मक संख्या, द्विघात समीकरणों और विकसित कम्प्यूटेशनल तरीकों के साथ काम किया।

प्राचीन ग्रीसः यह वह जगह है जहाँ गणित का जन्म शुद्ध विज्ञान के रूप में होता है। वे केवल संख्याओं का उपयोग नहीं कर रहे थेः उन्होंने सोचा कि उन्होंने काम क्यों किया। टेल्स ऑफ मिलेटस, पाइथागोरस और यूक्लिड जैसे आंकड़ों के साथ, गणित उपयोगी से दार्शनिक हो गया।

गणित का आविष्कार किसने किया?

किसी ने इन्हें नहीं बनाया ... वे सभी उन्हें पता लगा। प्रत्येक सभ्यता ने कुछ अद्वितीय योगदान दिया। लेकिन अगर हमें पहले बड़े नामों को इंगित करना होता, तो वे होतेः

मिलेटो के किस्सेः सबसे पहले कटौतीत्मक तर्क का उपयोग करना।

पाइथागोरसः ब्रह्मांड की आत्मा और सद्भाव से संख्याओं को संबंधित करने वाला पहला।

यूक्लिडः द फादर ऑफ ज्योमेट्री।

आर्यभट्ट (भारत): त्रिकोणमिति और दशमलव संख्याओं के मास्टर।

अल-जुरिसमी (फारस): बीजगणित के पिता।

रिटायर्ड प्रिंसिपल इंटरनेशनल एजुकेशनल स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

संपूर्ण स्वास्थ्य की उम्मीद में दुनिया

विजय गर्ग

आम लोगों का स्वास्थ्य कभी भी राजनीति का मुख्य एजेंडा रहा ही नहीं, जबकि आज भारत ही नहीं पूरी दुनिया में स्वास्थ्य एक बेहद ज़रूरी विषय के रूप में खड़ा हो गया है। विश्व स्वास्थ्य दिवस 2025 का थीम या लक्ष्य की यदि हम बात करें तो इस वर्ष यह मिलेनियम स्वास्थ्य लक्ष्य को हासिल करने के उद्देश्य से 'आशापूर्ण भविष्य के लिए स्वस्थ शुरुआत' पर ज़ोर दे रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने लक्ष्य की घोषणा करते हुए कहा है कि प्रत्येक स्वास्थ्य संगठन और समुदाय यह सुनिश्चित करें कि मां और नवजात शिशु का स्वास्थ्य सुरक्षित रहे तथा इनकी असमय मृत्यु को रोका जा सके। उल्लेखनीय है कि विगत वर्ष 2024 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपना लक्ष्य 'मेरा स्वास्थ्य मेरा अधिकार' रखा था। यह अलग बात है कि दुनिया भर की सरकारों ने स्वास्थ्य के नागरिक अधिकारों पर स्पष्ट रूप से कुछ भी ठोस नहीं किया। हां, भारत में एकमात्र राज्य राजस्थान की पूर्व कांग्रेस की सरकार ने नागरिकों के स्वास्थ्य को उनके मौलिक अधिकार के रूप में क़ानून बनाकर लागू कर दिया।

'स्वस्थ शुरुआत आशापूर्ण भविष्य' के विभिन्न पहलुओं पर यदि ध्यान दें तो निश्चित ही नवजात शिशु एवं माताओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी होगी। इसके लिए प्रत्येक प्रखंड एवं गांवों में स्वास्थ्य के बुनियादी ढांचों को और मज़बूत करना होगा तथा सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मियों जैसे आशा कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी सेविका एवं प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को सक्रिय बनाना होगा। चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों को और जवाबदेह बनाना होगा। सभी सरकारों को अपना स्वास्थ्य बजट सम्मानजनक तरीके से जीडीपी के अनुसार बढ़ाना होगा। यह सुनिश्चित करना होगा कि समुचित पोषण और दवा के अभाव में कोई भी शिशु या गर्भवती मां अथवा व्यक्ति की असमय मृत्यु न हो। स्वास्थ्य और उपचार की सर्वसुलभता सुनिश्चित करनी होगी। सरकार और समुदाय को मिलकर काम करना होगा।

आज़ादी के सात दशक बीत जाने के बाद भी देश में जनस्वास्थ्य की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे अनेक स्वास्थ्य कार्यक्रमों एवं अभियानों के बाद भी हम अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सके हैं। महज़ आंकड़ों की बाजीगीरी और झूठे प्रचार से जन-स्वास्थ्य के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति बनायी थी जिसके अंतर्गत विभिन्न रोगों से बचाव एवं उपचार के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों का संचालन लंबे समय से किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' का संचालन भी किया जा रहा है, इन सबके बावजूद जनस्वास्थ्य को हम सही दिशा नहीं दे पा रहे हैं। इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि महिलाओं में प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताओं तथा नवजात शिशुओं और बच्चों की रुग्णता व मृत्यु दर को कम करने में अपेक्षित सफलता नहीं मिल पायी है।

वर्ष 2025 के स्वास्थ्य लक्ष्य की घोषणा करते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि महिलाओं और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य पर ही गई। विश्व स्वास्थ्य संगठन चाहता है कि दुनिया भर में नवजात शिशुओं और माताओं का स्वास्थ्य बेहतर हो ताकि भविष्य की आबादी में स्वस्थ लोगों की अच्छी संख्या हो। हम जानते हैं कि दुनिया भर में महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति समाज और सरकारें सदैव दोयम दर्जे की दृष्टि रखते हैं। हालांकि, पश्चिमी देशों में महिलाओं की स्थिति काफ़ी बेहतर है लेकिन भारत एवं एशियाई देशों में महिलाओं को स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए पुरुषों की अपेक्षा ज़्यादा जद्दोजहद करनी पड़ती है। आज़ादी के बाद से अब तक भारत में दो बार राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण हुए। इसमें केंद्र सरकार के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या अध्ययन संस्थान ने भी हिस्सा लिया। सार्वजनिक रूप से अप्रकाशित इन सर्वेक्षण रिपोर्टों के अनुसार प्रत्येक एक लाख जीवित शिशु के जन्म पर लगभग 540 माताओं की मृत्यु हो जाती है।

भारत में औरतों की नाज़ुक सेहत की वजह जानने के लिए उनकी ज़िंदगी पर जन्म के बाद से ही नज़र दौड़ानी होगी। जानी मानी फ्रेंच लेखिका शिमोन द बौवार कहती हैं कि 'औरत की सेहत इसलिए ख़राब है क्योंकि वह स्त्री है।' हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि आधुनिकीकरण एवं अन्य कई कारणों से भी कई पुराने रोग पुनः नए रूप में उभर कर सामने आ रहे हैं। अनेक प्रयासों के बावजूद हम वर्षों पुराने मच्छर जनित रोग मलेरिया, डेंगू आदि से उबर नहीं पाए हैं। तथाकथित आधुनिक जीवनशैली के कई रोग जैसे डायबिटीज़ हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, कैंसर, एड्स आदि बढ़ते ही जा रहे हैं। खान-पान की गड़बड़ी की वजह से पेट के कई घातक रोग बढ़ गए हैं। मानसिक रोगों की भी यही स्थिति है। बहुत ही कम उम्र के युवा और नौजवान अवसाद और अनिद्रा, तनाव आदि के शिकार हैं। युवाओं में घातक नशे का बढ़ता प्रचलन भी स्वास्थ्य की चुनौती के रूप में खड़ा है। सरकार और समुदाय यदि इस पर ध्यान नहीं देते तो स्थिति भयावह होगी। बहरहाल, उम्मीद की जानी चाहिए कि मानव स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर हमारी सरकारें क्षुद्र राजनीति से ऊपर उठ कर व्यापक जनहित में कार्य करेंगी।

विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

विजय गर्ग

हम से अधिकांश लोगों से जब क्रिकेट के किसी खिलाड़ी का नाम पूछा जाता है तो हम तुरंत बिना कुछ सोचे सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली या अन्य किसी पुरुष खिलाड़ी का नाम बता देते हैं; शायद बहुत कम या दशमलव मात्र लोग ही होंगे जो इस प्रश्न के जवाब में मिताली राज, झूलन गोस्वामी या अन्य किसी महिला खिलाड़ी का नाम लेंगे। इसी तरह, जब हम वैज्ञानिकों की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में स्टीफन हॉकिंग, आईजैक न्यूटन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सी.वी. रमन जैसे पुरुष वैज्ञानिकों की ही छवि उभर कर सामने आती है, न कि जानकी अम्माल, असीमा चटर्जी, अन्ना मणि जैसी महिला वैज्ञानिकों की। जी हां, भले ही आधुनिक युग में महिलाएँ धरती से आसमान तक हर जगह पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं, लेकिन आज भी उच्च शिक्षा से लेकर शोध संस्थानों व कार्यक्षेत्र तक, हर जगह पर उनके योगदान को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि एक पुरुष के योगदान को दिया जाता है। तमाम तरह की चुनौतियों के बावजूद इसरो में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबेल पुरस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपना लोहा मनवाया है। तो चलिये जानते हैं विज्ञान की जादुई दुनिया में अपना परचम लहराने वाली कुछ महिला वैज्ञानिकों के बारे में और इस क्षेत्र में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में-

जिस सदी में महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद करके रखा जाता था, उसी समय में सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर विज्ञान की दुनिया में कीर्तिमान स्थापित करने वाली कुछ महिला वैज्ञानिकों के नाम इस प्रकार हैं-

जानकी अम्माल: 4 नवंबर 1897 को केरल में जन्मी जानकी अम्माल वनस्पतिशास्त्र की वैज्ञानिक थीं। इन्होंने गन्नों की हाइब्रिड प्रजाति की खोज और क्रॉस ब्रीडिंग पर शोध किया था जिसे पूरी दुनिया में मान्यता मिली। वनस्पति शास्त्र में योगदान को देखते हुए साल 1957 में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। 7 फरवरी, 1984 को इनका निधन हो गया।

आनंदीबाई जोशीः इनका जन्म 31 मार्च 1865 को पुणे शहर में हुआ था। ये भारत की पहली महिला थीं जिन्होंने विदेश में डॉक्टर की डिग्री हासिल की। भारत लौटने के बाद इन्होंने चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी काम किया। 26 फरवरी 1887 में महज 22 साल की उम्र में बीमारी के चलते इनका निधन हो गया।

असीमा चटर्जीः कैंसर चिकित्सा, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास के लिये प्रसिद्ध असीमा चटर्जी का जन्म 23 सितंबर 1917 को बंगाल में हुआ था। ये पहली भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि दी गई थी। 2006 में 90 साल की उम्र में इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

अन्ना मणिः मौसम वैज्ञानिक के तौर पर मशहूर अन्ना मणि का जन्म 23 अगस्त 1918 को केरल के त्रावणकोर में हुआ था। इन्होंने सौर विकिरण, ओजोन परत और वायु ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। 16 अगस्त 2001 को इनकी जीवनलीला समाप्त हो गई।

किरण मजूमदार शाः किरण विज्ञान की दुनिया में किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अहम योगदान देने वाली किरण मजूमदार ने मधुमेह, कैंसर और आत्म प्रतिरोधी बीमारियों पर शोध के साथ ही एंजाइमों के निर्माण के लिये एकीकृत जैविक दवा कंपनी 'बायोकॉन लिमिटेड' की स्थापना की।

हमारी महिला वैज्ञानिकों ने केवल विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य किए हैं, बल्कि गणित, अंतरिक्ष और खगोल शास्त्र के क्षेत्र में भी शानदार उपलब्धियाँ हासिल की हैं। अंतरिक्ष की दुनिया में दमदार प्रदर्शन करने वाली इन महिलाओं के बारे में आपको ज़रूर जानना चाहिए-

मुथैया वनिताः ये भारत में दूसरे चंद्रयान मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर थीं। मुथैया इसरो में इस स्तर का काम करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक हैं। इन्होंने मैपिंग के लिये इस्तेमाल होने वाले पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रह कार्टोसैट-1 और दूसरे महासागर अनुप्रयोग उपग्रह ओशनसैट-2 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साल 2006 में इन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रितु करिधलः चंद्रयान-1 मिशन में डिप्टी ऑपरेशंस डायरेक्टर रह चुकी रितु करिधल भारत के सबसे महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान-2 की मिशन डायरेक्टर थीं। साल 2007 में इन्हें इसरो के

यंग साइंटिस्ट ऑवार्ड से सम्मानित किया गया।

टेसी थॉमसः भारत की मिसाइल महिला और अग्निपुत्री के नाम से मशहूर टेसी थॉमस ने डीआरडीओ में अपने काम से सबका ध्यान आकर्षित किया। इन्होंने भारत की रक्षा प्रणाली को मजबूत करने में काफी योगदान दिया है।

कल्पना चावलाः भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के बारे में छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर कोई जानता है। कल्पना अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला थीं। वह 376 घंटे 34 मिनट तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने धरती के 252 चक्कर लगाए थे। 1 फरवरी 2003 को हुई अंतरिक्ष इतिहास की एक मनहूस दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई।

सुनीता विलियम्सः सुनीता विलियम्स अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के जरिये अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं। सुनीता विलियम्स ने एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में 195 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

क्या कहते हैं आँकड़े?

भारतीय परिप्रेक्ष्य में आँकड़ों पर नज़र डालें तो, वर्ष 2020 में किये गए एक सर्वेक्षण से पता चला कि भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के 1,044 सदस्यों में से केवल 89 महिलाएँ हैं जो कुल संख्या का 9 फीसदी हैं। वहीं, साल 2015 में उनके प्रतिनिधित्व में और अधिक कमी देखी गई थी जिसमें 864 सदस्यों में मात्र 6 फीसदी महिला वैज्ञानिक शामिल थीं।

इसी प्रकार, इन्सा के शासी निकाय में साल 2020 में कुल 31 सदस्यों में से केवल 7 महिलाएँ थीं, जबकि 2015 में इसमें कोई महिला सदस्य शामिल नहीं थी।

वहीं, विश्व स्तर पर बात करें तो जेंडर इन साइंस, इनोवेशन, टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग, इंटर एकेडमी पार्टनरशिप और इंटरनेशनल साइंस काउंसिल द्वारा संयुक्त रूप से किये गए एक अध्ययन के मुताबिक उच्च अकादमियों में महिलाओं की निर्वाचित सदस्यता में मामूली सी वृद्धि देखने को मिली। ये संख्या वर्ष 2015 में 13 फीसदी थी जो कि वर्ष 2020 में बढ़कर 16 फीसदी हो गई।

आखिर क्या है वैज्ञानिक जगत में महिलाओं की कम भागीदारी की वजह

उपर्युक्त आँकड़ों को देखने के बाद हम यह सोचकर खुश हो सकते हैं कि पिछले सालों के मुकाबले महिलाओं की संख्या साल दर साल बढ़ रही है, लेकिन इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि इसकी रफ़्तार बहुत धीमी है। महिलाओं की भागीदारी को कम करने वाले कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं-

विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की कमी का एक प्रमुख कारण रूढ़िवादी लैंगिक धारणा है। लोगों के बीच यह मान्यता व्याप्त है कि अधिक परिश्रम व अधिक ज्ञान वाले कार्यों को पुरुष ही बेहतर तरीके से कर सकते हैं। महिलाएँ घर के कार्यों के लिये बनी हैं और इसलिए उन्हें घर के कार्य करने चाहिए या ऐसा व्यवसाय चुनना चाहिए जिसे घर के कार्यों के साथ-साथ आसानी से संभाला जा सके।

महिलाओं को काम पर रखने या फेलोशिप और अनुदान आदि देने में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया जाता है।

महिला रोल मॉडलों की कमी

गर्भावस्था के दौरान संस्थागत ढाँचे का सहायक न होना और कार्यस्थल में सुरक्षा-संबंधी समस्याएँ महिलाओं को इस क्षेत्र से बाहर रहने को मज़बूर करती हैं।

इन क्षेत्रों में महिलाओं की कम संख्या के लिये न केवल सामाजिक मानदंड बल्कि गुणवत्ताहीन शिक्षा भी ज़िम्मेदार है।

महिलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु शुरू की गई पहल

देश में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित के क्षेत्रों में महिलाओं को करियर बनाने हेतु प्रोत्साहित करने के लिये विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) द्वारा 2019 से 'विज्ञान ज्योति योजना' चलाई जा रही है।

इसके साथ ही, महिला वैज्ञानिकों को शैक्षणिक और प्रशासनिक स्तर पर अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से साल 2014-15 में 'किरण योजना' की शुरुआत की गई।

स्टेम के क्षेत्र में लैंगिक समानता का आकलन करने के लिये 'जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस कार्यक्रम शुरू किया गया।

कुल मिलाकर यह कहना गलत नहीं होगा कि समय के साथ-साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं ने मेहनत और लगन से अपनी एक अलग पहचान बनाई है; उनके आविष्कारों व प्रयोगों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में चार चांद लगाए हैं लेकिन सरपट भाग रही इस विज्ञान की दुनिया में उनकी रफ्तार का पहिया अभी धीमा है। इसलिए यथास्थिति में तेजी से बदलाव लाने के लिये हमारे परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, कंपनियों और सरकारों, सभी को साथ मिलकर कार्य करना होगा। साथ ही, वैज्ञानिक जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली महिलाओं की सफलता की कहानियाँ जन-जन तक पहुँचानी होंगी जिससे संकीर्ण मानसिकता वाले तबके की सोच में बदलाव लाया जा सके और देश की बेटियाँ बढ़-चढ़कर विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कर्ज के जाल में फंसती जा रही है आज की युवा पीढ़ी

डॉ. नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

पहले के जमाने में कर्ज लेना एक मजबूरी मानी जाती थी लेकिन आज के युवाओं के लिए कर्ज फैशन बन गया है। चाहे नया स्मार्टफोन हो, कार हो या ब्रांडेड कपड़े, हर चीज EMI (मासिक किस्तों) पर खरीदने का चलन तेजी से बढ़ रहा है। देखने में ये स्कीमें आसान लगती हैं लेकिन यही "छोटी-छोटी किश्तें" युवाओं को धीरे-धीरे बड़े कर्ज के दलदल में धकेल रही हैं।

युवा क्यों ले रहे हैं इतना कर्ज ?

भारत में 40 वर्ष से कम उम्र के युवाओं के बीच पर्सनल लोन लेने की संख्या तेजी से बढ़ रही है। करीब 65% पर्सनल लोन युवाओं द्वारा लिए जा रहे हैं। EMI पर मोबाइल फोन, लैपटॉप, बाइक, कार आदि खरीदने की प्रवृत्ति आम हो गई है। क्रेडिट कार्ड से खरीदारी भी खूब बढ़ी है और जून 2024 तक क्रेडिट कार्ड पर बकाया रकम 2.7 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच गई है।

कंपनियों की चाल: सस्ता दिखाकर महंगा बेचना

कंपनियाँ जानती हैं कि महँगी चीज़ को किश्तों में तोड़कर दिखाने से वह सस्ती लगती है। जैसे 50,000 रुपये का फोन मात्र 2,000 रुपये प्रतिमाह पर 25 महीने के लिए उपलब्ध करा दिया जाता है। इससे ग्राहक को तुरंत लगता है कि यह महँगा फोन उसकी जेब में फिट है जबकि वास्तविकता में ग्राहक धीरे-धीरे उस वस्तु की कीमत से कहीं अधिक चुका रहा होता है। ये कंपनियाँ 'नो-कॉस्ट EMI', 'ज़ीरो डाउन पेमेंट' जैसी स्कीमों के जरिए युवाओं को आकर्षित करती हैं।

मानसिकता और मनोवैज्ञानिक जाल

इस बढ़ते कर्ज के पीछे सोशल मीडिया और सामाजिक दबाव बहुत बड़ी वजह हैं। युवाओं में सोशल मीडिया पर दिखावा करने की होड़ लग चुकी है। दोस्त की नई कार, महंगा फोन, ब्रांडेड कपड़े देखकर युवा खुद को पीछे महसूस करते हैं। इससे उनमें चिंता और तनाव बढ़ता है (सोशल एंग्जायटी) और वो कर्ज लेकर इन चीजों को खरीदने लगते हैं। युवाओं में तुरंत चीजें हासिल करने (Instant Gratification) की प्रवृत्ति भी तेजी से बढ़ी है जिससे वे बिना सोच-विचार किए EMI या क्रेडिट कार्ड पर खर्च करते हैं।

छोटे-छोटे EMI धीरे-धीरे इतने बड़े बन जाते हैं कि युवाओं की मासिक आमदनी का बड़ा हिस्सा EMI में जाने लगता है। इससे उनकी बचत खत्म हो जाती है और वे इमरजेंसी में भी पैसा नहीं बचा पाते। एक छोटी-सी नौकरी छूटने या मेडिकल इमरजेंसी से उनकी वित्तीय स्थिति अचानक बिगड़ सकती है। क्रेडिट कार्ड पर ऊँची ब्याज दर (सालाना 30-48%) के कारण कर्ज तेजी से बढ़ता जाता है, जिससे युवा कर्ज के जाल में फँस जाते हैं।

कर्ज के जाल से कैसे बचें ?

x वित्तीय जानकारी (Financial Literacy): EMI के पीछे छुपी हुई ब्याज और असली कीमत समझें।

x बजट बनाएं और उसी हिसाब से खर्च करें. अपनी मासिक आमदनी के हिसाब से EMI चुनें जो आपकी कमाई का 30-40% से ज्यादा न हो।

x धैर्य रखें (Delayed Gratification): हर चीज तुरंत नहीं, कुछ चीजों के लिए बचत करना सीखें।

x सोशल मीडिया दबाव से बचें: दिखावे के लिए कर्ज लेना छोड़ें।

x इमरजेंसी फंड बनाएं: मुश्किल घड़ी में काम आने के लिए 3 से 6 महीने के खर्च लायक बचत जरूर करें।

x क्रेडिट का जिम्मेदारी से प्रयोग करें: जरूरी चीजों के लिए क्रेडिट लें, फिजूल खर्चों के लिए नहीं।

कर्ज कोई बुरी चीज नहीं है लेकिन सोच-समझकर इस्तेमाल किया जाए तभी ठीक है। EMI और लोन को समझदारी से चुनकर आप भविष्य की वित्तीय सुरक्षा को सुनिश्चित कर सकते हैं। थोड़ा संयम, थोड़ी समझदारी और कर्ज से दूर रहने की कोशिश आपको लंबे समय तक मानसिक और आर्थिक रूप से मजबूत बनाएगी।

डॉ. नर्मदेश्वर प्रसाद चौधरी

अरे बाप रे! - पूरे विश्व का शेयर मार्केट लहूलुहान!

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दशकों से यह प्रचलन रहा है कि जब भी कोई प्राकृतिक, मानवीय मेड घटना, महायुद्ध सत्ता का पलटना, महामारी इत्यादि कुछ घटनाएं होती है तो इसका प्रभाव संबंधित अनेक क्षेत्रों में होता हुआ दिखता है। अभी हाल ही में विश्व के अनेक देशों पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा लगाए गए टेरिफ़ से पूरे विश्व के शेयर मार्केटों मैं हाहाकार मचा हुआ है और वे लहुलुहान हो गए हैं। इसी प्रकार जैसे 57 देशों के इस्लामी सहयोग संगठन, खाड़ी देश हो या फिर विकसित देशों के बीच टकराव हो इससे तेल का रेट बढ़ना,किसी राजनीतिक उलटफेर का डर या कानून से विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा शेयरों की बिकवाली से शेयर मार्केट गिरना या कोई महामारी आने से स्वास्थ्य व खाद्य क्षेत्र का चरमरा जाना इत्यादि होता है। मैनें बचपन में हर्षद मेहता का बहुत बड़ा शेयर घोटाला तथा एक स्टांप पेपर घोटाला सुना था जिसनें उच्चस्तर तक को हिला दिया था। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि ट्रंप के विज़न अमेरिकी फर्स्ट के कारण विदेशी संस्थागत निवेशकों द्वारा लगातार शेयरों की बिकवाली कर भारत से पैसा समेट रहे हैं,शायद अमेरिका में लगाने का उनका विचार हो सकता है ! ऐसे अनेक संभावित कारणों की चर्चा हम नीचे पैराग्राफ में करेंगे ।चूँकि शेयर मार्केट मैं आज 7 अप्रैल 2025 को भारी मात्रा में गिरावट चिंतनीय है, एनएसई निफ्टी को साप्ताहिक मासिक एक्सपायरी दिन को मंगलवार से सोमवार किया गया है जो 4 अप्रैल 2025 से लागू हो गया है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,अरे बाप रे ! - पूरे विश्व का शेयर मार्केट लहूलुहान !पूरे विश्व के शेयर बाजारों में हाहाकार ! भारत में चंद मिनट में 19 लाख करोड़ स्वाहा:भारतीय शेयर बाजार में जितनी बड़ी गिरावट 7 अप्रैल को 1 दिन में देखी गई, यह पहली बार नहीं, इसके पहले भी कई बार हो चुका है-गहन चिंतन ज़रूरी है।

साथियों बात अगर हम 7 अप्रैल 2025 को शेयर बाजारलहुलुहान होने की करें तो, अमेरिका के दुनियाँ भर के 180 देशों पर टैरिफ लगाए जाने का असर अब साफ दिखना शुरु हो गया है। दुनिया भर के बाजारों में आई गिरावट के बाद अब भारतीय शेयर बाजार भी बुरी तरह ध्वस्त हो गए हैं ।आज यानी 7 अप्रैल 2025 को दोनों प्रमुख सूचकांक लाल रंग के निशान पर खुले और खुलते ही शेयर बाजार में हाहाकार मच गया। सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 3,939.68 अंक की भारी गिरावट के साथ 71,425.01 अंक पर, निफ्टी 1,160.8 अंक फिसलकर 21,743.65 अंक पर खुला। सोमवार को दुनियाँ भर के बाजार ऐसे गिरे, जैसे सीधे पाताल लोक में समा जाएंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति की ओर से लगाए गए ज़बरदस्त टैरिफ और चीन की तीखी जवाबी कार्रवाई ने पूरी दुनियाँ के स्टॉक मार्केट को हिला कर रख दिया है। चीन ने अमेरिका से आने वाले सभी सामानों पर 34 फीसदी का टैक्स लगाने का ऐलान कर दिया है, जो 10 अप्रैल से लागू होगा। इसका असर इतना जबरदस्त रहा कि महज दो दिनों में दुनिया भर में 9 ट्रिलियन डॉलर की मार्केट वैल्यू उड़नछू हो गई।

साथियों बात अगर हम ट्रंप के टैरिफ घोषणा के बाद दुनियाँ भर के शेयर बाजारों में त्राहिमाम की करें तो, अमेरिकी राष्ट्रपति के टैरिफ घोषणाओं के बाद दुनियाँ भर के शेयर बाजार में त्राहिमाम मच गया। 7 अप्रैल 2025 का दिन कई देशों के लिए काला दिन साबित हुआ। ट्रंप के टैरिफ ने वैश्विक व्यापार युद्ध की आशंकाओं को बढ़ा दिया। जिसके कारण निवेशकों में घबराहट और अनिश्चित का माहौल बढ़ा, जिसके परिणाम स्वरूप दुनियाँ के शेयर बाजारों में बड़े पैमाने पर बिकवाली शुरू हुई। हॉन्ग कोंग ऐसे देश में टॉपर है, जिन्होंने सोमवार को सबसे ज्यादा नुकसान दर्ज किया, हैंग सेंग इंडेक्स में 7 अप्रैल 2025 को आई 13.12 पेर्सेंट से 13.60 पेर्सेंट तक की गिरावट को हाल ही के वर्षों में इंट्रा डे में आई सबसे बड़ी गिरावट कहा जा रहा है.ल। 1997 के एशियाई वित्तीय संकट के बाद आज सबसे बड़ी एकल- दिवसीय गिरावट दर्ज हुई ।हांगकांग में आई बड़ी गिरावट के पीछे चीन पर लगे 34 पेर्सेंट का टैरिफ है। हांगकांग की अर्थव्यवस्था चीन पर निर्भर करती है, यहां बैंकिंग और तकनीकी क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ है। हैंग सेंग 23,000 के आसपास तक लुढ़क गया। इतना ही नहीं कई कंपनियों के शेयर्स 20 पेर्सेंट से ज्यादा कमजोर हो गए। ताइएक्स इंडेक्स में सोमवार को 9.7 पेर्सेंट से 10 पेर्सेंट तक की गिरावट हुई। यहां निवेशकों के लिए भी आज ब्लैक मंडे साबित हुआ. यह इतिहास में सबसे बड़ी एकल-दिवसीय गिरावटों में से एक थी। बाजार की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए ट्रेडिंग को अस्थाई रूप से रोकना पड़ा, यानी सर्किट ब्रेकर लागू किया ।दक्षिण कोरिया के कोस्पी इंडेक्स में 3पेर्सेंट से 5पेर्सेंट की गिरावट के कारण कुछ समय के लिए लोअर सर्किट लगा। हुंडई और सैमसंग जैसी कंपनियों के शेयरों में भारी बिकवाली हुई ।सेंसेक्स 2,227 अंकों की गिरावट के साथ 73,138 के स्तर पर बंद हुआ, जबकि निफ्टी 3पेर्सेंट से अधिक गिरकर 22,200 से नीचे बंद हुआ, भारत पर 26पेर्सेंट टैरिफ का असर हुआ, लेकिन फार्मा, स्टील, और ऑटो सेक्टर को कुछ छूट मिलने से नुकसान अन्य देशों जितना गहरा नहीं था. अमेरिका, चीन यूरोप के यूके, जर्मनी, और फ्रांस के बाजारों में भी भारी मात्रा में गिरावट दर्ज की गई।

साथियों बात अगर हम शेयर गिरावट का भारत सहित पूरे विश्व में असर की करें तो, भारतीय शेयर मार्केट भी इससे अछूता नहीं है। हफ्ते के पहले दिन बाजार खुलते ही सेंसेक्स करीब 4,000 अंक गिर गया जबकि निफ्टी में भी 900 अंक से अधिक गिरावट आई है। इस गिरावट से निवेशकों को 19.4 लाख करोड़ रुपये की चपत लगी है। भारत के साथ-साथ एशिया के दूसरे बाजारों में भी गिरावट आई है। टाटा ग्रुप के शेयरों के अमूमन सुरक्षित दांव माना जाता है। लेकिन आज टाटा ग्रुप के शेयरों में भारी गिरावट देखने को मिली और ग्रुप के कई शेयर 52 हफ्ते के लो पर चले गए। इससे कुछ ही घंटों में निवेशकों को 1.49 लाख करोड़ रुपये की चपत लगी। जापान का निक्केई 225 इंडेक्स 7.8 पेर्सेंट गिरावट के साथ 1.5 साल के लो पर पहुंच गया। इस बीच ट्रंप ने अपनी नीति का बचाव करते हुए कहा है कि व्यापार असंतुलन को दुरुस्त करना जरूरी है लेकिन मंदी और महंगाई के कारण दुनिया भर के बाजारों में खलबली मची हुई है ।यूरोप में भी शुरुआती कारोबार में भारी गिरावट दिख रही है। सोमवार को बाजार खुलते ही शेयर बाजार 16 महीने के न्यूनतम स्तर पर पहुंच गए। जर्मनी में डॉक्स इंडेक्स में करीब 10 फीसदी गिरावट आई है जबकि लंदन का फ्टसे 100 करीब 6 पेर्सेंट गिरावट के साथ ट्रेड कर रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति के टैरिफ के बाद मंदी की आशंका ने पूरी दुनियाँ को हिलाकर रख दिया है। चीन की जवाबी कार्रवाई के बावजूद ट्रंप ने अपनी योजना से पीछे हटने का कोई संकेत नहीं दिया है।

साथियों बात अगर हम भारत में शेयर मार्केट के काले दिनों के इतिहास की करें तो, चंद मिनटों में 19 लाख करोड़ स्वाहा, भारतीय शेयर बाजार में हाहाकार, जानिए सेंसेक्स में कब-कब आई बड़ी गिरावट। भारतीय शेयर बाजार ने कई सुनहरे पल देखे हैं, लेकिन इसके इतिहास में कुछ ऐसे काले दिन भी दर्ज हैं, जब सेंसेक्स भारी गिरावट का शिकार हुआ है, वैश्विक संकट से लेकर घरेलू अनिश्चितता तक, इन घटनाओं ने निवेशकों को सकते में डाला है। कई बार हालात ऐसे आए हैं कि बाजार में ट्रेडिंग को कुछ समय के लिए रोकने की नौबत आ गई। (1) 4 जून 2024 को हुई थी बड़ी गिरावट: इलेक्शन रिजल्ट डे पर शेयर मार्किट में कारोबार शुरू होते ही गिरावट का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वो बढ़ता ही चला गया था, बीएसई के 30 शेयरों वाले सेंसेक्स ने उस दिन 1700 अंक टूटकर ट्रेडिंग शुरू की थी और दोपहर 12.20 बजे तक तो ये 6094 अंक तक फिसलकर 70,374 के लेवल पर आ गया था। (2) 23 मार्च 2020 - कोविड-19 महामारी के चलते सेंसेक्स 3,935 अंक टूटा था, लॉक डाउन की आशंका से बाजार ठप हुआ, और निवेशकों को भारी नुकसान झेलना पड़ा। (3).12 मार्च 2020 - सेंसेक्स में 2,919 अंकों की गिरावट: कोरोना के वैश्विक प्रसार और यस बैंक संकट ने सेंसेक्स को 2,919 अंक नीचे खींचा. 10 पेर्सेंट लोअर सर्किट लगा, ट्रेडिंग रुकी(4) 9 मार्च 2020 -सेंसेक्स में 1,941 अंकों की गिरावट: तेल की कीमतों में गिरावट और कोविड-19 की चिंता से सेंसेक्स 1,941 अंक लुढ़का। (5) 27 फरवरी 2020 - सेंसेक्स में कोविड-19 के बढ़ते मामलों ने बाजार को डराया ।सेंसेक्स 1,448 अंक गिरा, जिससे निवेशकों का विश्वास डगमगा गया। (6) 24फरवरी 2020 - सेंसेक्स 806 अंकों की गिरावट: कोरोना के वैश्विक प्रभाव की शुरुआत में सेंसेक्स 806 अंक नीचे आया,यह महामारी से जुड़ी पहली बड़ी गिरावट थी। (7) 6 फरवरी 2020 - सेंसेक्स में 1,000 अंकों की गिरावट: बजट के बाद अनिश्चितता और वैश्विक संकेतों से सेंसेक्स में करीब 1,000 अंक की गिरावट दर्ज हुई। बाजार में अस्थिरता बढ़ी(8) फरवरी 2020 - सेंसेक्स में 2,100 अंकों की गिरावट: बजट निराशा और आर्थिक मंदी की आशंका से सेंसेक्स लगभग 2,100 अंक गिरा। निवेशकों में बेचैनी छाई रही।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अरे बाप रे ! - पूरे विश्व का शेयर मार्केट लहूलुहान ! ।पूरे विश्व के शेयर बाजारों में हाहाकार ! भारत में चंद मिनट में 19 लाख करोड़ स्वाहा:भारतीय शेयर बाजार में जितनी बड़ी गिरावट 7 अप्रैल को 1 दिन में देखी गई, यह पहली बार नहीं, इसके पहले भी कई बार हो चुका है-गहन चिंतन ज़रूरी है।

क्रर विशेषज्ञ स्तंभकार साहित्यकार अंतरराष्ट्रीय लेखक चिंतक कवि संगीत माध्यम सीए(एटीसी) एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

माता श्री नैना देवी जी की कथा एवं रहस्य

श्री नैना देवी मंदिर 1177 मीटर की ऊंचाई पर जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश मे स्थित है कई पौराणिक कहानियां मंदिर की स्थापना के साथ जुडी हुई हैं।

एक पौराणिक कथा के अनुसार, देवी सती ने खुद को यज्ञ में जिंदा जला दिया, जिससे भगवान शिव व्यथित हो गए उन्होंने सती के शव को कंधे पर उठाया और तांडव नृत्य शुरू कर दिया इसने स्वर्ग में सभी देवताओं को भयभीत कर दिया कि भगवान शिव का यह रूप प्रलय ला सकता है। देवताओं ने भगवान विष्णु से यह आग्रह किया कि अपने चक्र से सती के शरीर को 51 टुकड़ों में काट दें, श्री नैना देवी मंदिर वह जगह है जहां सती की आंखें गिरीं।

मंदिर से संबंधित एक अन्य कहानी नैना नाम के गुज्जर लड़के की है। एक बार वह अपने मवेशियों को चराने गया और देखा कि एक सफेद गाय अपने थनों से एक पत्थर पर दूध बरसा रही है उसने अगले कई दिनों तक इसी बात को देखा एक रात जब वह सो रहा था, उसने देवी माँ को सपने मे यह कहते हुए देखा कि वह पत्थर उनकी पिंडी है। नैना ने पूरी स्थिति और उसके सपने के बारे में राजा बीर चंद को बताया जब राजा ने देखा कि यह वास्तव में हो रहा है, उसने उसी स्थान पर श्री नयना देवी नाम के मंदिर का निर्माण करवाया। श्री नैना देवी मंदिर महिशपीठ नाम से भी प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ पर माँ श्री नयना देवी जी ने महिषासुर का वध किया था ।किंवदंतियों के अनुसार, महिषासुर एक शक्तिशाली राक्षस था जिसे श्री ब्रम्हा द्वारा अमरता का वरदान प्राप्त था, लेकिन उस पर शर्त यह थी कि वह एक अविवाहित महिला द्वारा ही परास्त हो सकता था इस वरदान के कारण, महिषासुर ने पृथ्वी और देवताओं पर आतंक मचाना शुरू कर दिया। राक्षस के साथ सामना करने के लिए सभी देवताओं ने अपनी शक्तियों को संयुक्त किया और एक देवी को बनाया जो उसे हरा सके, देवी को सभी देवताओं द्वारा अलग अलग प्रकार के हथियारों की भेंट प्राप्त हुई। महिषासुर देवी की असीम सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो गया और उसने शादी का प्रस्ताव देवी के समक्ष रखा, देवी ने उसे कहा कि अगर वह उसे हरा देगा तो वह उससे शादी कर लेगी, लड़ाई के दौरान, देवी ने दानव को परास्त किया और उसकी दोनों आँखें निकाल दीं.

एक और कहानी सिख गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ जुडी हुई है, जब उन्होंने मुगलों के खिलाफ अपनी सैन्य अभियान 1756 में छेड़ दिया, वह श्री नैना देवी गये और देवी का आशीर्वाद लेने के लिए एक महायज्ञ किया। आशीर्वाद मिलने के बाद, उन्होंने सफलतापूर्वक मुगलों को हरा दिया.

माता श्री नैना देवी की पूजा विधि

मंगल आरती माता की पहली आरती मंगल आरती कहलाती है. प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में लगभग 4:00 बजे पुजारी मंदिर खोलता है और घंटा बजा कर माता को जगाया जाता है। तदनंतर माता की शेय्या समेट कर रात को गडवी में रखे जल से माता के चक्षु और मुख धोये जाते है। उसी समय माता को काजू, बादाम, खुमानी, गरी, छुआरा, मिश्री, किशमिश, आदि में से पांच मेवों का भोग लगाया जाता है जिसे 'मोहन भोग ' कहते है. मंगल आरती में दुर्गा सप्तशती में वर्णित महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, के ध्यान के मंत्र बोले जाते है, माता के मूल बीज मंत्र और माता श्रीनयनादेवी के ध्यान के विशिष्ट मंत्रो से भी माता का स्तवन होता है। ये विशिष्ट मन्त्र गोपनीय है इन्हें केवल दीक्षित पुजारी को ही बतलाया जा सकता है।

श्रृंगार आरती श्रृंगार आरती के लिए मंदिर के पृष्ठ भाग की ढलान की और निचे लगभग 2 किलोमीटर की दुरी पर स्थित 'झीडा' नामक बाऊडी से एक व्यक्ति जिसे 'गागरिया' कहते है , नंगे पांव माता के स्नान एवं पूजा के लिए पानी की गागर लाता है। श्रृंगार आरती प्रातः लगभग 6:00 बजे शुरू होती है जिसमे षोडशोपचार विधि से माता का स्नान तथा हार श्रृंगार किया जाता है। इस समय सप्तशलोकी दुर्गा और रात्रिसूक्त के श्लोको से माता की स्तुति की जाती है। माता को हलवा और बर्फी का भोग लगता है जिसे 'बाल भोग' कहते है। श्रृंगार आरती उपरांत दशमेश गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा स्थापित यज्ञशाला स्थल पर हवन यज्ञ किया जाता है जिसमे स्वस्ति वाचन, गणपति पुजन, संकल्प, स्त्रोत, ध्यान, मन्त्र जाप, आहुति आदि सभी प्रक्रियाये पूर्ण की जाती है।

मध्यानह्न आरती इस अवसर पर माता को राज भोग लगता है राज भोग में चावल, माश की दाल, मुंगी साबुत या चने की दाल, खट्टा, मधरा और खीर आदि भोज्य व्यंजन तथा ताम्बूल अर्पित किया जाता है मध्यान्ह आरती का समय दोपहर 12:00 बजे है, इस आरती के समय सप्तशलोकी दुर्गा के श्लोको का वाचन होता है।

सायं आरती सायं आरती के लिए भी झीडा बाऊडी से माता के स्नान के लिए गागरिया पानी लाता है लगभग 06:30 बजे माता का सायंकालीन स्नान एवं श्रृंगार होता है इस समय माता को चने और पूरी का भोग लगता है. ताम्बूल भी अर्पित किया जाता है। इस समय के भोग को 'श्याम भोग' कहते है सायं आरती में सौंदर्य लहरी के श्लोको का गायन होता है।

शयन आरती रात्रि 09:30 बजे माता को शयन करवाया जात है इस समय माता की शेय्या सजती है दुध और बर्फ़ी का भोग लगता है, जिसे 'दुग्ध भोग' के नाम से जाना जाता है, शयन आरती के समय भी श्रीमद शंकराचार्य विरचित सौन्दर्य लहरी के श्लोको के सस्वर गायन के साथ माता का स्तवन होता है।

पूर्वोत्तर भारत में यूनुस का ग्रेट गेम

डॉ ब्रजेश कुमार मिश्र

विदेश नीति गत्यात्मक होती है। इसमें परिस्थियों के अनुरूप परिवर्तन होता रहता है। अगर विदेश नीति में स्थायित्व जैसा कुछ है तो वह है राष्ट्रीय हित। कब, कहाँ और कैसे नीतियों में परिवर्तन किया जाएगा, यह सुनिश्चित करना विदेश नीति का प्राथमिक कर्त्तव्य है। दक्षिण एशिया में जिस तरह का माहौल बना हुआ है, उस परिस्थिति में देश के विदेश नीति के नियन्ताओं को कुछ बड़ा करने के विषय में सोचना होगा। विगत तीन दशकों से चीन का हस्तक्षेप उपमहाद्वीप में तेजी से बढा है चाहे वह सी.पी.इ.सी. हो या फिर सी.एम.इ.सी. और अब बांग्लादेश के अन्तरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस की कार्ययोजना ने उसके ड्रीम प्रोजेक्ट 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल' के सपने को साकार करने के लिए बहुत हद तक मंच भी प्रदान कर दिया है।

वास्तव में बांग्लादेश के अन्तरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस ने चार दिन की चीन यात्रा विगत 26 मार्च को शुरू की। इस यात्रा के दौरान 26 मार्च को उनके द्वारा दिए गए एक भाषण का सोशल मीडिया पर एक वीडियो उनकी चीन यात्रा की समाप्ति के बाद बड़ी तेजी से वायरल हुआ है। इस वायरल वीडियो में मोहम्मद यूनुस यह कहते नज़र आ रहे हैं कि पूर्वोत्तर भारत जमीन से घिरा एक ऐसा क्षेत्र है जहां पहुँचने के लिए कोई रास्ता नहीं है। इस पूरे क्षेत्र के समुद्र से जुड़ने का एक मात्र रास्ता बांग्लादेश से होकर आता है। वस्तुतः इस क्षेत्र के संरक्षक हम ही हैं। इस कारण यह क्षेत्र अपार संभावनाओं का रास्ता खोलता है। उक्त क्षेत्र चीनी विस्तार के लिए कारगर साबित हो सकता है। नेपाल और भूटान के पास प्रचुर मात्रा में हाइड्रोपॉवर है। हम इनका इस्तेमाल अपने असीमित फायदे के लिए कर सकते हैं। इस प्रकार मोहम्मद यूनुस ने चीन को बांग्लादेश को आर्थिक मंच के रूप में इस्तेमाल करने का निमंत्रण दिया और स्वयं को इस क्षेत्र (पूर्वोत्तर भारत) के लिए समुद्र का एक मात्र संरक्षक बताया।

ढाका के माध्यम से चीन अपना आर्थिक आधार मजबूत कर सकता है क्योंकि यहाँ विनिर्माण, विपणन की संभावनाएं है। चीन चाहे तो अपने समान को यहाँ से बेचे या फिर अपने यहाँ से। वह इसे विश्व के अन्य क्षेत्रों तक विस्तारित कर सकता है। एक और तथ्य जिस पर ध्यान देने की जरूरत है यूनुस की इसी यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य एक समझौता और 8 समझौता ज्ञापन (एम. ओ. यू.) हुआ। इसमें तीस्ता नदी को लेकर 'कम्परहेन्सिव मैनेजमेंट एण्ड रिस्टोरेशन प्रोजेक्ट' पर भी सहमति बनी है। जिसका प्रतिकार भारत पहले से करता या रहा है, यदि इस प्रोजेक्ट से चीन का जुड़ाव होता है तो यह भारत के लिए स्त्रातजिक रूप से नुकसान पहुचाएगा क्योंकि इसके जरिए चीन की पहुँच सिलीगुड़ी गलियारे तक हो जाएगी।

मोहम्मद यूनुस का पूर्वोत्तर भारत में चीन को मिलाकर इस प्रकार का 'ग्रेट गेम' खेलने के पीछे वास्तविक मकसद क्या है,यह अत्यन्त विचारणीय प्रश्न है। वास्तव में आज की तारीख में यूरोप और अमेरिका से उन्हें कोई मदद नही मिल रही है और यूनुस के समर्थन में वहाँ की सेना भी नही है। ऐसी परिस्थिति में यूनुस के पास अत्यन्त सीमित विकल्प हैं। यूनुस ने चीन की तरफ रूख कर एक तीर से दो निशाने लगाने का प्रयास किया है। पहला चीन को सामरिक तौर पर सिलीगुड़ी गलियारे के क़रीब लाने का दाव खेला है और दूसरी तरफ यदि भारत ऐसी परिस्थिति में हार्ड पॉवर का इस्तेमाल करता है तो बांग्लादेशी सेना और वहाँ की जनता का भी समर्थन प्राप्त करने में उन्हें मदद मिलेगी।

वैश्विक स्तर पर बदलते भू-अर्थिकी को दृष्टिगत रखते हुए क्या ऐसा प्रतीत नही होता है कि भारत को भी इस क्षेत्र में कुछ आधारभूत परिवर्तन करने की जरूरत है ? सम्प्रति अमेरिका, रूस और चीन विस्तारवाद के विषय में सोच रहे हैं और चीन तथा रूस इसे मूर्तता प्रदान करने के लिए आतुर भी हैं तो क्या भारत को भी अपनी भू-रणनीति के नजरिए से अपनी सुरक्षा के निमित्त प्रयास करने की आवश्यकता नही है ? इसका जवाब बांग्लादेश की भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखकर दिया जा सकता है, क्योंकि वह स्वयं भारत से तीन तरफ से घिरा है। वस्तुतः यूनुस के इस नापाक ग्रेट गेम को रोकने के लिए भारत के पास कई विकल्प मौजूद हैं, हालाँकि इनमें से कुछ विकल्पों को पूर्णता प्रदान करने के लिए स्ट्रेट फारवर्ड और बेहद आक्रामक विदेश नीति की जरूरत होगी अथवा यूं कहें कि हार्ड पावर की आवश्यकता होगी। पहला, भारत पूर्वोत्तर के सात राज्यों को शेष भारत से जोड़े जाने वाले 22 किमी चौड़े सिलीगुड़ी गलियारे का विस्तार करे, ध्यातव्य रहे कि यह विस्तार बांग्लादेश की सीमा में होगा। दूसरा विकल्प है चिटगांव क्षेत्र को त्रिपुरा से आगे बढ़कर चोक कर दिया जाए और इस प्रकार भारत के इस क्षेत्र की पहुँच बंगाल की खाड़ी तक हो जाएगी और बांग्लादेश खुद दो टुकड़ों में बँट जाएगा। यूनुस की यह शिकायत भी दूर हो जाएगी कि पूर्वोत्तर भू-आबद्धक्षेत्र है। तीसरा विकल्प है कि अगर भारत चाहे तो मोंगला और चिटगांव पोर्ट को ब्लाक कर बांग्लादेश की जीवन रेखा को बन्द कर दे क्योंकि यहीं से उसका 90 फीसदी व्यापार होता है।

बांग्लादेश को रोकने के और भी आसान तरीके हैं, यथा उसके ऊपर व्यापार पर शुल्क बढ़ा दिया जाए। यह भी किया जा सकता है कि उनके मालवाहक पोतों को उनके बंदरगाहों तक पहुँचने में जन बूझकर देरी करायी जाए। भारत से जाने वाली नदियों के पानी को ब्लाक करना भी एक विकल्प हो सकता है। ऊर्जा को अवरुद्ध किया जा सकता है। वास्तव में यूनुस अपने आखिरी दाव को खेल चुके हैं। अगर भारत यहाँ कुछ बड़ा करता है तो यूनुस को इसका फायदा मिल सकता है। यहाँ भारत को बहुत ही चतुराई से काम करना होगा। दूसरे शब्दों में प्रतीक्षा करना होगा कि वहाँ चुनाव कब होता है। अगर उसके बाद भी यह स्थिति वर्तमान रहती है तो भारत के पास सारे विकल्प खुले हैं।

डॉ ब्रजेश कुमार मिश्र
सहायक आचार्य
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय dited

धरती का तापमान बढ़ा रहीं हैं ग्रीन हाउस गैसें (सम-सामयिक

उत्तर भारत में गर्मी अभी से कहर बरसाने लगी है जबकि अभी अप्रैल माह की शुरुआत ही हुई है।

पाठकों को बताता चलूं कि मौसम विभाग के मुताबिक, 6 अप्रैल से पारा बढ़ना शुरू हो चुका है और अधिकतम तापमान 40 डिग्री और न्यूनतम तापमान 20 डिग्री तक पहुंच गया है। हाल ही में दिल्ली समेत कई राज्यों में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया है। जानकारी के अनुसार दिल्ली के अलावा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और ओडिशा के शहरों में भी गर्मी का प्रकोप जारी रहेगा। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में राजस्थान के बाड़मेर में गर्मी ने नए रिकॉर्ड बनाए और यहां अधिकतम तापमान 45.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो अप्रैल के पहले सप्ताह में अब तक का सबसे अधिक तापमान है। यह सामान्य से 6.8 डिग्री अधिक है, जो एक चिंताजनक स्थिति है।गौरतलब है कि मौसम विभाग ने हाल ही में एक अलर्ट जारी किया है, जिसके अनुसार 6-10 अप्रैल के दौरान गुजरात के कुछ स्थानों पर गर्म हवाएं चलने की संभावना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सौराष्ट्र और कच्छ के कुछ स्थानों पर भीषण गर्मी की स्थिति रहने की संभावना है।इसके अलावा, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, मध्य प्रदेश और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में 'लू' चलने की संभावना है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि इस साल फरवरी भी काफी गर्म रही थी और अब देश के 21 शहरों में अधिकतम तापमान का 42 डिग्री तक पहुंचना एक चेतावनी है कि अगर हम अभी भी पर्यावरण के प्रति नहीं चेते और धरती का तापमान इसी तरह से ही बढ़ता रहा, तो ऑस्ट्रेलियाई विश्वविद्यालय(न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी)के एक अध्ययन के अनुसार, पूरी दुनिया को इसकी बड़ी कीमत चुकानी होगी।यहां यह उल्लेखनीय है कि पिछले साल यानी कि वर्ष 2024 में भारत में वर्ष 1901 के बाद से सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया गया था। वर्ष 2024 में औसत तापमान 25.75 डिग्री सेल्सियस रहा, जिसने वर्ष 2016 के पिछले रिकॉर्ड को पार कर दिया था तथा यह बीते 123 साल के औसत से 0.65 डिग्री सेल्सियस अधिक था।वैश्विक तापमान में भी वृद्धि हुई, जिससे वर्ष 2024 वैश्विक स्तर पर सबसे गर्म वर्ष रहा।पाठकों को बताता चलूं कि साल 2023 भी दुनिया का सबसे गर्म साल रहा था। वास्तव में, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व में जलवायु परिवर्तन बहुत ही तेजी से हो रहा है और जलवायु परिवर्तन के नतीजे जितने लगते हैं, उससे कहीं अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं।दरअसल, जलवायु परिवर्तन में आज सबसे बड़ी भूमिका मनुष्य की ही है, क्यों कि आज धरती की आबादी लगातार बढ़ती चली जा रही है और आज भारत दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है।मानव जनित कार्यों के कारण आज धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। हालांकि वर्ष 2024 के गर्म रहने के पीछे अल-नीनो प्रभाव भी है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि अल-नीनो एक प्राकृतिक घटना है जिसके कारण भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में समुद्र का तापमान बढ़ जाता है।इससे हवाओं में बदलाव आता है और दुनिया भर के जलवायु पैटर्न पर बहुत असर पड़ता है।

अल-नीनो के प्रभाव से दुनिया में सूखा व बाढ़ जैसी स्थितियां बन सकतीं हैं।फसल पैदावार पर भी प्रभाव पड़ता है तथा मौसम संबंधी आपदाएं बढ़ जाती हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज धरती के तापमान के बढ़ने के पीछे प्रमुख कारण ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता उत्सर्जन और मानवीय गतिविधियां ही हैं। वास्तव में, ग्रीन हाउस गैसें (कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन मुख्यतया)सूर्य के प्रकाश के लिए पारदर्शी होती हैं और पृथ्वी की सतह को गर्म करती हैं। वास्तव में,पृथ्वी की ग्रीनहाउस गैसें वायुमंडल की ऊष्मा को रोक लेती हैं तथा उसे अंतरिक्ष में जाने से रोकती हैं।इन गैसों की बढ़ी हुई सांद्रता इसके प्रभाव को बढ़ाती है, जिससे गर्मी स्थिर रहती है और वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है।जीवाश्म ईंधन(कोयला ,तेल और प्राकृतिक गैस) के जलने तथा वनों की कटाई से भी धरती का तापमान बढ़ रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो ऑटोमोबाइल और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग से धरती पर कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, खनन और पशु पालन जैसी गतिविधियाँ पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि धरती का तापमान बढ़ता है तो समुद्र का जल स्तर बढ़ता है, महासागरों की अम्लीयता बढ़ती है, सूखे और हीटवेव की स्थितियां उत्पन्न होती हैं। वनों में आग लगने का संकट भी बढ़ता है। जैव-विविधता की हानि के साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन भी होता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि ऑस्ट्रेलिया की न्यू साउथ वेल्स यूनिवर्सिटी के ताजा अध्ययन ने यह चेतावनी दी है कि अगर धरती का औसत तापमान चार डिग्री सेल्सियस बढ़ जाता है, तो 40 फीसदी वैश्विक संपत्ति के नष्ट होने का खतरा है, जबकि अब तक के शोध 11 फीसदी नुकसान की ही बात कहते आए हैं।सच तो यह है कि आज प्रकृति का संतुलन लगातार गड़बड़ा रहा है। प्राकृतिक संतुलन के गड़बड़ाने प्राकृतिक आपदाएं जन्म लेतीं हैं। मसलन, भूस्खलन, अतिवृष्टि, अनावृष्टि(सूखा) तथा चरम मौसमी घटनाएं ऐसी ही प्राकृतिक आपदाओं के उदाहरण हैं। तापमान बढ़ता है तो इसका असर फसल पैदावार पर भी पड़ता है, जल संकट की समस्या भी खड़ी हो जाती है। अंत में यही कहूंगा कि अब समय आ गया है कि इस संकट(धरती के बढ़ते तापमान) को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्तमान पीढ़ी का यह परम दायित्व व नैतिक कर्तव्य बनता है कि वर्तमान पीढ़ी, भविष्य की पीढ़ियों के लिए ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी ले। धरती के पर्यावरण की रक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी है। इसके लिए हमें पौधारोपण और जल संरक्षण पर ध्यान देना होगा। पर्यावरण संरक्षण नीतियों का सही कार्यान्वयन बहुत ही जरूरी और आवश्यक है। सबसे बड़ी बात जागरूकता की है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पर्यावरण ही हमारी असली धरोहर है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

नवकार एक मंत्र नहीं बल्कि आस्था का केन्द्र है : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

'विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर आज विश्व के 108 देशों में सामूहिक जाप का कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होकर कहा कि जन से जग की यात्रा नवकार है। इस मंत्र के प्रत्येक अक्षर एक मंत्र है। हम जब नवकार मंत्र बोलते हैं तो हम नमन करते हैं पंचपरमेष्ठी को नमस्कार करने की परम्परा है। यह सिर्फ एक मंत्र नहीं आस्था का केन्द्र है जो हमारे जीवन का मुख्य स्वर है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा ऐसे तो मुझे बचपन से ही जैन आचार्य गुरु साध्वीयो आर्यिका आदि गुणी जनों का सानिध्य मुझे मेरी जन्मभूमि गुजरात में मिला। आज इस विशाल विश्व नवकार मंत्र के आयोजन में शामिल होकर मन शांत हैं, मन स्थिर है, एक अटूट शन्ति है। शब्दों से परे सोच से नवकार मंत्र गुंज रहा है। एक स्वर एक दवा एक ऊर्जा से मन में स्थिरता समभाव और एक ऐसी चेतना एक ऐसा प्रकाश भीतर भीतर रहता है। इस अदभुत शक्ति व उसी ऊर्जा का संचार आज विश्व के साथ में भी कर रहा हूं। यह हम सभी के पुण्यों का उदय ही है। यहीं महामंत्र नवकार का सार भी है। इसका दर्शन विकसित भारत के विजन से जुड़ता है। विकास भी विरासत जो रुकेगा नहीं, एक ऐसा भारत जो थमेगा नहीं, जो ऊंचाईयों छूएगा, लेकिन अपनी जड़ों से नहीं काटेगा। इसीलिए विकसित भारत अपने इतिहास से जुड़ेगा। आप सभी ने देखा होगा कि हमारी सरकार के प्रयासों से हमारे तीर्थंकरों की चोरी की गई मुर्तियां विदेशों से हम भारत लाए। वही हमारे नये संसद-भवन लोकतंत्र के मंदिर में जैन धर्म का प्रभाव हर तरफ़ दिखाई देता है। जहां सम्मेतशिखर जी प्रतिकृति और सभी तीर्थंकरों को भी स्थान दिया गया है। समता में ही धर्म है, जो ज्ञान का ग़लत इस्तेमाल करते हैं वह नष्ट

हो जाते हैं। हम तो प्राचीनता को आधुनिकता से जोड़ेंगे। परिर्यवरण, शांति, परस्पर सहयोग जीवन आपसी सहयोग से ही चलता है, सादगी व संयम तो जैन धर्म का मूल में है।

विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने नो संकल्प लेने को कहां।

1 पानीं बचाओ
2 एक पेड़ मां के नाम
3 स्वच्छता अभियान
4 वोकल फार लोकल
5 देश दर्शन
6 नेचुरल फमिग को अपनाना धरती मां को केमीकल से बचना।
7 हेल्थी लाइफ स्टाइल को अपनाना।
8 योग और खेल
9 गरीबों की सहायता करना।

यही सब बातों के प्रति सदियों से भगवान आदिनाथ से भगवान महावीर स्वामी तक बताते रहे। आचार्य महाराज गुरुजनों ने यही सीख दी और नवकार महामंत्र भी हमें एकजुटता के धागे में पिरोता है फिर हमें तो जुड़ना ही होगा।

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान
जबरी बाग़ नसिया जी इन्दौर

राजाचक्र के बैंक खाते से 1.3 करोड़ रुपये वर्तमान भाजपा पार्टी अध्यक्ष के खाते में चले गए, मुख्यमंत्री को जाँच निर्देश देना चाहिए

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : वरिष्ठ कोंग्रेस विधायक श्री तारा प्रसाद बहिनीपति ने पत्रकारों के एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि राजाचक्र के बैंक खाते से 1.32 करोड़ रुपये में से 1.3 करोड़ रुपये वर्तमान भाजपा पार्टी अध्यक्ष के खाते में चले गए, ऐसा उनके वकील ने कल सबूतों के साथ मीडिया को बताया। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री के करीबियों ने नई भाजपा सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल होने के लिए 14 लाख रुपये की मांग की और धमकी दी कि अगर पैसे नहीं दिए तो कार्यालय बंद कर दिया जाएगा और काम बंद कर दिया जाएगा। राजाचक्र के वकील ने मीडिया को बताया कि बाद में, राजाचक्र के बैंक खाते से मुख्यमंत्री के करीबी लोगों को 14 लाख रुपये भी दिए गए। राज चक्र के निर्माता क्योंझर जिले के एक पूर्व मंत्री और जिले के तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट और एसपी हैं। बताया जा रहा है कि राजा चक्र घटना की जांच ईडी और सीबीआई कर रही है। ईडी मुख्यमंत्री और भाजपा अध्यक्ष को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहना चाहिए कि सीबीआई और ईडी दोनों को उस 1 करोड़ 3 लाख रुपये की जांच करनी चाहिए जो ओडिशा भाजपा सरकार के खाते में गया है। मुख्यमंत्री को इसके लिए निर्देश देना चाहिए। श्री बहिनी पति ने बताया कि प्रभाकरण राज्य में किन खदानों में काम कर रहे हैं तथा उनके द्वारा विदेशों में कितना खनिज उत्पाद निर्यात किया गया है। उन्होंने कहा कि भाजपा और बीजद की डील कल संसद और राज्य विधानसभा में पकड़ी गई। इस प्रेस वार्ता में अन्य लोगों के अलावा प्रदेश कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता रजनी कुमार मोहंती और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के राजनीतिक सचिव श्री सुधांशु देव भी उपस्थित थे।

भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में पहली बार पुलिस ने ओडिशा विधानसभा भवन में प्रवेश किया, विधानसभा कक्ष में बैठे कांग्रेस सदस्यों को जबरन हटा दिया और देर रात उन्हें हिरासत में लेकर मास्टर कैंटीन स्क्वायर पर छोड़ दिया। दुनिया के किसी भी लोकतांत्रिक देश में ऐसी घटना पहले कभी नहीं घटी है या अभूतपूर्व है।

70 वर्षो से विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ ही नहीं जहां ओड़िया पत्रकार भी उपेक्षित

नौकरशाही का कमाल सरकारें होती जहां बदनाम

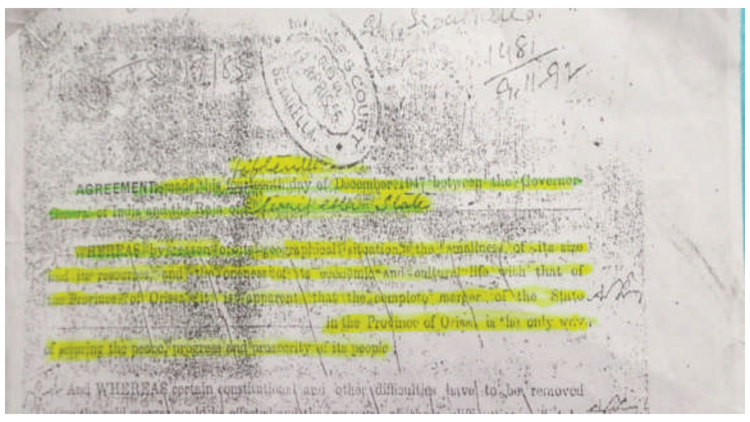
AGREEMENT
...
in the Province of Orissa is the only way
...
And WHEREAS certain constitutional and other difficulties have to be removed

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची , किसने कहा सरायकेला में छऊ के लिये भाजपा -जे एम एम लड रहे हैं बिल्कुल ग़लत , सच तो यह है कि यहां ओडिया भाषा संस्कृति को डूबोने की साज़िश तो सात दशक पुरानी है, जिसे हर सरकार में आप देखते आ रहे हैं ।

जिस प्रकार झारखंड में ओडिया भाषा, उसका विश्व प्रसिद्ध छऊ संस्कृति किसी मदारी का बंदर नाच या खेल नहीं वल्कि ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक उत्कलीय विरासत आ बहुमूल्य दस्तावेज धारी धरोहर है ठीक उसी प्रकार ओड़िया पत्रकार , लेखक , जानकार नदारद रहे हैं यहां बिहार सरकार से लेकर झारखंड सरकार में आज तक ! 18 मई 1948से जिस दिन से ओडिशा का एक राजस्व जिला सरायकेला को जबरन ला कर एक वर्ष के लिए बिहार में रखा गया आज तक नतो बिहार नहीं झारखंड ने उसे लौटाया है ओडिशा को । ऊपर से भाषा संस्कृति अब जानकार पत्रकारिता पर आफत।

बात अगर सरायकेला के कला की हो तो आजादी के पहले 1936 में गोरी महारानी विक्टोरिया के आंगन में सरायकेला का मार्शल आर्ट नयनाभिराम हुआ था गोरों को । अंग्रेज के तत्कालीन युरोपीयन मिडिया ने सरायकेला का वीर रस युक्त दुर्गा नृत्य देख इसे The Hindu war goddess Dance from India , Serailkella State तो Warriors Dance of Serailkella कह उठा था । तब समुचे एशिया में द्वितीय विश्व युद्ध के पहले भला कितने भारतीय मार्शल आर्ट्स के नृत्य उन दिनों युरोप में पहुंच पाये थे जहां नर्तकों में राजकुमार लोग हों और वह भी विक्टोरिया के आंगन में भला कोई सरायकेला के ओडिया पत्रकारों को बता भी सकता है इसका उत्तर ? उससे बड़ी बात सच्चाई तो मार्शल आर्ट वह भी एशिया से इंग्लैंड में पानी जहाज में सफर एक पखवाड़े आने एक पखवाड़े जाने का । सरायकेला छऊ जिसे स्वयं कुंवर विजय प्रताप सिंहदेव जिन्होंने गांधी , महाराज कृष्ण चंद्र गजपति आदि के साथ गोलमेज सम्मेलन में इंग्लैंड जाने वाले राजकुमार भी थे अपने मित्र कवि गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर, नाट्यकार शिशिर बाहादुरी जैसे दिग्गज के मार्गदर्शन में यह नृत्य इंग्लैंड पहुंचा था तब 1936-37मे । उससे साथ उन्होंने महात्मागांधी , सुभाष बोस को भी दिखलाया था नृत्य एक मंच पर बैठाकर ।

जिस 15दिसंबर 1947 को सरायकेला का विलय ओडिशा में रखे जाने हेतु भारतीय अधिराज्य के साथ होता है पर राजनीति षड्यंत्र के तहत इसे 1वर्ष के लिए बिहार अपने पास लाया था जिसे आज तक लौटाया क्यों नहीं ? गैर ओड़िया भाषी पत्रकारिता का दौर आजादी के बाद स्थानीय ओडिया जन मानस के लिए जहर से कम नही रहा जिसकी अनेक घटनाएं इतिहास के पन्नों में दर्ज हो नहीं सके नतीजा यह हुआ कि आज विश्व प्रसिद्ध छऊ का उद्गम सब जानते सरायकेला पर महत्व मानभूम को जिसे सरायकेला ने सिखाया , बंगाल गैजेटियर देखा जा सकता । जिन विशेष विभागों को राजा ने दिया उसमें डिफेंस भी था एवं कला संस्कृति भी । संभवत 562 राजवाडों में से सरायकेला का छऊ ही एसा नृत्य रहा जो सीधे गृहमंत्रालय में गया पर अफसोस की बात इसे बिहार सरकार अपने पास ले लिया । यही वजह रही की डा सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे

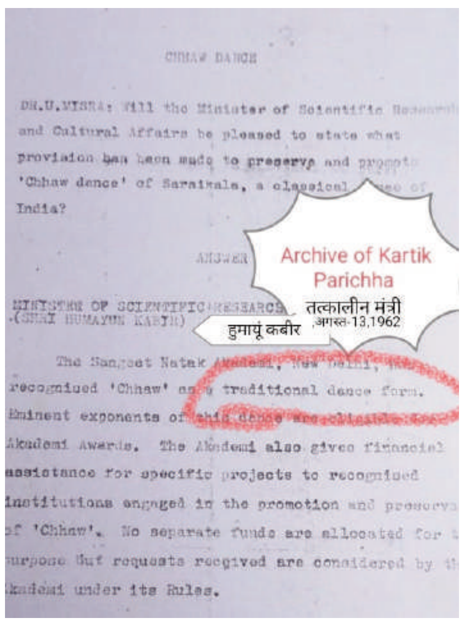
CHHAW DANCE

DR.U.MISRA: Will the Minister of Scientific Research and Cultural Affairs be pleased to state what provision has been made to preserve and promote 'Chhaw dance' of Saraikela, a classical ... of India?

ANSWER

MINISTER OF SCIENTIFIC RESEARCH ... (SHRI HUMAYUN KABIR)

The Sangeet Natak Akademi, New Delhi, ... recognised 'Chhaw' as a traditional dance form. Eminent exponents of this dance ... Akademi Awards. The Akademi also gives financial assistance for specific projects to recognised institutions engaged in the promotion and preserv... of 'Chhaw'. No separate funds are allocated for ... purpose but requests received are considered by ... Akademi under its Rules.

शिक्षाविद राष्ट्रपति के शागिर्द हुमायूं कवीर जैसे भारतीय मंत्री ने सरायकेला शैली छऊ नृत्य पर संसद पटल में एक ट्रेडिशनल नृत्य होने का जबाब 1962 में रखा था। सवाल आता है किनका ट्रेडिशन अगर मार्जर एग्रीमेंट देखा जाय तो सबकुछ ओड़िया लोग ओड़िया कल्चर हेतु सरदार पटेल के आप्त सचिव भी पी मैंनन तथा अन्तिम शासक राजा के बीच कटक में ओडिशा में रखे जाने हेतु हुआ था तब सेनाएं किनकी थी , कौन थे सेनापति , किनका ट्रेडिशन ? जिसे षड्यंत्र के तहत ठंडे बस्ते में डाल दिया गया ।

सात दशकों से केवल कला संस्कृति नहीं भाषा संस्कृति के जानकार , अनेको जानकार भी उपेक्षित रखे जाते है यहां । आज वास्तविक जानकार है वे नदारद है , गैर ओड़िआ भाषी पत्रकारिता चरम सुख देता आया है विभिन्न सरकारों को । कारण ओड़िआ के माटी से नेताओं अधिकारियों को तिजोरियां भरनी है तो वास्तविक चीज को गौण तो करना ही पड़ेगा ।

नतीजतन ओड़िया जन मानस का सामरिक संस्कृति जिनका नाम छऊ आज सरायकेला में सीमट कर रह गयी है कल जो सात समंदर पार राज किया किया था आज उपेक्षित ।

मजे की बात प्रशासनिक स्तर पर झारखंडी ओडिया पत्रकारों को सम्मान तो दुर की बात भाषा संस्कृति उजाड़ की तरह ओड़िया पत्रकारिता उजाड़ जारी है, जो उस गृहमंत्रालय अधीन विलय दस्तावेज पर विरोधाभास प्रस्तुत करता है । उन्हें खाई में डालने की परंपरा चलाई जाती है जो स्थानीय भाषा ,संस्कृति ,इतिहास , पीड़ित लोगों के संरक्षण की दिशा में कलम चलाते आये है ।

केवल सरायकेला खरसावां ही नहीं सिंहभूम के उन ओडिया भाषियों के अन्तरात्मा यानी मुलवासी 80 प्रतिशत ओड़िया, गैर ओड़िया परिवारों का आवाज़ ओड़िआ जनमानस का पत्रकारिता रही जिस प्रकार कला संस्कृति को लेकर सरायकेला में जन्मा छऊ पर राजनीति षड्यंत्र जारी है ठीक उसी प्रकार ओड़िया पत्रकारिता पर भी ।

10 अप्रैल-महावीर जयंती पर विशेष

कविता

महावीर के वचन व प्रेरक वाणी...!

महावीर स्वामी के वचन व प्रेरक वाणी,
जीवन दर्शन-संस्कृति अनुगुंजित प्राणी।
अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त की त्रयी,
दृष्टि निपुणता प्राणियों प्रति संयम भयी।
जीवन स्तर जागरुकता होती हैं साकार,
लेशमात्र भी मन में न रखों कोई विकार।

महावीर स्वामी के वचन व प्रेरक वाणी,
जीवन दर्शन-संस्कृति अनुगुंजित प्राणी।
जीवनचर्या दृष्टि हो आधार पर संयमन,
एकता, समता, संगम, नियंत्रण के क्षण।
हिंसा की प्रवृत्ति को कर दो हतोत्साहन,
दूसरों के दु :ख को दूर करों बनों वाहन।

महावीर स्वामी के वचन व प्रेरक वाणी,
जीवन दर्शन-संस्कृति अनुगुंजित प्राणी।
जन्म से कोई भी किसी जाति का नहीं,
कर्म ही करते निर्धारित सब खाता-बही।
वचनों में अनुध्वनित अपरिग्रह महावीर,
आर्थिक, सामाजिक आकांक्षा रखें धीर।
'परस्परोग्रहों जीवानाम्म' हैं लक्ष्य महान।

संजय एम तराणेकर

ट्रेन दुर्घटना में मां की मौत, 4 वर्षीय बच्चा बच गया

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : माँ की जीवन लीला उसके बेटे की आँखों के सामने समाप्त हो गयी। ट्रेन की टक्कर से मां की मौत, 4 वर्षीय बेटा घायल। झारसुगुड़ा में बेलपहाड़ रेलवे फाटक के पास उत्कल एक्सप्रेस की चपेट में आने से एक मां की मौत हो गई तथा उसका बच्चा मामूली रूप से घायल हो गया। पुलिस ने मृतक महिला की पहचान मंजू यादव के रूप में की है।वह बेलपहाड़ क्षेत्र में खानाबदोश की तरह रहते थे। कल दोपहर महिला अपने नवजात बेटे को गोद में लेकर रेलवे लाइन पार कर रही थी, तभी तेज गति से आ रही उत्कल एक्सप्रेस ने उसे टक्कर मार दी। स्थानीय लोगों ने महिला को बचाया और तुरंत अस्पताल ले गए। वहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। रेलवे पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023